



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,
मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

I SSN 2229-547X VI DEHA



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२)



ए अंकमे अछि:-

१. अंगीकृतिय अंशमे

१. गद्य



१.१. अंगीकृतिय अंशमे- काव्यिका

-



१.२. जगदानन्द सा 'मन्त्र'- दूरी बिहनि कथा



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,
मानसिक संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



१.३. कितास दास- अंगना अथन घबमे पानि

-



१.४. अज्ञी कामत- नाटक/ बिहनि कथा



१.५. बैववाय साह- बिबिधित होषत हयब लोक संस्कृति



१.६. जगदीश प्रसाद मल्ल- तीनटी बिहनि कथा-एकटी वक्कथा



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,
मानक संकेत **ISSN 2229-547X VIDEHA**



१.१.१. नरेंद्र कुमार सा- गंगा नदी पब पुनक माधाम सँ
रैठत कारोबारक चानि/ महिषीमे आयोजित होयत सांस्कृतिक महोत्सव/
संरक्षणसँ सभलपति आ उपाध्यक्षक निर्वाचित/ बिहारमे शिक्षाक नेन मदति



कबत बिदेह रैठक १. अमित मिश्र- कतिआएन आथव



१.१.१. शिर कुमार सा- **पुष्पाजनम :: कथाकारक सृष्टि/ कथाकार**

३. पद्य



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,
मानुषिह संस्कृतम् **ISSN 2229-547X VIDEHA**



३.१९.

बैवबाय साह २



मन्नी कायत



३.२१.

बिनीत उपेन



३.२९.

जगदीश प्रसाद मन्डन २



महमद मर्याक



३.३९.

बाजदेव मण्डन २



उमप्रकाश ना



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,
मानसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



३.३.१.

शिर क्रमाव सा



किशिन कावीगव



३.३.१.

मो. ग्रव लम १.



चंदन क्रमाव सा



३.१ १.कपिलेश्वर बाउत



मो. लम १.



जगदानन्द सा

'मन्न' - लम एहन किक्क छी ? / लेना यदव छ हेम्पी ? ३.
क्रमाव सा (कन्हैया) - देशे भजि

बाजेश



विदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,
मानसिक संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



३.४.१. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिन'- की भेटेन आ की लेवा गेन



(आमे गीत)- (आगाँ)१. नावाया सा- एथनहूँ जकडन डी/ एकता



४. मिथिला कवि-संगीत १ बाजनाथ मिश्र (चित्रय मिथिला) २.



उमेश मन्डव (मिथिलाक वनस्पति/ मिथिलाक ज़र-जल/ मिथिलाक
जिनगी)

-



३. गद्य-पद्य लेखन: १. प्रा. चम्पा शर्मा क डोगरी करिताक हिन्दी अनुवाद:



श्रीमती बजनी शर्मा आ मैथिली अनुवाद : डा. शिबु कुमार सिंह.



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानसिंह सर्वज्ञ, ISSN 2229-547X VIDEHA



१. कमाव संभर 'भावद्वाज' क हिन्दी करिताक मैथिली अनुवाद: मैथिली



अनुवादक: डा. शंभु कमाव सिंह



३. बीबीना प्रते- अमित मिश्र- १३. अगस्तपव एकठा गजन आ एकठा
करिता

१. भाषागत बचना-लेखन -[मानक मैथिली], बिदेहक मैथिली-अंग्रेजी आ
अंग्रेजी मैथिली श्लेष (अटैबलपेस पहिने लेब सर्टिफिकेशन) एम.एस. एस.एस.एस.
सर्वर आधारित -Based on ms-sql server Maithili-English
and English-Maithili Dictionary.]

8-VIDEHA FOR NON RESIDENTS

बिदेह ई-पत्रिकाक सभठा प्रवान अंक (ब्रैल, तिरहुता आ देवनागरी मे)
पी.डी.एफ. डाउनलोडक लेन नीचाँक लिंकपव उपलब्ध अछि । All the old
issues of Videha e journal (in Braille, Tirhuta and
Devanagari versions) are available for pdf download
at the following link.

बि ए नु बिहे Videha बिदेह www.videha.co.in www.videha.com बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई
पत्रिका Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका



बिदेह ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२)

मानचिह्न संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

बिदेह १-पत्रिका सभ्ठा प्रवान अंक ब्रैल, तिबहुता आ देरनागरी कपमे

Videha e journal's all old issues in Braille Tirhuta
and Devanagari versions

बिदेह १-पत्रिका पढिन ३.० अंक

बिदेह १-पत्रिका ३.०म सँ आगाँ अंक



↑ बिदेह आब.एस.एस.ह्रीड एनीमेटेबल अपन सागठ/ रैनागपब नगाडु।



रैनाग "नेखाडुठ" पब "एड गाडजेठ" मे "ह्रीड" सेनेकठ कए "ह्रीड
यूआर.एन." मे <http://www.videha.co.in/index.xml> ठाँप केनासँ
सेहो बिदेह ह्रीड प्राप्त कए सकैत छी। गुगल बीडरमे पठरी नेन
<http://reader.google.com/> पब जा कइ Add a Subscription
रैनेन बिनक कक आ खाली स्थानमे <http://www.videha.co.in/index.xml>
पेस्ट कक आ Add रैनेन दराँड।



Join official Videha facebook group.



Join Videha google groups



बिदेह रेडियो:मैथिली कथा-कविता आदिक पढिन पोडकास्ट सागठ

<http://videha123radio.wordpress.com/>



बिदेह ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,
मानुसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली देरनागरी रा मिथिलाक्षरमे नहि देखि/ निथि पारि बहन छी, (cannot
see/write Maithili in Devanagari / Mthilakshara
follow links below or contact at
ggajendra@videha.com) तँ एहि हेतु नीचाँकि लिंक सभ पब जाउ।
संगहि बिदेहक सुभ मैथिली भाषापक/ बचना लेखनक नर-प्रबान अंक पढ़ू।
<http://devanaagarii.net/>

<http://kaulonline.com/uninagari/> (एतए रीँकमे अननागन
देरनागरी ठाँगप कक, रीँकसँ कापी कक आ रड डाक्यूमेन्टमे पेश्ट कए रड
फाँगने सँ कक। विशेष जानकारीक लेन ggajendra@videha.com
पब संपर्क कक।) (Use Firefox 4.0 (from WWW.MOZILLA.COM) /
Opera / Safari / Internet Explorer 8.0 / Flock 2.0 / Google
Chrome for best view of 'Videha' Maithili e-journal
at <http://www.videha.co.in/>.)

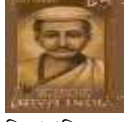
Go to the link below for download of old issues of
VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and
Maithili Audio/ Video/ Book/ paintings/ photo files.
बिदेहक प्रबान अंक आ ऑडियो/ रीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक
फाँगन सभ (डिजाइन, रीड सुथ साव आ दूरस्थित मंत्र सहित) डाउनलोड कवरौक
हेतु नीचाँकि लिंक पब जाउ।

VIDEHA ARCHIVE बिदेह आर्काइव



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानकीह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



भावतीय डाक रिभाग द्वारा जारी करि, नाटककाव आ धर्मशास्त्री
रिग्यापतिक स्थाप्। भावत आ लेपानक माठिमे पसबन मिथिनाक धवती प्राचीन
कानहिसे महान प्रकय ओ महिना लोकनिक कर्मभूमि बहन अछि। मिथिनाक महान
प्रकय ओ महिना लोकनिक चित्र 'मिथिना बने' मे देखे।



गोबी-शिकवक पानरशि कानक मूर्ति, एहिमे मिथिनाम्बरमे (१२०० वर्ष
पूर्वक) अतिनेथ अंकित अछि। मिथिनाक भावत आ लेपानक माठिमे पसबन
एहि तबहक अग्याग्य प्राचीन आ नर स्थापन, चित्र, अतिनेथ आ मूर्तिकनाक हेतु
देखे 'मिथिनाक खोज'

मिथिना, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित सूचना, सम्पर्क, अग्र्यणा संगहि बिदेहक सर्च-
गंजन आ नृज सर्चिस आ मिथिना, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित रेरेसागठ सभक
समग्र संकलनक नेन देखे 'बिदेह सूचना सर्च अग्र्यणा'

बिदेह जानबुठक डिस्कसन फोरमपब जाई।

"मैथिल आब मिथिना" (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय जानबुठ) पब जाई।



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मासिक **ISSN 2229-547X VIDEHA**

ए रैव मून प्रवक्ता(२०१२) [साहित्य अकादेमी, दिल्ली]क लेन अहाँक नजबिमे कौन
मून मैथिली पोथी उपहाड अछि ?

Thank you for voting !

- श्री बाजदेव मन्दनक “अस्त्रवा” (कविता-संग्रह) 12.82%
- श्री रैचन ठाकुरक “रैठक अपमान आ छीनबदेरी”(दूरी नाटक) 9.69%
- श्रीमती आशि मिश्रक “उचाट” (उपन्यास) 6.55%
- श्रीमती पद्मा नाक “अस्त्रभूति” (कथा संग्रह) 4.56%
- श्री उदय नावायण सिंह “नटकेता”क “नो एन्ट्री:मा प्रवेश (नाटक) 5.41%
- श्री सुभाष चन्द्र यादवक “रैठक रिगड़त” (कथा-संग्रह) 5.13%
- श्रीमती रीणा कर्मा- भारनाक अस्त्रिपजब (कविता संग्रह) 5.41%
- श्रीमती शैलनिका रमक “कस्तुर-कस्तुर जौवन (आमेकथा) 8.83%
- श्रीमती रिता बानीक “भोग रौ आ रैनचन्दा” (दूरी नाटक) 6.84%
- श्री महाप्रकाश-संग समय के (कविता संग्रह) 5.41%
- श्री तारानन्द रियोगी- प्रणय बहस्य (कविता-संग्रह) 5.13%
- श्री महेंद्र मर्गियाक “छतहा घेन” (नाटक) 9.4%
- श्रीमती नीता नाक “देशे-कान” (कथा-संग्रह) 5.7%
- श्री सियाबाम ना “सबस”क थोड़ो आगि थोड़ो पानि (गजन संग्रह) 7.12%



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,
मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

Other : 1.99%

ई रेव हरा प्रवक्ता(२०१२)[साहित्य अकादेमी, दिल्ली]क लेन अहाँक नजबिमे कौन
कौन लेखक उपहास छथि ?

Thank you for voting !

श्रीमती ज्योति स्मृति चौधरी "अर्चि" (कविता संग्रह) 28.21%

श्री रीति उपेक्षक "हम प्रेक्षित छी" (कविता संग्रह) 7.69%

श्रीमती कामिनी "समयसँ सम्राट करैत", (कविता संग्रह) 6.41%

श्री प्रदीप काश्यप "रिषदन्ती रवमान कानक बति" (कविता संग्रह) 4.49%

श्री आशीष अनन्तिलाल "अनन्तिलाल आखि" (गजल संग्रह) 18.59%

श्री अरुण सौभिक "एतरे ठाँ नहि" (कविता संग्रह) 6.41%

श्री दिनेश कुमार या "दृष्टि"क जगते बहरे (कविता संग्रह) 7.69%

श्री आदि यादव "भोख पसिना" (कथा संग्रह) 6.41%

श्री उमेश मन्दक "निश्चय" (कविता संग्रह) 12.18%

Other : 1.92%

ई रेव अन्नदा प्रवक्ता (२०१३) [साहित्य अकादेमी, दिल्ली]क लेन अहाँक नजबिमे
के उपहास छथि ?

Thank you for voting !



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

श्री नरेश कुमार बिकन "याति" (मवाँठी उपन्यास श्री बिहू सखाम थाकब)
33.33%

श्री महेंद्र नावाय बाम "कार्मेनीन" (कौकणी उपन्यास श्री दामोदर मारजो)
12.75%

श्री देवेन्द्र सा "अनुभव" (बाँगाँ उपन्यास श्री दिवान् पानित) 12.75%

श्रीमती मेनका मल्लिक "देशे आ अन्तरि" (नेपालीक अनुवाद मून-
रेमिका थापा) 14.71%

श्री प्रह्लाद कुमार कथप आ श्रीमती शशिबाना - मैथिली गीतगौरव (जयदेव
संस्कृत) 14.71%

श्री बामनावाय सिंह "मनाहिन" (श्री तकाशी शिराईक पत्रिका मनयानी उपन्यास)
10.78%

Other : 0.98%

हेल्लो प्रबन्ध-समग्र योगदान २०१२-१३ : समानांतर साहित्य अकादेमी, दिल्ली

Thank you for voting !

श्री बाजन्दन दास 54.12%

श्री डा. अमरेन्द्र 23.53%

श्री चन्द्रभक्त सिंह 20%

Other : 2.35%



बिदेह ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,
मासिक संस्करण) ISSN 2229-547X VIDEHA

1.संपादकीय

१

ओग समए ि नर्मनीसँ समस्तीपुव एकठाँ गाड़ ी चलेत बहे । रँड ी नागनक कतो पता ले । ह्मदा कमहनिस्ट पाठक नड ीगक एकठाँ ह्मदा गहो बहे । कथनो उग्र तँ कथनो धीमी गतिसँ चलिते बहए । ओना पूरौसँ आ पछुडिमोसँ अरैरना गाड़ ीक मेन सकबियेमे बहे ह्मदा से ले भेलै । ककबघटीमे मेन भेले पछुरैबिया गाड़ ी पडुआ गेननि । जग कावणे सत्ताक आयोजन किछु रिनमि कइ भेल । सकरी सठेशनसँ थोड़रै हठि कइ दडिनरौबि भाग सत्ताक आयोजन भेल । गाड़ ीसँ उतबि मंडा ह्मदबलैत आ नावा नगरैत जूनूस रैनि सत्ता स्थन पहुँचना । तग संग सत्तावपुवक गर्द-र्द गदक सेहो रँडूत गोठे संग भइ गेन बहथिह । आयोजक बहथिह चीनी मिनक श्रमिक-संगी । ओग समए डुरै मास मिन चले । मानमे डुरे मास काज भेले डुरे मास रैसारीक समस्या बहरे करै । तग संग किसानकेँ नहिये ह्मशियावक कठनी होग आ नहिये समैपव दाम भेलै । सेहो सत्ता समस्या बहरे करै । ह्मशियावक एके किस्मक खेती होग जे अगहनमे तैयार भइ जाग । ह्मदा नमहब गनाकामे खेती भेले, समैपव कठनी ले भइ पड़े । मिन कइ । जतरे ओ पेड़ सकत ततरे ले लेत । तहमे चनाकी ओकव ग बहे जे शुकमे तैयार भेले शुकलेसँ नीक उत्पादन (चीनीक मात्रा) ह्मद नहो आ जते पछुआगत तते बस गाड़ भेले चीनीक मात्रा रँडू जाग ।

पछुडिमसँ गाड़ ी अरिते दबडंगा-जानेक रिधायक खादिम ह्मसेन संगे भोगेन्द्र जी हाथमे चमड ीक रैंग नठेकोले आगू-आगू आ दस पनबह गोठे पाछु-पाछु सठेशनसँ सत्ता स्थन पहुँचना । हाफ शेट धोती पहिबले । पएबमे चमड ीक जूता । मचपव सँ नावा ह्मद नागन । आधसँ रैसी मच भवन । जे रक्ता रँजेत बहथि ओ अपन रिचाव सम्पन्न केननि । चीनी मिनक ड्रेड-हानियनक जे नेता बहथि ओ रिस्तावसँ अपन समस्या बखननि । जगदीश प्रसाद मन्दन सत्ता आगूसँ निछामे रैसन बहथि । भोगेन्द्रजी दिससँ रँजेसँ पहिले आले सत्ता जकाँ प्रमक आग्रह भेल । किछु प्रम एरो कएन ।



বিদেহ ১১২ ম অংক ১৭ আগস্ট ২০১২ (বর্ষ ৭ মাস ৭৬ অংক ১১২)

মানুস্কৃত সংস্করণ ISSN 2229-547X VIDEHA

ঋতু ১গ-তীন ঘণ্টা পছাতি সভা বিসর্জন ভেন। সভামে ভাগ বেনিহাব চাক
কাতক লোক চনি গেনাহ, হুদা গাড়াইরনা সভা স্টেশনপব খারি গেনা। দনু
গাড়াই (নিবমলী খা জয়নগবরানী) মে এক-ডেড ঘণ্টা দেবী বহে। স্টেশনপব
ভোগেন্দ্রজীস পহিন ভেঁটে খা সোমসা-সোমসী পকিএ ভেনহি।

পহিনে-পহিন ভোগেন্দ্রজী পার্টিয়ার্মেঠক সদস্য ভেন বহখি। জহিনা ১৯৪২ খ্রিঃ
ঋতুজক থিনাফ দেশক জন-জনমে বাজনীতিক নর চেতনা জাগন বহে তহিনা
১৯৬৭ খ্রিঃ চুনারক পছাতি সেহো ভেন। বিহারোমে ওহন-ওহন বাজনীতিক পার্টি
বহ্মতমে খাএন জে খখন ধবি (১৯৬৭) বিধান সভামে লৈ পছাঁচন ছন। জে
পার্টি (কাংগ্রেস) খখন ধবি বিহারোমে সভা-সীন বহন ও নীক হাবিক হুঁত
দেখনক। ওনা বিহারে মাত্রমে লৈ খালো-খালো বাজ্যমে ভেন। কাংগ্রেসো এক
গ্রুপ টুটি কহ জনপ্রতি দন কহ কহ পার্টিমে উতবন ছন। কাংগ্রেস বিরোধী
দনক স্পষ্ট বহ্মত ভেন ছন। হুখ্য পার্টিক রপমে সোশিনিস্ট পার্টি খা
কমো-রেশী খালো-খালো পার্টি জীতন। ফি সফ বিধান সভামে এহেন পবিরভন
ভেন সে রাত লৈ, গায়-গায়ক জন-গণমে খপন হাব-জীত সেহো মহসূস
ভেন। বৈরহাবিক দৌড়মে জে কিছু হুদা ভাষাক ফম (সিফানতিক) মে ত
জনতাক সভা সমস্যা সামলে ঐরৈ কএন। কাবণ জে সভা পার্টিক খপন-খপন
বিচাব ত লোকক রীচ পহিনেস খারি বহন ছন। ৩৪ ঠা সীট মালে ৩৪ ঠা
বিধায়ক বিধান সভামে খা পান-সাতঠা পার্টিয়ার্মেঠেমে পছাঁচনাহ। খাজাদীক
পছাতি পহিন বৈব খাম জন সভা (শাসন) দিস তকনক। ওনা খখন ধবি
সবকাবক ঋতু খাম জন-গণ কোঠাক শাসনক মঠিয়া তেন খা জে হুখ্য বিন্দু
কোঠাক রমত্ত বৈনন ছন। ভীনবক কাজক রেখা-জোখা ভবি শাসন চলে ছন।
খান-খান সমস্যা ত ভাষণেক ফমমে ছন। কিছু-লে-কিছু রাঢ়ী-রৌদী চনিতে
ছন ওকরে রচরেক উপাএ সবকাবক কহর বহে ছনে। নরকা তুব (খাজাদীক
কবীর খা পছাতিক) সেহো জুখান ভেন। জগস খালো-খালো কাজ (সবকাবক)
সোমসামে খাএন। খখনকা মধুরনী জিনা জে ওগ দিনমে খনমডন ছন।
এগাবহটা এম.এন.এ. খা দূঠা এম.পী.মে বৈঠাএন ছন। ছন-ছনটা এম.এন.এ. পব
এম.পী. ত দবলগাক জানে ক্ষেত্র সেহো মধুরনিযেমে।

ওনা খখনকা মধুরনী জিনাক পছিমী ভাগমে জমীনক নড়াই সেহো নীক জকা
চনি বহন ছন, হুদা হুখ্য ছন পছিমী কোসী নহব। মিথিনাচনমে কোসী, কমনা,
রাগমতীক জে উপদ্র সালে-সান চনি বহন ছে খা ক্ষতি পছাঁচরৈ ছে, ভবিসক
ততেঠা বজঠে লে কতে সবকাবকৈ হোগ ছে। খেব জে হোউ ! উনৈস সখ



বিদেহ ১১২ ম অংক ১৭ আগস্ট ২০১২ (বর্ষ ৭ মাস ৭৬ অংক ১১২)

মানুস্কৃতি সংস্করণ ISSN 2229-547X VIDEHA

সাঠিক দশকক সরান, সমস্যা ঝা নড় াগ কন্মহানিস্ট পাঠক ঝখ্য নড় াগ
বহন জেকব দশা, মন্বষ্যক এক জিনগীক (৩৩-৩৬ বঁখা) উপবানতো কি ঝছি,
সরহক সোমেনমে ঝছি। জৌ যোজনা হিসারসঁ কাজ হোগত তঁ ঝাজুক মিথিনা
ঝ মিথিনা লৈ, ও মিথিনা বঁনি গেন বহৈত জগ মিথিনামে ঝুযি-ঝুনি গচ্ছান্সাব
বঁখা বঁবিসরৈত ছনহ। এতে পনিরিজনীক উত্পাদন হোগত জে ঘব-ঘবমে
পঁচন বহৈত। জগসঁ জাপান জকাঁ নঘ্-উদ্যগক সগ-সগ ভাবিয়ো উদ্যগ নাগি
গেন বহৈত। ঝদা ঝাগ কি দেযৈ ছী। চুনার হোগত বহন, এমেনে-এমপী
বঁদলৈত বহনহ। ঝদা সমস্যা ঝাগ ওহন রিকবান কপ নহ লেনক ঝছি জে
ঝর্থিক তঁগীক চলৈত দিন-দহাব নুঠ-পাঠ ভহ বহন ঝছি। জঁ জাপান, জর্মনী
ঝ পড় াসী দেশে চীনক জমীনক প্রতি একড উপজাক ভুননা ঝপন মিথিনাচনক
ভূমিসঁ কবর তঁ ঝাশচযে লৈ রিসরাসো লৈ হএত। কি মিথিনামে ি সর্ফ সাড়
তীন হাখক মন্বখেঠা ঝছি জেকবা মাত্র পেঠেঠা ছৈ ঝাকি ওকবা দূঠা হাখো-পএব
ছৈ ঝা মাত্র ভূমিয়ো ছৈ। মিথিনাচনক ও ভূমি ঝা জনরাহ ঝছি জে দ্নিয়ামে
কতো লৈ ঝছি। লৈ এতে স্ন্দব ঝনাগম মাঠি ঝছি ঝা লৈ এহেন নীক পানি
ঝছি ঝা লৈ এতে বঁগক মৌসম ঝছি। ঝদা ঝাগ কি দেযৈ ছী? লৈ ঝখন
ধবি লেপান সবকাবসঁ নীক জকাঁ সমনোতা ভেন ঝছি ঝা লৈ কৌসীক পন্ডিমৌ-পূরী
নহবিক সন্মচিত রিকাস। এক তঁ যোজনা ক কাজ পন্ডঝাএন তগপব কাজক
এহেন পেচ-পাট ঝছি জে এক নহব বঁনর কঠিন ঝছি, দোসব বঁনরাপব ও
সন্মচিত কাজ কঠিন ঝছি। পানি ঙুপবসঁ নিচ্চা ঝসানীসঁ ঝরৈত ঝছি। ঝদা
নিচ্চাসঁ ঙুপব ঝসানীসঁ জাএত? লৈ জাএত। জঁ গহীবমে নহব খঁনি দেন জাএ
তঁ ওকব পানি ঙুপব কেনা জেতগ। হঁ মশীনক মাধ্যমসঁ জা সকেএ, ঝদা
ঘবমে হুসি-হুসি, সোম দিন রিখাহ। জগঠাম ব্রেতা হগক তীন ি রত্তা হব,
ঝ সতহগক বঁসহা বঁডদসঁ এখলো খেতী হোগএ তগঠাম কেনা মানন জাএত।

সঠেশনপব প্লেটফর্ম ঝারি সভ গোনিয়া কহ বঁসনা। পনখা মাঝি ভোগেন্দ্রজী
সভকৈঁ সেহো তহিনা বঁসএ কহনখিন। গাড়া পকড়া লৈ সরহক মন ভনগন।
পনখা মাঝি ব বঁসক ঝর্থ নিশ্চিন্তা। পহিলে ও সভকৈঁ নাও-ঠেকান প্লেটনখিন।
নাও-ঠেকান প্লেটনা উত্তব কহনখিন, কন্মহানিস্ট ঝপন পাঠী ছী, ঝপন পাঠীক ঝ
ঝর্থ লৈ জে কোনো জাতি-মজহরক হোগ, মন্বখ-মাত্রক পাঠী ছী। হমবা সভকৈঁ
ওহন সমাজ বঁনাএরীক ঝছি জগমে লৈ কিযো ভূখন বহত ঝা লৈ নাগঠ।
সরহক বঁন-বঁচা পড়তৈ, সভকৈঁ বোগ-ব্যাধিক গনাজ হেতগ তখন লৈ সভ
ঝাগু ঝহৈঁ বঁডক কৌশি কবতা। ঝপনা ঐঠাম জে ঝুযি-ঝুনি ভেনাহ, ও কী
কেননি? হুনকা লৈ ঝপন স্বখক চিন্তা ছননি। কিঝ ও সভ ঝপন জিনগী



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मासिक **ISSN 2229-547X VIDEHA**

गना केननि । ओ सभ रूत केननि । जूँ से ले केननि तूँ एक कष्टा जमीनमे
जीवन बसव करित केना छुना । ह्रदा अपन धरोहरबिकेँ जूँ ताना नगा बथरै तूँ
के बूमत ? नखनजी (डा. नखनजी ना) मिथिलाचिनक नेन जे जिनगी समर्पित
केननि से कि केननि । के बूमत ?

तीन दिनक ब्यस्त कार्यक्रममे हुनकर पाठ्यामक प्राग्राम बहनि, ओग समाप्तिक
तारीख रित्त तेसर दिनक प्राग्राम ओ जगदीश प्रसाद मल्लनजी केँ द२ देननि ।

जगदीश प्रसाद मल्लन- एकठाँ रीयोत्राहनी...गजेन्द्र ठाकुर द्वारा (अनुवर्तते...)

ए बचनपत्र अपन मंतब ggajendra@videha.com पब पठाउ ।



गजेन्द्र ठाकुर

ggajendra@videha.com



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानुषिह संस्कृतम् **ISSN 2229-547X VIDEHA**

<http://www.maithililekhaksangh.com/2010/07/blog-post-3709.html>

१. गद्य



१.१. श्रीगोप अन्तरिक्षाव- काविया

—



१.२. जगदानन्द सा 'मन्त्र' - दृष्टी बिहनि कथा



१.३. किनास दास - अंगना सुथन घबमे पानि

—



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानुषिह संस्कृतम् **ISSN 2229-547X VIDEHA**



१.४. श्री कौशिक - नाटक/ बिदेह कथा



१.३. बैवर्वाय भा- बिदेह बिदेह बिदेह बिदेह बिदेह



१.३. जगदीश प्रसाद मल्ल- बिदेह बिदेह बिदेह बिदेह बिदेह



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,
मासिक संस्करण, ISSN 2229-547X VIDEHA



१.१.१. नरेंद्र कुमार सा- गंगा नदी पब पुनक माधम सँ
रैठत कारोबारक चानि/ महिषीमे आयोजित होयत सांस्कृतिक महोत्सव/
सरसमयतिर्स सभापति आ उपाध्यक्षक निराचित/ बिहारमे शिक्षाक नेन मदति



कबत बिदेह रैक १. अमित मिश्र- कतिआएन आखव



१.२. शिर कुमार सा- **पुष्पाञ्जलि :: कबीरकारक स्मृति/ स्मरण**



आशीष खनचिन्ह- काहिया

काहिया मने तुकातु । आ तुकातु मने स्वर-सामक तुकातु चाहे ओ बर्षक स्वर-
साम हो की मात्रक स्वर-साम । बदीहसँ पहिले जे तुकातु होयत छैक



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानुसिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

तकवा काहिया कहन जागत छैक । आ जा वदीह जकाँ गजनक हरेक शैवक
(मतना रैना शैवकेँ छोड़ि) दोसब पाँतिमे वदीहसँ पहिने अनिरार्य रूपेँ
अएँक चाली । काहिया दू प्रकारक होगत छैक (क) रर्क स्रव-सामा आ (ख)
मात्राक स्रव-सामा । रर्क काहिया नैन शैवक हरेक पाँतिमे वदीहसँ पहिने
समान रर्क आ तकवासँ पहिने समान स्रव-सामा होएँक चाली । एकटा गप्प आव,
रैहो शोषव खाली वदीहक बाद रैना रर्क रा मात्राकेँ काहिया रूनि लेत छथि
से गनत । काहियाक निधविण काहिया नैन प्रहज शैवकेँ अतसँ रीच रा शुक
धवि कएन जा सकैए । उदाहरण देखू-----

करेज घसैँ साजक बाग निखलै छै

रिना धनले डुबक ले ताग निखलै छै

एहि शैवक पहिने पाँतिमे वदीह "निखलै छै" छैक । आ वदीहसँ ठीक पहिने
"बाग" शैव छैक । जँ अहाँ "बाग" शैव पब धेखान देखै तँ पता नागत जे ए
शैवक अंतिम रर्क "ग" छैक आदा ए "ग" संग "आ" धनि (वा) सेहो छैक ।
तहिना दोसब पाँतिमे वदीह "निखलै छै"सँ पहिने "ताग" शैव अछि । आरँ हेल
अहाँ सभ "ताग" शैवकेँ देखू । एमे अंतिम रर्क "ग" तँ छैके संगहि-संग
"आ" धनि (ता) सेहो छैक । मतनर जे उपबक शैवक दू पाँतिमे वदीह
"निखलै छै" सँ पहिने "ग"रर्क अछि, "आ" स्रव (धनि)क संग । अर्थात् "आ" धनि
संगे "ग" रर्क ए शैवक काहिया भेल । आरँ एँठाम जा मोन बाधू जे जँ
उपबक जा दू

शैव कोनो गजनक मतना छैक तँ ओग गजनक हरेक शैवक काहिया "ग"
रर्क संग "आ" धनि होएँक चाली । अन्तथा ओ गजन गनत भए जाएत । आरँ
ए गजनक दोसब शैवकेँ

देखू--



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानकीकृत ISSN 2229-547X VIDEHA

ग दुनिया मेहनतिक धनाम छै सदिखन

रैह घाम तखन स्वतन भाग निखरै छै

ए शैबमे पहिन पाँतिमे ले बदीह छैक आ ले काहिया झुदा दोसब पाँतिमे
बदीह सेहो

छैक आ बदीहसँ पहिले शिद्ध "भाग" छि। ए शिद्ध अंतमे "ग" रर्ग तँ छैके
संगहि-संग "ग"सँ पहिले "आ" धनि सेहो छैक। ए गजनक आन काहिया सभ
छि "नाग", "राग", "पाग"। एकठाँ आव दोसब उदाहरण देखू--

कछु की, कियो बूनि ले सकन हमबा

हँसो सभक नागन रँत ठवन हमबा

ए मतनाक शैबमे "हमबा" बदीह छि। आ बदीहसँ पहिले पहिन पाँतिमे
"सकन" शिद्ध छि। संगहि-संग दोसब पाँतिमे "ठवन" शिद्ध छि। आर हमबा
लोकनि जँ एहिमे काहिया निधरि कबी। दू शिद्धकेँ नीक जकाँ देखू। दू
शिद्ध अंतमे रर्ग "न" छि झुदा पहिन पाँतिमे "न"सँ पहिले "अ" धनि छि
(क) आ दोसरो पाँतिमे "न"सँ पहिले "अ" धनि छि (ब)। तँ एहि दू
शिद्धक मिनानकेँ रौद हमबा लोकनि देखै छी जे दूमे "न" रर्ग समान छि।
संगहि-संग रर्ग "न" सँ पहिले "अ" सब छि। आर सभ राजन हननुमे अ
नगिते छै तखने ओ गणितासब रँने छै (कचँतप, य-ह) तँ ए गजनक
काहिया कोनो कचँतप रखा(करखा, चरखा, ठरखा, तरखा, परखा) रा य-ह संग
"न" रर्ग भेल। आर शागबकेँ रँकी शैबमे काहियाक कपमे एहन शिद्ध छूए
पड़तहि जकब अंतमे "न" रर्ग अरैत हूँ ए अर तँसँ पहिले कोनो
"कचँतप, य-ह" भइ सकै। ए गजनमे प्रयाज भेल आन काहिया छि--
"जवन", "खसन", "बहन" "कहन"।



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,
मासिक संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

तेसर उदाहरण सेहो देखू-

बानी मेघ सगरा जन पठाएत ना

रौआ हमर खेतत आ नहाएत ना

ई मतनामे "ना" बदीह छै । आ बदीहसँ पहिने पाँतिमे "पठाएत" शब्द छै
आ दोसर

पाँतिमे "नहाएत" । जँ दू शब्दमे मिनान कबै तँ "एत" दू पाँतिक
काहियामे

कामन छै आ "एत" सँ पहिने "आ" स्वरक मात्रा छै (पहिने पाँतिमे "ठा" आ
दोसर पाँतिमे "हा" । ई मतनामे काहिया हएत "आ" मात्राक संग "एत" रँ
समूह । ई गजनमे नेन गेन आन काहिया छै रँहाएत, रँनाएत, चनाएत आ
थाएत । जँ मतनाक दू पाँतिक काहियामे

किछ रँ समूह कामन बँ छै तँ ओकरा तहनीनी बदीह कहन जागत छै ।
उपबका मतनामे "एत"केँ तहनीनी बदीह कहन जागत छै । काहियाक ई
रिखबँकेँ एना रूनी तँ नीक बहत -

१) जँ कोनो मतनामे "डन" आ "दन" काहिया छै तँ एमे "न" रँ मून रँ
भेने (काहियाक मिनान सदिखन अंतसँ कएन जागत छै) आ ओसँ पहिनेक
रँक स्वर सेहो



विदेह ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२)

मासिक अंक ISSN 2229-547X VIDEHA

रैवारैव लेरैक चाली । उपवका उदाहरणमे "न" रर्क रौद क्रमशः "ड" आ "द" रर्क रौटे छै आ दनूक स्वर "अ" छै मने अकाराबु छै तँए कोनो मतनामे आ काहिया सही रहत । आरै ए गजनमे आन शैव सभमे एहने काहिया हेते जेना- "हन", "मन", "जीरन" आदि । एठाम आ रौत रूँसरौक अछि जे जँ मतनामे "डन" आ "धून" बहिटे तँ काहिया गनत भऽ जेते कावण मून रर्क "न" केव रौदक स्वरक मात्रा सेहो अनिरार्य कर्पे मिनरौक चाली छदा ए उदाहरणक एकठा काहियामे "न" केव रौद "अ" स्वरक गणितार्य छै तँ दोसरमे मून रर्क "न" केव रौद "उ" स्वर छै, तँए आ गनत भेन । एठाम आहो मोन बाथू जे "डन" आ "दन" केव रौद कोनो आन शैवमे "धून", "आन", "निन" आदि काहियारै ले नऽ सकैत छी । आहो मोन बाथू जे एकै गजनक आन-आन शैवमे मून रर्क एकै बहते । जेना उपवका उदाहरणमे "डन" आ "दन" काहिया छै तँ आन शैवक काहियाक अंतमे "न" रर्क अनिरार्य कर्पस बहते ।

१) जँ कोनो मतनामे "जीरन" आ "तीमन" छै तँ काहिया "अ" स्वरक सग "न" मून रर्क रहत । आ तँए आन शैवक काहिया लेन "धूमन", "केहन", "पारन" एहन शिष्ट उपहास बहत ।

२) जँ कोनो मतनामे काहिया "तीमन" आ "नीमन" शिष्ट छै तखन कने धेखान बाथए पडत । दनू शिष्टकै धेखानसँ देखू, अंतमे "मन" रर्क समूह उभयनिष्ठा छै तँ एहन काहियामे "मन" मून रर्क समूह भेन आ तगसँ पहिले दनूमे "अ" स्वरक मात्रा छै (ती, नी) तँए एकव काहिया भेन "अ" स्वरक मात्राक सग "मन" रर्क समूह । जँ कोनो शिष्ट "तीमन" आ "नीमन" केव रौद कोनो आन शैवमे "जीरन", "धूमन", "केहन", "पारन" काहिया नेताह तँ गनत रहत । सही काहिया हेत- "परिसीमन" आदि । एठाम आहो मोन बाथू जे जँ कोनो मतनामे "तीमन" आ "धूमन" काहिया छै तँ ओ गनत रहत कावण "मन" रर्क समूहसँ पहिले एकठामे "अ" स्वरक मात्रा छै तँ दोसरमे "उ" स्वरक मात्रा । तेनाहिने "आएत" एर "आएत" काहियामे अंतसँ "एत" उभयनिष्ठा छै एर तगसँ पहिले "आ" स्वरक मात्रा छै, तकर रौद आन शैवमे "जाएत", "नहाएत", "पाएत", "रूँडा आएत" आदि काहिया सही हेते ।



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मासिक **ISSN 2229-547X VIDEHA**

४) कोनो मतनामे "तथोत्साधत" आ "रूसाधत" शिद्दक काहिया ले भए सकैए से
आरिं अहाँ

सभ नीक जकाँ रूनि गेन हेलै। जँ कोनो शागब एहन काहिया ले छथि तँ
काहियामे "सिनाद दोष" आरिं जागत छै।

३.) केथनो कान किछ एहन शिद्द आरिं जागत छै काहियामे, जे अधिकशितः
एकसमान बहैत

छै जेना- "पसाव" एर "साव"। ए दूठा शिद्दमे अतसँ "साव" उभयनिष्ठ छै आ
केओ कहता जे "साव" सँ पहिले रँना स्वरक मात्रा सेहो मिनरीक चाली। मने
"पसाव" एर "साव" मे "प"

अनकामन छै तँए " साव" सँ पहिले "अ" स्वर हेलीक चाली, झुदा शागबीक
निश्चयक हिसारै मतनामे एहन काहियाक प्रयोग गनत होगत छै। अर्थात्
कोनो मतनामे अहाँ "पसाव" एर "साव", तेनाहिने "रिचाव" क संग "चाव" आदि
काहिया ले नह सकैत छी।

७) आरिं कने सहाजस्वर रँना काहियारै देखी। किछ आव रिरवणसँ पहिले किछ
सहाज शिद्द सबरै देखन जाए। प्रस्थान, चसु, दूस्सु, कियत। आरिं ए देखू
जे सहाज रँनी अतसँ कोन स्थानपव पड़ैत अछि। जँ ए अतसँ तेसव आ
ओकर बाद मने चाबिम या पाँचम स्थानपव अरैत हो तँ काहियाक निश्चय पहिले
जकाँ हएत। झुदा जँ गएह

सहाज रँनी काहिया रँना शिद्दक अतसँ दोसव स्थान पव अरैत हो तँ कने धेखान
देरै पड़त। मानि निश्च जे मतनाक पहिल पाँचमे "मसु" काहिया छैक। तँ
आरिं हरैक काहियाक अतमे "सु" बहरीक चाली। उदाहरण नेन "मसु" क
काहिया "दसु", "पसु", "हसु" आदि भए सकैए। उदाहरण कपमे एकठा
मेबरै देखन जाए--

हएत कोनो गृदसु जीरन



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानकीह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

भेन चित्रार्म हवस्तु जीर्न

आरं ई शैवमे वदीह "जीर्न" भेन आ पहिन पातिमे काहिया "गुदस्तु" अछि,
आरं संज्ञास्वर रंन निश्चयक हिमारे काहिया रंन शिद्धमे अंतर्मा दोसव रंन "स्तु"
होएराक चाली । आरं दोसव पातिके देखू वदीहसँ पहिले काहियाक कपमे
"हवस्तु" अछि जकव अंतर्मा "स्तु" संगे-संग "अ" रंनक स्वर सामा सेहो छै जे
निश्चयक मोतारिक सही अछि । ई गजनमे आन काहिया सभ एना अछि-
"रास्तु", "मदमस्तु", "मस्तु", "सस्तु" आदि । उपवके निश्चय जकाँ मतनाक पहिन
पातिमे जँ "मस्तु" काहिया छै तँ ओकव रंन आन शैवमे "हस्तु" "स्वस्तु" आदि
काहिया ले आरं सकेए । संज्ञास्वरक ३ निश्चय मात्रा रंन काहिया नेन कने
अनग ठ 'गसँ छैक ।

१) तँ आरं आरं कने "ए" आ "य" रंन प्रसंगपव ।

ए आ य : मैथिलीक रंनमे ए आ य दू निश्चय जागत अछि । ह्मादा "ए"
केव प्रयोग प्राचीन मैथिलीए सँ अछि ।

प्राचीन रंन- कएन, जाए, होएत, माए, भाए, गाए आदि ।

नरीन रंन- कयन, जाय, होयत, माय, भाय, गाय आदि ।

सामान्यतया शिद्धक शुकमे ए मात्र अरैत अछि । जेना एहि, एना, एकव, एहन
आदि । एहि शिद्ध सभक स्थानपव यहि, यना, यकव, यहन आदिक प्रयोग ले
कवराक चाली । यद्यपि मैथिलीभाषी थाक सहित किछ जातिमे शिद्धक आवस्थामे
"ए"केँ य कहि उचारण कएन जागत अछि । मैथिलीक सरंसाधारणक उचारण-शैली
" य "क अपेक्षा "ए"सँ रेंसी निकट छैक । थाम क२ कएन, हएर आदि कतिपय
शिद्धकेँ केँन हेर आदि कपमे कतह्-कतह् निश्चय जाएर सेहो "ए"क प्रयोगकेँ
रेंसी समीचीन प्रमाणित करैत अछि ।



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मासिक संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

एतेक जननाक बाद आरी "ए" रा "य" केव धनि नोप पव । ओना "ए" रा "य"
क संगे-संगे आन धनि नोप सेहो होगत छै मूदा ओकव चर्चा एतए आरथक
ले । तँ देखी धनि नोपक निश्चय-

धनि-नोप : निम्नलिखित अरुस्थाने शिद्धसँ "ए" रा "य" केव धनि-नोप भऽ जागत
अछि:

(क) फियान्वयी प्रत्यय अयमे य रा ए वृत्त भऽ जागत अछि । ओग सँ पहिले
अक उच्चारण दीर्घ भऽ जागत अछि । ओकव आगाँ नोप-सूचक चिह्न रा रिकारी
(' / २) नगोउन जागछ । जेना-

पूर्व कप : पढ़ए (पढ़य) गेनाह, कए (कय) नैन, उठए (उठय) पड़तोक ।

अपूर्व कप : पढ़' गेनाह, क' नैन, उठ' पड़तोक ।

पढ़२ गेनाह, क२ नैन, उठ२ पड़तोक ।

(ख) पूर्वकानिक प्रत्यय आय (आए) प्रत्ययमे य (ए) वृत्त भऽ जागछ, मूदा नोप-
सूचक रिकारी ले नगोउन जागछ । जेना-

पूर्व कप : आए (य) गेन, पठाय (ए) देर, नहाए (य) अएनाह ।



बिदेह ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२)

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

अपूर्ण कप : था गेन, पठा देरै, नहा अनाह ।

आरै एक रैव हेल घुबि जाग उचावण पव । उचावणमे नोप-सूचक चिन्ह (')
रा रिकारी (२) केव कोनो महत्त्व ले होगत छैक । मने नोप सूचक चिन्ह रा
रिकारीसँ पहिले जे रर्ष छै तकरे पूवा-पूवी उचावण हेतै कनेक नमहव
उचावणक संग (झुदा ए कने नमहव उचावणक कावण ओ रर्ष दीर्घ ले मानन
जाएत । डा. बायारताव यादर ए नमहव उचावणकेँ दीर्घ तँ माले छथि झुदा
गनतीमे शिद्धकेँ नघू माले छथि) । जेना "नए" शिद्धमे न केव रौद ए केव
उचावण होगत अछि झुदा जखन ओही "नए" शिद्धकेँ "न" रा "न२" निथरै तखन
ओकव उचावण रौदनि जाएत आ एकव उचावण "न" केव रौवारैव छएत । मतनरै
जे "न" रा "न२" केव उचावण "नए" रा "नय" शिद्धसँ रिक्कन अलग अछि ।
तेनाहिने "खस" रा "खस२" केव उचावण "खसए" रा "खसय" शिद्धसँ अलग
अछि । एहन-एहन शिद्ध जकव अंतमे "ए" रा "य" नोप होगत होग तकरा
नेन एहने सन निश्चय हेतै ।

जौ कोनो शागव धनि नोपक चिन्ह रा रिकारी रौना शिद्धक काहिया रौनरै छथि तँ
ओ धेखान बाथथि जे हरेक काहियामे नोप-सूचक चिन्ह (') रा रिकारी (२)
सँ पहिलेक रर्ष एकसमान बाथथि । जेना "न" रा "न२" केव काहियाक रौद
शागव एहन शिद्ध छूथि जकव अंतमे नोप-सूचक चिन्ह (') रा रिकारी (२)
नागन हो तकरा रौद रर्ष "न" हो जेना "चन" रा "चन२" । जौ कोनो शागव
"बाथ" रा "बाथ२" केव काहिया "रौज" या "रौज२" बखताह तँ ओ गनत
हेतै । "रौज" या "रौज२" केव रौद "सज" रा "सज२" काहिया हेतै ।
संगे-संग काहियाक उपवका रौना निश्चय सभ पहिलेहेँ जकाँ अछमे नागू
बहत । जौ कोनो एहन शिद्ध जकव अंतमे "ए" रा "य" केव नोप भेन छै आ
तगसँ पहिले कोनो मात्रा छै तँ ओकव काहिया नेन मात्राक काहिया रौना निश्चय
नागत जकव रिरवण आगू देन जा बहन अछि ।

आरै अहाँ सभ ओ रूनि सकैत छिथि जे --

नए-----आस-दीर्घ

न२-----आस



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संकेतः ISSN 2229-547X VIDEHA

न-----द्वारा

नय-----द्वारा-द्वारा रा दीर्घ

आ दध, कध आदि नैन एहने मन निश्चय बहत ।

आशा छि जे एतेक उदाहरणसँ आ निश्चय सभ रूमरौमे आएन रहएत ।

+))

पञ्चमाक्षर आ अक्षरावः पञ्चमाक्षरावुञ्जात ७, ए, ण, न एरं म अरित छि ।
संस्कृत भाषाक अक्षराव शिद्धक अक्षरमे जग रञ्जाक अक्षर बहैत छि ओही रञ्जाक
पञ्चमाक्षर अरित छि । जेना-

अर्क (क रञ्जाक बहुरीक कावणें अक्षरमे ७ आएन छि ।)

पञ्च (च रञ्जाक बहुरीक कावणें अक्षरमे ७ आएन छि ।)

खल (ठ रञ्जाक बहुरीक कावणें अक्षरमे १ आएन छि ।)

सञ्चि (त रञ्जाक बहुरीक कावणें अक्षरमे न आएन छि ।)



विदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,
मानकीह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

खम्बु (प रञ्जक बहुरीक कावणे अन्तमे म् आधन अछि ।)

उपर्युक्त रात मैथिलीमे कम देखन जागत अछि । पञ्चमाङ्गक रँदनामे
अधिकशि जगहपव अन्वयबक प्रयोग देखन जागछ । जेना- अंक, पंच, खंड,
संधि, खंड आदि । ब्राह्मणरिद पद्धित गोरिन्द माक कहँ छनि जे करञ्ज,
चरञ्ज आ ठरञ्जसँ पूर्व अन्वयब निखन जाए तथा तरञ्ज आ परञ्जसँ पूर्व
पञ्चमाङ्गरे निखन जाए । जेना- अंक, चंचन, अंडा, अन्त तथा कम्पन । ह्दा
हिन्दीक निकट बहन आधुनिक लेखक एँ रातकेँ नहि मानैत छथि । ओ लोकनि
अन्त आ कम्पनक जगहपव सेहो अंत आ कम्पन निथैत देखन जागत छथि ।

नरीन पञ्चति किछु सुरिधाजनक अरथ छैक । किअक तँ एँ मे समय आ स्थानक
रँचत होगत छैक । ह्दा कतेक रेब हस्तलेखन रा ह्दामे अन्वयबक छोट
सन रिन्द स्पष्ट, ले भेनासँ अर्थक अनर्थ होगत सेहो देखन जागत अछि ।
अन्वयबक प्रयोगमे उँचावण-दोषक सम्यारना सेहो ततरँ देखन जागत अछि ।
एतदर्थ क सँ नह कइ परञ्ज धवि पञ्चमाङ्गरेक प्रयोग कवरँ उँचित अछि । यसँ
नह कइ उँ धविक अङ्गक सङ्ग अन्वयबक प्रयोग कवरामे कतह् कोनो रिराद
ले देखन जागछ ।

आर कले आरि काहिया पव (एँठाम हम्ब आग्रह जे पंचमाङ्गक प्रयोग कएन
जाए । ओना पहिले हम्ब अपने अन्वयबक प्रयोग करैत छनौ ह्दा आर
पंचमाङ्गक प्रयोग करैत छी आ एँह मैथिलीक हितमे छै) जँ मतनाक कोनो
काहिया मे पंचमाङ्गक रा अन्वयबक प्रयोग छैक तँ हरेक शैबक काहियामे
अन्वयब रा पंचमाङ्गक हेरँक चाली ओहो ग्रीक ओही स्थान पव जग पव पहिल
काहियामे छैक । जेना मानि निख कोनो मतनाक पहिल पाँतिक काहिया
"रंसत" छैक, तँ आर अहाँकेँ ओहन शिद्ध काहियामे देरँ पड़त जकब अंतसँ
दोसब रण पव अन्वयब रा पंचमाङ्गक अरैत होगक जेना की "अनंत", "दिगंत"
गलादि । आ एहने सन निखम चंद्रविद् नेन सेहो छैक । एकठा रात आब जँ
कोनो मतनाक दनू पाँतिमे अन्वयब रँना काहिया छै तँ ओकब रँद रँना शैबक
काहिया नेन पंचमाङ्गक रँना शिद्ध सेहो नए सकैत छी जेना--- जँ मतनामे
की "रंसत" आ "अनंत" छै तँ रँद रँना शैबक काहिया नेन "दिगंत" सेहो नए



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मासिक ISSN 2229-547X VIDEHA

सकैत छी । खान सभ पचमासक नैन एहनै निखम बूझ । झुदा एहन ठाम अ
मोन बाथू जे पचमासक अपनै बर्राक लेखीक छी ।

मात्रा बँना काहिया पब रिचाव कबरसँ पतिनै कलैक खेबसँ तहनीनी बदीह आ
मैथिली रिभर्जि पब रिचाव कबी । कावण जे मैथिली रिभर्जि मून शिद्धमे सठि
जागत छैक । आ तँ ए ओ केथन काहियाक कप नैत आ केथन बदीहक से
बुझनाग पबम जकबी ।

रिभर्जि-----

मैथिलीमे रिभर्जि चिन्ह समान्यतः पाँच गोष्ठि अछि ।

कर्म----- कै

कवण---- एँ /सँ

अपदान-- सँ

सम्वन्ध----क

अधिकवण--मे /पब

एकै अतिविज रिद्वान नोकनि कतकि चिन्हकै सुन्नक कपमे नैत छथि । अ
पाँचो चिन्ह मून शिद्धमे सठि जागत छैक । आ एँ पाँचोमेसँ "एँ" चिन्ह मून
शिद्धक ध्वनि बँदनि दैत छैक । उदाहरण नैन देखू-- "राँठ" शिद्धमे "एँ" चिन्ह
सठनै " राँठे" होगत छैक । "हाथ" शिद्धमे सठनै "हाथे" जगदि । आरँ कने
अ रिचाबी जे जँ कोनो शागब एहन शिद्ध, जगमे रिभर्जि सठन होगक जँ
ओकब काहिया बनेता तँ की हेते । ए नैन किछ एहन शिद्ध नी जगमे रिभर्जि
सठन होगक । उदाहरण नैन--

मून शिद्ध----- रिभर्जिसँ सठन शिद्ध



বিদেহ' ১১২ ম অংক ১৭ অগস্ত ২০১২ (বর্ষ ৭ মাস ৭৬ অংক ১১২,

মানুস্কিহ সংস্করণ, ISSN 2229-547X VIDEHA

হাথ----- হাথক /হাথেঁ/ হাথসঁ/ হাথমে/ হাথকেঁ

হূন----- হূনক /হূনসঁ /হূনেঁ

সংগ----- সংগমে /সংগেঁ

বাতি----- বাতিএঁ/ বাতিসঁ /বাতিমে

এঁ রিরবণকেঁ হমবা লোকনি দূ ভাগমে রাঁঠেঁ সকেঁ ছী-----

১) এহন মূন শিঙ্ক জে ঋতসঁ ঋকাবান্ত হুথএ, ঋ

২) এহন মূন শিঙ্ক জকব ঋতমে মাত্রাক প্রয়োগ হোগক

১) ঋর জঁ কোনো শাগব এহন মূন শিঙ্ক জে ঋকাবান্ত ঠৈক ঋ ওগমে রিভজি
নাগন ঠৈক তকবা কাফিয়া বঁনরৈ ছুথি তঁ তনকা ঋ মোন বাথএ পড়তহি জে
রাঁদমে ঋরএ বঁনা হবক ঋন-ঋন কাফিয়ামে রএহ রিভজি কোনো ঋন মূন
শিঙ্কমে ঋরৈ জে ঋকাবান্ত হোগক সংগহি-সংগ স্বব-সাম্য সেহো বথৈত হো।
উদাহরণ নেন----- মানু জে কেও মূন "হাথ" শিঙ্কমে "ক" রিভজি জোড়ি
"হাথক" কাফিয়া বঁনেনক। দোসব ঋন-ঋন কাফিয়া নেন ঋ মোন বাথু জে
ঋরএ বঁনা ওগ কাফিয়াক ঋতমে "ক" রিভজি তঁ এরৈ কবতে, দ্বাদা রিভজি
"ক"সঁ ঠীক পহিলে ঋকাবান্ত রণ এঁ স্বব-সাম্য হোএরাক চাহী জেনা কী মানু
"রাঁত" শিঙ্কমে রিভজি "ক"জুঠনা পব "রাঁতক" শিঙ্ক বঁনৈত ঋছি। ঋর পহিল
কাফিয়া "হাথক" ঋ দোসব কাফিয়া "রাঁতক" মিনান কব (কাফিয়াক মিনান
সদিখন শিঙ্ক ঋতসঁ কএন জাগত ঠৈক)। দেখু পহিল কাফিয়া "হাথক" ঋ
দোসব কাফিয়া "রাঁতক" দনুক ঋতমে রিভজি "ক" ঋছি সংগহি-সংগ রিভজি "ক"
কেব রাঁদ দনু কাফিয়াক শিঙ্ক "থ" ঋ "ত" ঋকাবান্ত ঋছি, সংগহি-সংগ "হা" কেব
স্বব-সাম্য "রাঁ" সঁ ঠৈক। ঋর হেব তেসব শিঙ্ক "পাত" নিথ ঋ জঁ ওগমে "ক"
রিভজি জোড়রৈ তঁ "পাতক" শিঙ্ক বঁনৈত। ঋর পহিল কাফিয়া "হাথক" ঋ
দোসব কাফিয়া "পাতক" মিনান কব। দেখু ঋতসঁ দনু শিঙ্কমে "ক" রিভজি ঠৈক
ঋ ঠীক ওগসঁ পহিলে দনু শিঙ্ক ঋকাবান্ত ঠৈক ঋ সংগহি-সংগ "হা" ক স্বব-সাম্য
"পা"সঁ ঠৈক। এনাহিতে দোসব উদাহরণ দেখু- মূন শিঙ্ক "পাত" রিভজি "মে"
জুঠনা পব "পাতমে" শিঙ্ক বঁনৈত ঋছি। হেব দোসব শিঙ্ক "রাঁঠ" রিভজি "মে"
জুঠনা পব "রাঁঠমে"। ঋর হেবসঁ মিনান কব- দনু শিঙ্ক ঋতমে রিভজি "মে"
নাগন ঠৈক। রিভজি "মে" সঁ ঠীক পহিলে ঋকাবান্ত রণ সেহো ঠৈক সংগহি-সংগ



विदेह ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२)

मानुसिंह सक्सेना ISSN 2229-547X VIDEHA

"पा" केव स्रव-साया "रा"सँ छैक । किछु आव उदाहरण निख- "कनमस",
"पतनस", "रापके", "आरके" गलादि ।

झुदा एठाम अ रात एकदम धेखान बाथू जे जौ कोनो शागव लेखनमे हिन्दीक
प्रभारसँ मून शिद्धमे रिभजि ले सटैले छथि तेउ उचावामे मून शिद्ध आ रिभजि
स्रतः सटि जागत छै तँ ए रिभजि सटि कइ निथू रा हठा कए रिना बदीहक
गजन हरेल कवत । एकवा एना बूझी--- कोनो मतनामे " कनमस " आ "
पतनस " काहिया रनि सकैए आ संगे-संग मतनामे " कनमस " आ " पतन
स " सेहो काहिया रनि सकैए आ एकवा रिना बदीहक गजन कहन जाएत
तेनाहि ते "आथिस" आ चाकिस " काहिया सेहो ठीक बहत आ "आथिस" आ
चाकिस " सेहो । ओना जौ कोनो उर्दू-हिन्दीक शागव कोनो गजनमे "
कनमस " आ " पतनस " रा " कनमस " आ " पतनस " काहिया देखताह
तँ ओकवा गनत कहि देताह, झुदा अ रात सदिखन मोन बाथू जे उर्दू-हिन्दी
भाषा खनग छै आ मैथिली भाषा खनग छै, एकव राकवण आ उचावण पझति
खनग छै तँ ए खबरीमे पावित पूवा-पूरी निखम मैथिलीमे नागू ले भइ सकैए ।

२) एहन मून शिद्ध जकव अतमे मात्रा होगक ओकव काहिया लेन धेखान बाथू
जे रिभजिक राद ठीक रएह मात्रा स्रव-सायाक संग एरौक चाली । उदाहरण
लेन-

आथिस---चाकिस---राहिस, गलादि

वातिमे---जातिमे--- जाठिमे, गलादि

घूँठीके---घुँझीके---चूँझीके, गलादि

पानिक--आनिक, गलादि

केखनो कान दूठा रिभजि एकै संग जूँटि जागत छैक जेना "वातिईस" एहन
समयमे अहाँकेँ दोसरो काहिया ओहने लेरैए पड़त जगमे दनू रिभजि समान
होगक स्रव-सायाक संगे । उदाहरण लेन " वातिईस" केव काहिया "झातिईस"
"हाथिईस" "राठिईस" आदि-आदि भइ सकैत अछि । रिभजि रना काहियाक
संरधमे एकठा आव थाम गप्प । कोनो एहन मून शिद्ध जकव अत कोनो एकठा



বিদেহ' ১১২ ম অংক ১৭ অগস্ত ২০১২ (বর্ষ ৭ মাস ৭৬ অংক ১১২,

মাসিক সংস্করণ ISSN 2229-547X VIDEHA

খাস রিভজিস সাম্য বয়েত হুখএ, রিভজিস পহিলে বঁনা রণি থকাবান্ত বা মাত্ৰা হাজ (জেলন স্থিতি) হুখএ সংগহি-সংগ ওগস পহিলে স্রব-সাম্য হুখএ ত ও দনু কাফিয়া কপমে নেন জা সকেএ। উদাহরণ নেন একটা রিভজি বঁনা শিঙ্ক "পাতক" বা "রাঠক" নিখ। আ থার এহন মুন শিঙ্ক তাকু জকব থতমে "ক" হোগ, "ক" স পহিলে থকাবান্ত রণি হোগক (জঁ থকাবান্ত রণি পহিলে স্রব-সাম্য হোগ ত থারো নীক) ত ও দনু (একটা রিভজি হাজ আ দোসব মুন) শিঙ্ক কাফিয়া ভহ সকেত থি। উদাহরণ নেন উপব নেন দনু রিভজি হাজ শিঙ্ক "পাতক" আ "রাঠক"ক মুন শিঙ্ক "রানক" পানক" বা "চানক"স মিনাড। জঁ গৌবস দেখরৈ ত পতা নাগত জে এ শিঙ্ক সভ কাফিয়া নেন একদম উপহাজ থি। তেনাহিতে মাত্ৰা বঁনা শিঙ্ক জগমে রিভজি সঠন হুখএ আ ওহন মুন শিঙ্ক জে ওকবাস মিলেত হুখএ একদোসবাক কাফিয়া বনি সকেত থি। জঁ কোনো মতনাক থত মুন শিঙ্কস সঠন রিভজিস হোগক ত ওকবা বিনা বদীফক গজন মান। উদাহরণ নেন-

পসবন ঠৈ শোণিত সগরো রাঠপব

ঘব-থাগন-রাডী-সাদী ঘাঠপব

এ গজনক আন থতিম শিঙ্ক থি- - - - "রাঠপব", "খাঠপব", "ঠাঠপব"। দেখু এ সভমে থতিস " পব " সেহো ঠৈ এর " আ " স্রবক সং " ঠ " রণি সেহো ঠৈ। হুদা তেও একবা বিনা বদীফক গজন মানন জাএত।

থার কলে মাত্ৰা বঁনা কাফিয়া পব রিচাব কবি। মৈথিলী রণমানামে ১৩ গোষ্ঠ স্রব দেখাওন গেন থি। থ, আ, গ, জ, উ, ঞ, ঋ, নৃ (আ নৃক আব একটা দীর্ঘ কপ) ঙ, এ, ঐ, ও, ঔ, অ এর ঃ। জগমে "থ" ত হরেক রণিক (জগমে হনন্ত লৈ নাগন হোগক)মে থতিমে থরিতে ঠৈক। থা ডহ গোষ্ঠ স্রব (ঞ, ঋ, নৃ আ নৃক আব একটা দীর্ঘ কপ, অ এর ঃ) থানী তসেম শিঙ্কমে থরিত ঠৈক। বঁচন নও গোষ্ঠ স্রব আ, গ, জ, উ, ঙ, এ, ঐ, ও, এর ঔ (একব লেখ কপ ক্রমশ: -- ঐ, ঐ, ঐ, ঐ, ঐ, ঐ, ঐ এর ঐ থি)। সংগে-সংগ হম মৈথিলীমে রেফ বঁনা কাফিয়া পব সেহো রিচাব কবর। মতনর জে ঐঠাম হম ফন দস গোষ্ঠ মাত্ৰা পব রিচাব কবর। হুদা ঐ দসোমে "গ", "উ" আ রেফ পব রিচাব হম বাদমে কবর। একব কাবণ জে মৈথিলীমে ঐ তিনুক উচাবণ কলে থনগ ঠগস হোগত থি। তঁ চনী মাত্ৰা বঁনা কাফিয়া পব। মতনামে বদীফস পহিলে জঁ রণিমে কোনো মাত্ৰা ঠৈক তঁ গজনক হরেক শৈবক কাফিয়া মে রএহ মাত্ৰা থরাক চানী চাহে ওগ মাত্ৰাক সং বঁনা রণি দোসরে কিএক লে হে।



বিদেহ' ১১২ ম অংক ১৭ অগস্ট ২০১২ (বর্ষ ৭ মাস ৭৬ অংক ১১২,

মানুস্ক্রিট সংস্করণ, ISSN 2229-547X VIDEHA

পূর্বে মে উগন ননকা খাবী ত' দেখু

দুগলক ঘব চমা চম মোতী ত' দেখু

(খমিত মিশ্র)

ঐ গজনমে লেন গেন খান কাফিয়া সভ খন্ডি- কিনকাবী, রৌমাবী, পাবী, সাড়ী
আ তবকাবী। ঐঠাম গা খেখান দেবএ রঁনা রাঁত খন্ডি জে মতনামে জে কাফিয়া
প্রয়োগ ভেন চ্ছে তকব খঁতমে " গা " কেব মাত্রা চ্ছে রঁপী ফুদা খনগ-খনগ চ্ছে
ফুদা ওগসঁ পহিলে রঁনা স্রব লৈ মিনি বহন চ্ছে একব মতনরঁ গা ভেন জে মাত্রা
রঁনা কাফিয়া লেন শিঙ্ক খঁতমে জে মাত্রা চ্ছে সএহ খান শিঙ্ক খঁতমে খএরাঁক
চাহি রঁশিঠে কি রঁপী খনগ-খনগ হুখএ। খার ঐঠাম গা দেখু জে জঁ মতনামে
" খাবী " ক সগ সাড়ী বহিতে তখন খান কাফিয়ামে "ডী" রা " বী" কামন
বহিতে আ তগসঁ পহিলে " আ" কেব স্রব সাম্য বহিতে। জেনা " রাড়ী ",
উধাবী, খধকপাবী গলদি। জঁ " খাবী " আ " রাড়ী" কেব রাঁদ "মোতী" শিঙ্ক
কাফিয়া লৈ ছী তঁ সিনাদ দোষ খারি জাএত আ কাফিয়া গনত ভঁ জাএত।
তেনাহিতে জঁ কোনো মতনামে " মোতী " আ কোঠী" কাফিয়া লৈ তখন সাড়ী,
উধাবী খাদি কাফিয়া ভঁ সকেএ। কোনো সে খার খঁদ সঁ নীক জকাঁ বঁমি
গেন হেরে। ঐ নিখমক খঁদাব পব হমব প্রকাশিত পোখী " খনচিন্হাব খাখব "
কেব বঁহুত বাস কাফিয়া গনত খন্ডি। ফুদা ওগ সময় হমবা নগ কাফিয়া
জতেক সমন ভন ওগ হিসারসঁ ওকব প্রয়োগ কএন। আ তঁ ওগ পোখী মঁক
কিড কাফিয়াক নিখম খার পূঁতি: রঁকাব ভঁ চুকন খন্ডি। সগে সগ গাহো
খেখান বাখু জে খান মাত্রা রঁনা কাফিয়া লেন এহনে নিখম বহত।

একটা গনত উদাহরণ দেবঁসঁ হম খপনারঁ লোকি লৈ বহন ছী। গা শেব হমবে
খিক-----

এনাগ জঁ খঁদাক সুনী হম

নহঁএসঁ সপনা বুনী হম"

(কাফিয়া "গা"ক মাত্রা)



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक ISSN 2229-547X VIDEHA

गजनक अन्तर्गत काहिया अछि----- "चूमी", "पूछी", "बूझी", "थूनी", "नूती", "सूती"
अदि। आरु ई शैवमे देखू दनु पातिक काहियामे " नी " कामन छै आ तग
हिसारसँ हमबा एहन काहिया चूनीक डन जकब अतमे " नी " अरैत हो आ
तगसँ पहिले " ड " केव मात्रा हूअ। ई शैवमे " ड " केव मात्रा तू नैन
गेन अछि अदा " नी " केव पानन नै भेन अछि तैए ई गजन मरैक एकटा
काहिया " थूनी " छोडा आन सभ (जेना चूमी, "पूछी", "बूझी", "नूती", "सूती"
) अदि गनत अछि। अन्त रचन मात्राक नैन एहने समान निखम अछि आ हरेक
मात्राक एक-एकटा उदाहरण देन जा बहन अछि।

१) छोडा क२ जे रिन रजने जा बहन अछि

छादै चिरेत आगि सनगा बहन अछि

(काहिया " आ " केव मात्रा)

(गजेन्द्र ठाकुर)

ई गजन आन काहिया सभ अछि-----कना, भसिया, जा, था गलादि।

२) "जौ तोड़र संपत तौ जानू अहाँ

हासिए नगा मबर मानू अहाँ

(काहिया "डु" क मात्रा)

(आशीष अनचिह्न, सबन राधिक)

ई गजनमे नैन गेन अन्त काहिया- "गानू", "आनू", "ठानू" अदि।

३) "मोम तंग कवरै कवते



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

देह भाषा पठरै कबते"

(काहिया "ए"क मात्रा)

ई गजनमे लेन गेन अन्य काहिया ---"खुरै", "उड़रै", "सठरै" आदि
अछि ।

४) बोरे उठि मैदान गेलै रौखा

ओम्बहिसँ दतमनि तँ नेते रौखा

(आशीष अनचिन्हाव)

(काहिया "ई"क मात्रा)

ई गजनक आन काहिया सब अछि - एते, जेते, रैनते, चनते आदि-आदि ।

ई केव मात्राक एकठा आब उदाहरण देखू-----

कवरौ ले मजूरी माँ पठरै हमछँ

ले बहरै कतो पाछू रठरै हमछँ

(ओम्प्रकाश)

ई गजनमे लेन गेन आन काहिया अछि -----चढ़रै, मढ़रै, गढ़रै आदि-
आदि ।

केखनो कान "ई" केव उच्चारण "अग" जकाँ होगत अछि । जेना "सैतान"
रैदनामे सगतान, रैमानक रैदनामे "रैगमान" गवादि ।

३.) आरँ हवजागकेँ तोँ रिसवि जो रे रौखा



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

मोन ले पढ़ी एहन संपत्त खो रे रौखा

(काहिया "उ"क मात्रा)

(आशीष अनचिन्हाव, सबन बारिक)

ए गजनमे नैन गेन अन्त काहिया-----उ, खसो, पड़ १ गवादि अछि ।

७) एक रैब खेब हँसिउ कनेक

उही नजबि सँ देखिउ कनेक

(काहिया "उ"क मात्रा)

(आशीष अनचिन्हाव, सबन बारिक)

ए गजनमे नैन गेन अन्त काहिया ---"बहिउ", "चनिउ", "रूमरिउ" आदि
अछि ।

**** केखनो कान "उ" केब उचावण "अउ" जकाँ होगत अछि ।

आरि हमबा नोकनि खेबसँ एकरेब सहाजाम्बर रँना शिङ्गपव चली । मात्रा रँना
सहाजाम्बर नैन पहिनेसँ कने अलग ठोसँ देखू । ३ गप्प उदाहरणसँ रैसी
फर्दा छ हएत । मानू जे मतनाक पहिने पाँतिमे काहियाक कपमे "छ्छी" शिङ्ग
नैन गेन । आरि दोसर काहिया नैन मोन बाथू जे "३" मात्रा हाऊ कोनो शिङ्ग
भइ सकैत अछि । उदाहरण नैन "चिली", "रूँछी", "खँनी" आदि "छ्छी"क काहिया
भइ सकैत अछि । मूदा जँ मतनाक काहिया "मूँछी" आ "मूँछी" डेक तखन आन
शेबक काहिया "चिली" या "रूँछी" ले भइ सकैत अछि । कावण तँ अहाँ सभ
रूमिअ गेन छेरै ।

उम्माद अछि जे उपव देन गेन मात्रा रँना उदाहरणसँ काहिया सरंधी निखम रैसी
फर्दा छ भेल हएत ।



বিদেহ' ১১২ ম অংক ১৭ অগস্ট ২০১২ (বর্ষ ৭ মাস ৭৬ অংক ১১২,

মানুস্ক্রিৎ ISSN 2229-547X VIDEHA

তঁ ঋঁ চনী "গ", "ঙ" ঋ বেহ পব। মৈথিলীমে "গ" ঋ "ঙ" লেখ ঋ উচাবণ দ্ধু পহিলে নিখন ঋ কএন জাগত ঙ্গক। একবা হম উদাহবণসঁ দেখাএর, তঁ পহিলে "গ" কেব উদাহবণসঁ শুব কব। শিঙ্ক "বাতি" দ্ধদা ওকব উচাবণ ভেন "বাগত", নিখন জাগএ "গানি" দ্ধদা রাজন জাগএ "গাগন", তেনাহিতে "পানি" কেব উচাবণ "পাগন" ভহ গেন। মৈথিলীমে র্ণ "গ" তেনন উল্লোন মচেনক জে রঁহুত ঋন শিঙ্ক সন্ত "গ" র্ণক সঁগ নিখন জাগএ নাগন জেনা কী "জাগত", "খাগত" ঋদি। একঠা ঋব মহত্বপূর্ণ গপ্প, মৈথিলীমে "গ"কাব দৃ কপমে প্রয়োগ হোগত ঋছি- পহিন কপ ভেন জগমে মাত্রা ঋরৈত ঋছি ঋ দোসব কপমে "গ"কাব র্ণক কপমে ঋরৈত ঋছি। পহিন কপক উদাহবণ "বাতি", "জাতি" সন্ত ভেন ঋ দোসব কপক উদাহবণ "জাগত", "খাগত" সন্ত ভেন। ঋর কলে হমবা লোকনি কাফিয়া পব ঋরী। জঁ ঋহাঁ কোনো এহন শিঙ্ক কাফিয়া রঁনা বহন ছী জকব ঋতিম র্ণ "গ"কাব হাজ ঋছি তঁ ঋহাঁকৈ ঋন-ঋন কাফিয়া নেন "গ" কাব হাজ রএহ র্ণ নেরঁ পড়ত জে পহিন কাফিয়ামে ঋছি। উদাহবণ নেন জঁ ঋহাঁ "বাতি" শিঙ্ক কাফিয়া নেন নেরঁ তঁ ঋর ঋহাঁকৈ দোসব কাফিয়া নেন "ত" র্ণ "গ"কাব হাজ নেরঁ চালা। জেনা কি "পাতি", "জাতি", ঋদি ঋখরা এহন শিঙ্ক নিখ জকব ঋতিমে "ত" হোগক ঋ তগসঁ পহিলে "গ" র্ণক কপমে বহএ জেনা কী "জাগত"। একব মতনরঁ জে "বাতি" শিঙ্ক কাফিয়া নেন "জাতি", "পাতি" ক সঁগে "জাগত", "খাগত", "নহাগত" সেহো ঋরি সকেত ঋছি। ঋ হমবা জনৈত ঐঠাম মৈথিলী গজন উর্দূ গজনসঁ পূর্ণিত: ঋনগ ভহ জাগত ঋছি। ঋ সঁগহি-সঁগ ও বিশেষতা মৈথিলী গজনক একঠা ঋপন ঋনগ ছুরি রঁনৈত ঋছি। ঋ ও বিশেষতা দ্রস্ব "ঙ", "ঐ", "ঔ", ঋ বেহ রঁনামে সেহো ঋরৈত ঋছি।

ঋর কলে দ্রস্ব "ঙ" পব ধেঋন দী। মৈথিলীমে জঁ শিঙ্ক ঋতিমে "ঙ" ঋরৈত হো ঋ ঠীক ওগসঁ পহিলে ঋকাবান্ত র্ণ হুঋ তখন "ঙ" কেব উচাবণ প্রায়: ও/ ঋঙ জকা হোগত ঋছি। উদাহবণ নেন মধু শিঙ্ক উচাবণ মৌধ/ মউধ হোগত ঋছি। ঋ জঁ "উ"সঁ পহিলে ঋকাবান্ত র্ণ হো তখন "গ"এ জকা "ঙ" কেব উচাবণ পহিলে হোগত ঋছি। উদাহবণ নেন "সাধু" কেব উচাবণ "সাউধ", "রাধ" কেব উচাবণ "রাউন" গলাদি। ওনা উচাবণ নেন ঋলো শিঙ্ক নেন জা সকেএ। ঋর ও দেখী জে ঐ প্রকাবক শিঙ্ক কাফিয়া কোনো রঁনতে। জঁ ঋহাঁ "ঙ" সঁ পহিলে ঋকাবান্ত রঁনা রঁসি রঁনন শিঙ্ক কাফিয়া নেন নৈত ছী তঁ ধেঋন বাখু জে ঋন-ঋন কাফিয়াক উচাবণ "কোলা র্ণ(এক বা একসঁ রঁসী) + ও/ঋঙ + ঋতিম নিশ্চিত র্ণ" ঋরৈ। ঋর উপবকে রঁনা শিঙ্ক "মধু"কৈ নিখ। একব উচাবণ "ম + ও/ঋঙ + ধ" ঋছি, তঁএ একব দোসব কাফিয়া "কোলা র্ণ(এক বা একসঁ রঁসী) + ও/ঋঙ + ধ" হেতে। ঋর জঁ ঋহাঁ দোসব শিঙ্ক "পৌধ" নেনহঁ, তঁ একব উচাবণ "প + ও/ঋঙ + ধ" ঋছি। ঋতি "মধু" কেব উচাবণ "পৌধ" কেব রঁবারব ঋছি। তঁএ "মধু" কেব কাফিয়া "পৌধ" হএত।



बिदेह ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२)

मानुसिंह सन्तुलन ISSN 2229-547X VIDEHA

एनाहिने खान-खान शिद्ध सभ काहियाक नेन ताकन जा सकैए। आरं आरं
उहन शिद्धपव जकब अंत "उ" होगक आ ठीक ओगसँ पहिले आकाबान्त रर्ष
होगक (जेना कि उपबमे एकव उचावण पछित देखा देन गेन अछि, तँ
सोमे काहिया पव चली)। ठीक द्रव्य "उ" जकाँ निश्चय छैक एकरो। मनि
निश्चय जँ अहाँ "रौब" शिद्ध नेनहँ, तँ मोन बाखू दोसव काहियाक उचावण
"आकाबान्त कोनो रर्ष + उ + न" होगक जेना की "नार" गलादि। संगहि-संग
द्रव्य "ग"ए जकाँ "चाउव" केव काहिया "चाव" एर "रौब" केव काहिया "आउव"
(owl) भए सकैत अछि। मैथिलीमे रँत कान "उ" आ चन्द्रिदू एकै संग
अछैत अछि। जेना "कहनहँ", "सुनहँ", "बहनहँ" आदि। मनि निश्चय जँ
शिद्ध सभ जँ काहियाक रुपमे आरं बहन अछि तँ एहन समयमे देखान बाखू जे
काहियामे ठीक रहए रर्ष "उ" आ चन्द्रिदूक संग आरं। से ले भेना पव
काहिया गनत भए जाएत। उपबमे देन तीन शिद्धकेँ देखू। तीन शिद्धक
अंत "ह" सँ अछि, ओहो "उ" आ चन्द्रिदूक संग। मने जँ तीन काहिया नेन
उपयुक्त अछि।

आघात रँना शिद्धक काहिया-----

मैथिलीमे दू प्रकारक आघात अछि मात्रामेक आ रँनाघात। दूदा मात्रामेक
आघात ओतेक महत्त्व ले बस्थैत अछि, तँह हम् एतए खानी रँनाघात पव रिचाव
कवरै।

मैथिलीमे कोन शिद्धमे कतए आघात पड़त तकवा देखन जाए-

१) दू रर्ष धरि रँना एहन शिद्ध जगमे एकौठा ग्वक रर्ष ले हूअ- एहन शिद्धमे
अंतसँ दोसव शिद्ध पव आघात पड़ैत छैक। जेना "घब", "रँव"। एकव
उचावण "घब", "रँव" आदि होगत अछि। मतनरँ "घ" आ "रँ" पव आघात
पड़न छैक। जँ एक या एकसँ रँसी दीर्घ हूअ तँ पहिल दीर्घ पव आघात
पड़ैत छैक। जेना "हाथ", "खन्ना" आदि। मतनरँ "हा" आ "न्ना" पव आघात
छैक। "हाथी" "माछी"। ए शिद्ध सभमे पहिल ग्वक "हा" एर "मा" पव आघात
छैक।

२) तीन रर्ष रँना एहन शिद्ध जगमे तीनू नघू रर्ष हो- एहन शिद्धमे अंतसँ
दोसव रर्ष पव आघात पड़ैत छैक। जेना "तखन", "अगहन"। एम्हो "ख"
आ "ह" पव आघात छैक। जँ एक या एकसँ रँसी दीर्घ हूअ तँ पहिल दीर्घ



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानकीह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

पव आघात पड़ित छैक । जेना "उसावा"मे "उ" पव आघात छैक । "रैतासा"
मे "ता" पव आघात छैक ।

३) चाबि रर्ष रैना शिद्धमे अंतर्सँ दोसव रर्ष पव आघात पड़ित छैक । उदाहरण
नेन "लिनसव" मे "स" पव आघात छैक, "अगहन" मे "ह" रर्ष पव छैक । जँ
चाबि रर्ष रैना ओहन शिद्ध जगमे दीर्घ सेहो छैक तकर आघात उपरमे देन
गेन खाने निश्चय जकाँ अछि । जेना "उचावण" मे चा पव आघात छैक ।

अन मिला क२ एकसँ चाबि रर्ष धविक शिद्ध नेन एकै वंगक निश्चय अछि ।

३) पाँच रर्ष रैना शिद्धमे अंतर्सँ तेसव रर्ष पव होगत छैक चाहे ओ नघू हो
की दीर्घ । मने पाँच रर्षमे आघात सदिखन रीच रैना रर्ष पव पड़ित छैक ।
उदाहरण नेन "देखनहक" मे अंतर्सँ तेसव रर्ष "न" पव आघात छैक, तेनाहिने
"कमवसावि" मे "व" पव आघात छैक, "कनपातव" मे "पा" पव आघात छैक ।

४) छह आ छहसँ रैसी रर्ष रैना शिद्धमे दू ठाम आघात पड़ित छैक । शिद्धक
अंतर्सँ दोसव रर्ष पव आ अंतर्सँ चाबिम रर्ष पव चाहे ओ नघू हूअ की दीर्घ ।
एँठाम ओहो मोन बाथू जे शिद्धक अंतर्सँ दोसव रर्ष पव पड़न आघात रैसी
कठोर हूदा चाबिम स्थान पव पड़न आघात मन्द होगत अछि ।

* रिभजि रैना शिद्धमे आघात निधवित कवरौक नेन रिभजिकेँ हठा क२ गणना
कर । जेना की "पातक" शिद्धमे आघात गणना "त" रर्षसँ शुरू हएत ने कि
अंतिम रर्ष "क" सँ । सब रिभजि जूँठन शिद्ध नेन ओहो मोन बाथू ।

आरँ कने आघात रैना शिद्धक काहिया देखी । एहन ठाम ओ मोन बाथू जे
आघात रैना स्थान आ रर्षक मात्रा समान बहए । उदाहरण नेन "घव" आ "मजूव"
दुनूमे दोसव स्थान पव आघात छैक हूदा मात्रा अलग-अलग छैक, तँए ओ दुनू
एक-दोसवक काहिया ले रनि सकैए । तँ "घव" शिद्धक काहिया नेन "रैव",
"तव", "हव", "लिनसव" आदि उपहाज बहत । आ "मजूव" नेन "मयूव",
"हजूव" आदि उपहाज बहत । खानो-खान आघात रैना शिद्धक काहिया नेन ओहो
निश्चय रूमू । एँठाम हम हेब मोन पाड़ ी जे काहियाक निधविण खानी मतनामे
होगत छैक आ रौकी शैबमे ओकव पानन । तँए जँ केओ मतनामे रिभजि
रैना शिद्धकेँ "हूनक" आ "हाथक" काहिया नेताह तँ सरी हएत आ रौदरौकी
शैबमे "अक" काहियाक प्रयोग हेतैक । हूदा जँ केओ गोठे मतनामे



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानुसिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

"हूनक" आ "अडहनक" नेनक आ तकवा रौदक शैवमे "हाथक" प्रयोग कबत
तँ ओ बिहून गनत हएत । "हूनक" आ "अडहनक" रौद आन शैव नेन
काहिया "ूनक" होएरौक चाही ।

आर कने "बेह" रौना काहिया पब रिचाव कबी । बेह "ब" रौक एकठा कप
अडि जे "ब" मने आवा "ब" मानन जागत अडि । मैथिलीमे बेह आ ओकव
पूर्ण कप (ब रौ) दू चनेत अडि । जेना-

मर्द----- मवद

रौथा-----रौवथा

रौथ-----रौवथ

चाचा-----चवचा

उपवका चाविठा शिद्ध देखनासँ ए रौमागत अडि जे बेहक पूर्ण कप आ बेह
रौना शिद्धक उचावामे कनेक अंतव भन् जागत छै । संगे-संग किछु शिद्ध
अपन बेहकेँ छोडि पूर्ण ब केव स्रकपमे अरैत अडि । तँए काहियाक
संरधमे हमब ए रिचाव अडि जे जँ शिद्ध बेह हाड ह्थए ह्दा रौना मात्राक
ह्थए तँ समान स्रब आ उचावक प्रयोग कबी । जेना मनि निथ अहाँ मतनामे
" मर्द " आ "पर्द" काहिया नेनहँ आ तकवा रौदक शैवमे " मवद" काहियाक
प्रयोग हमबा हिसारै गनत हएत कावण स्रपु कपे "गर्द" आ "पर्द" शिद्धक
उचावण "मवद" शिद्धसँ अलग अडि । तेनाहिने मतनामे "मर्द" आ "मवद" शिद्धक
काहिया गनत हएत । "मवद" शिद्धक रौद "रौदद", "शैवद", "दवद" आदि
काहिया ठीक बहत । ह्दा जँ कोनो एहन शिद्ध जकब अन्तमे बेह ह्थए आ
संगे-संग ओ शिद्ध मात्रा रौना ह्थए तँ निथम रौदनि जेते । मतनर जे शागव
तखन रौना कोनो दिक्कतक काहिया रौना सकैत छथि । कहरौक मतनर जे जँ
अहाँ मतनाक पतिन पाँतिमे काहिया "गर्द" नेनहँ आ तकवा रौद आन काहिया
रौथा या रौवथा नेनहँ तँ रौनहन सही हएत । आर अहाँ सभ रौनि सकैत छिँ
जे कोनो मतनामे "रौथ" आ "कवचा" रौनि सकैत अडि । स्रब सामा, सिनाद
दोष आ गता दोष रौना प्रसंग सभ आने काहिया जकाँ अन्तमे नागू हएत ।
तेनाहिने ए मोन बाथू जे जँ बेह शिद्धकेँ अंत छोडि (शुकमे रा रौचमे
कतौ) छैक तँ संस्कृतक शिद्धमे तँ बेह बहत ह्दा रिदेशेज थाम कन् अवरौ-
हवासी आ उर्दू रौना शिद्धमे "ब" भन् जागत अडि । जेना कि परतकेँ "



विदेह ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२)

मासिक **ISSN 2229-547X VIDEHA**

पवरत" ले निखन जा सकैए झुदा शेरितकेँ "शिवरत" जकब नीथि सकैत छी ।
एँगामे जा मोन बाथू परत आ शिवरत दनु एक दोसबाक काहिया भन् सकैए ।

काहियाक संरंधमे एकठा गप्प आब- काहियामे र्पा "ब" केव उँचावणी "ड" क
रवारव मानू संगहि-संग "स", "शे" आ "ष" केव उँचावणी सेहो समान मानू ।
जगठाम "ष"क उँचावणी "थ" जकाँ हएत ततए पूर्ण "थ" काहियाक कपमे आरि
सकैत छि । जँ "ठ" अक्षर शिद्धक मुकमे छैक तँ ओकव उँचावणी "ठ" जकाँ
होगत छैक झुदा तकवा रौद ओकव उँचावणी "बह" जकाँ छैक । आ हमवा
रिचार काहियामे "ठ", "ब" एरँ "ड" समान छि । उँदाहवणी नेन "ठाठ"क
काहिया "रिचाव", "ह्वाड" आदि भन् सकैत छि । केथनो कान "त्र" केव नेथ
कप "तव" आ "म्ह" केव नेथ कप "ड" अरैत छि । शागव उपवके निश्चमक
हिसारै एकव काहिया रँनारिथि ।

आरँ कने शुरुआत रँना प्रश्न पव चली । पहिन प्रश्न छन जे जँ कोनो मतनामे
"छोडए" आ "होडए" काहिया ह्थए तँ रौद रँना शैवमे काहिया की हेते ।
उँतव स्पष्ट छि रौद रँकी शैवमे काहिया "ओडए" रा "ओवए" हेरँक चली ।
ले तँ गजन गनत भन् जाएत । संगहि-संग दोसव प्रश्न छन जे जँ "छोडए"
आ "होडए" क रौद "जाए" ह्थए तँ सही हएत की गनत । एकरो उँतव स्पष्ट
छि- जाए क उँचावणी "ओडए" रा "ओवए" सँ ले मिनैत छि तँए "जाए"
काहिया "छोडए" आ "होडए" क रौद गनत हएत ।

आरँ कने एक रँव काहियामे जाता दोष देखन जाए---

जाता दोष काहियामे रँत रँडका दोष मानन जागत छै । एँपव कने रिचाव
कन् नी । एकवा चाबि भागमे देखू----

१) जाता दोष मात्र मतनामे होगत छै ।

२) जँ मतनाक दनु काहिया मात्रा हाऊ ह्थए रा प्रत्यय रँनन हो रा सन्धि-
रँनन शिद्ध तँ दनु काहियाक मात्रा ठी दिओ, रा प्रत्यय ठी दिओ रा सन्धि-
रँनन कन् दिओ । आरँ जा देखू जे मात्रा, प्रत्यय रा रिद्धक रौद जे पहिन शिद्ध रँचन
शिद्ध छै से सार्थक छै की निवर्थक । जँ दनुमेसँ एँकोठा निवर्थक छि तँ चिन्ता
कवरँक गप्प ले कावण एहन स्थितिमे जाता दोष ले बहत ।



बिदेह ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२)

मानुषीह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

३) जौ दनू शिद्ध (मात्रा, प्रत्यय हठेनाक रौद रा रिद्धदक रौद) सार्थक छै आ ओग रौदन पहिन सार्थक शिद्धक आपसमे काहिया रैन बहन छै तखन मात्रा रा प्रत्यय रा सञ्चि रौना शिद्ध सेहो काहिया रैनत आ एमे ज्ञाता दोष ले हएत ।

४) झदा जौ दनू शिद्ध (मात्रा, प्रत्यय हठेनाक रौद रा रिद्धदक रौद) सार्थक छै आ ओग रौदन पहिन सार्थक शिद्धक आपसमे काहिया ले रैन बहन छै तखन मात्रा रा प्रत्यय रा सञ्चि रौना शिद्ध सेहो काहिया ले रैनत आ एमे ज्ञाता दोष हएत ।

आरौ कले उदाहरणसँ देखी ए प्रकवणक- मानू जे मतनामे "रिमावी" आ "आदमी" काहिया छै । तँ आरौ जौ दनूक मात्रा हठेरौ तँ फ़मशे: " रिमाव " आ " आदम " शिद्ध रौटे छै जे की सार्थक छै । झदा "रिमाव" आ " आदम" एक दोसबाक काहिया ले रैन सकैए । तँए मतनामे "रिमावी" एर " आदमी" काहिया ले रैनत । उर्दूमे जौ केओ एहन काहिया रैनरौ छथि तँ ओकबा ज्ञाता दोषसँ प्रस्तु मानन जागत छै । एकठौ दोसब उदाहरण निख-- दोस्तु आ दुश्मनी मतनामे काहिया ले रैन सकैए । कावण रएह मात्रा हठेनाक रौद दोस्तु आ दुश्मन शिद्ध रौटे छै जे की दनू सार्थक छै आ दनू एक दोसबाक काहिया ले रैन छै तँए दोस्तु आ दुश्मनी मतनामे काहिया ले रैन सकैए ।

मैथिलीमे प्रत्यय रौना शिद्ध सग सेहो एना कएन जा सकैत छि । प्रत्यय रौना शिद्धक किछ उदाहरण देखू- धन शिद्धमे गब प्रत्यय नगेनासँ नर शिद्ध रैन छै "धनगब" । तेनाहि ते मोन शिद्धमे गब प्रत्यय नगेनासँ "मनगब" शिद्ध रैन छै (किछ गोठेँ मोनगब सेहो निथे छथि) । एनाहि ते आन प्रत्ययसँ रहुत बास नर शिद्ध रैन छै ।

आरौ कले ए नर शिद्धक काहियापब आउ- जौ धनगब शिद्धक काहिया मनगब रैनरौ तँ ज्ञाता दोष ले बहते । कावण जौ ए दनू नर शिद्धमे सँ गब प्रत्यय हठेरौ तँ फ़मशे: धन आ मन रौटे छै आ दनूमे काहिया सेहो रैन बहन छै (एठाम ज मोन बाखू जे प्रत्यय हठेनाक रौद धन शिद्ध मिनाएन जेते ले की धन, तेनाहि ते मन मिनाएन जेते ले की मोन) ।

आरौ जौ मतनामे धनगब सगे दुषगब आरौ तँ देखू की हेते । प्रत्यय हठेनाक रौद फ़मशे: धन आ दुष रौटे छै झदा दनू एक-दोसबाक काहिया ले रैन बहन छै तँए धनगब आ दुषगब एक-दोसबाक काहिया ले रैन बहन छि ।

आन-आन प्रत्यय रा सञ्चि रा मात्रा नैन एहले सन रूमन जाए ।



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मासिक **ISSN 2229-547X VIDEHA**

आरि जौ रिमावी संग उधावी आरि तौ देखु की हेटे । रिमाव एर उधाव दू शिद्ध
(मात्रा, प्रत्यय हठेनाक रौद रा रिद्धदक रौद) सार्थक छै आ संगे संग दू एक
दोसबक काहिया रनि बहन छै तौ रिमावी आ उधावी सेहो एक दोसबक
काहिया रनत आ एमे गता दोष ले बहते ।

आरि जौ रिमावी संग जिनगी नैरै तौ देखु की हेटे । रिमाव एर जिनग (मात्रा,
प्रत्यय हठेनाक रौद रा रिद्धदक रौद) रिमाव शिद्ध सार्थक छै ह्मदा जिनग शिद्ध
निबर्थक तौ रिमावी आ जिनगी सेहो एक दोसबक काहिया रनि सकैए । किछ
शिद्ध एहन होगत छै जकवा पब मात्रा बहते छै तखन अनग मतनर होगत छै
आ मात्रा हठेनाक रौद दोसबे मतनर रनि जागत छै जेना "कावी" तौ एकब
मतनर भेलै वग कावी । ह्मदा जौ एकब मात्रा हठा देरै तौ रचते "काव" जे
की गाडीक संदर्भमे सार्थक शिद्ध तौ छै ह्मदा मतनर दोसब छै । तौ अन्र
काहियामे गता दोष ले बहत । आन शिद्ध एनाहिते ताकन जा सकैए । आरि
केउ कहि सकै छथि जे रिमाव आ रिमावी शिद्ध अनग-अनग छै ह्मदा हमब
कहर जे रिमाव आ रिमावी दूक अर्थ एकदोसबामे निहित छै ह्मदा कावी आ
काव शिद्धमे से ले छै ।

अन्तु ग भेल गता दोष प्रकाश ।

ई बचनाव अन मंतब ggajendra@videha.com पब पठाउ ।



जगदानन्द ना 'मन्त्र', ग्राम पोस्ट - हविप्रब डीहठेन, मधुबनी



विदेह ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२)

मासिक संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

१. लोठीक आद

आङ्ग दस रथक बाद कियोक पाछन छोठकी काकीक आँगना एलेह । पढ़ो
पबथ गरीरक घब आँगना किक एता । छोठकी काकी ओनाहिता गरीर मसोमात
एहनठाम कि सैरसकोब भेठक उम्मीद ।
पाढ़ो कैं तँ हुनक रथिनक रैठो । ओकवा ओ राबह रथ पहीने देखने
बहथि आ आरि ओ सवह रथक पाँच हाथक जरीन भए गेन अछि ।
आरि ते अपन मोसी कैं पएव छु कए गोब नगनक ।
"कैं रौआ चिन्हनहुँ नहि ? "
"मोसी ! हम लोठन, आहाँक रथिन मानती कैं रैठो । "
मोसी (छोठकी काकी) दनु हाथे मल सँ लोठन कैं माथ पकैव अपन करेजा सँ
सठा - " चिन्हरौ कोना, मुडने मे पाँच रथक अरस्था मे जे देखनीये से
देखने देखने, आङ्ग कोना आ गरीर मोसीक आङ्गद आरि गेलो । "
लोठन - "मोसी मधुरनी मे हमर परीक्षाक सैठेव पवन छन आङ्ग परीक्षा थमे
तेन तँ मोन मे तेन मोसीक घब सोबाठ तँ एहिठाम सँ कनिके दूब
छेक भेठे कए आरि "
मोसी - " जूग- जूग जरीन लेला, एहि दुथिया मोसीक आङ्गद तँ बहने ।
आ मानती केहन ? ओमाजी केहन ? "
लोठन - "सर कियो एकदम हस्त किनास, दनादन, ओ सर आरि छोक पहिने
किछ नास्ता कबाड, मधुरनी सँ सोबाठ पएने अरैत-अरैत रहुँ भूथ नागि गेन
। "
स्निते मातव मोसीक छाती मे धक सँ उठन, ओ मने- मन सोचए नगनि -
लेला कैं की खुराड ? घब मे किछो नहि अपने तँ मागि रैसए क गजवा
कए ले छी एकव नास्ता भोजनक अरस्था कतए सँ होएत । "
हुनक सोच कैं रिचे मे तोरैत लोठन खेब सँ राजन - " मोसी जन्दी रहुँ
भूथ नागन । "
अपना कैं सभारैत मोसी - "हाँ एखने हम भात, दानि, बुजिया, तकआ, नीक सँ
रना कए लेला कैं दे छी, आहाँ कनी रैसू । " आ कहैत मोसी भसा घब दिस
रिदा भेली, जहन की हुनका रूमन जे घब मे किछ नहि अछि ।
हुदा हुनका पाँछा-पाँछा लोठन सेहो आरि - " नहि मोसी एतेक कान हम नहि
बकरै पाँच रजे मधुरनी सँ राबुरवलीक अन्तीम रैस छे आ चाबि एखने राजि
गेलो । "
मोसी अपन घबक हानत देखि लोठनक गप्पक उतव नहि दए सोचए नगनि -
"आह ! मजबूरी लेला कैं ककियो नेन नहि केह सकै छी । "
एतरी मे लोठन भसा घबक रैठन सर कैं देखि राजन - " एहि रैठन सर मे
सँ जे किछ अछि दए दिए । "
"हे वाम ! " - मोसीक मन कनान, रैठन मे किछ बहक तहन नहि । आङ्ग
हुनक मूह रैद भए गेलैह, रैकोब नगने कैं नगने बहननि । रहुँ सहास सँ



বিদেহ' ১১২ ম অংক ১৭ অগস্ত ২০১২ (বর্ষ ৭ মাস ৭৬ অংক ১১২,

মাসিক পত্রিকা, ISSN 2229-547X VIDEHA

গল্প কেঁ সমঠেত বঁজনী - "নহি রৌখা কিছু নহি ছৌ, হম এথলে বিনা দেবী কেলৈ
বঁনারে ছৌ।"

রোঠন - "নহি নহি মৌসী বঁনারে কেঁ নহি ছৌ, বঁস ছুটি জাএত।" এতরেঁ মে
রোঠনক নজের ঠানহী ঠকনা সঁ সাঁপন কোনো সমান পব পবন। ঋগ্ন জা

ঠকনা উঠা - "হে মৌসী গা কী ?"

মৌসী ঋগ্নক, কি বঁজতি, পল্লী বঁব লেল্লা ঋগ্ন ঋ ওকবা খুদদীক রোঠী খুখাউ
ওহো বাগতে কেঁ বঁবন। বাতি মেঁ একটা খুদদীক রোঠী বঁবনে বহথি, ঋগ্না ঋ
ঋগ্না ঠকনী সঁ সাঁপি বাগথ দেলে বহথি।

রোঠন ওহি রোঠী কেঁ দাঁত সঁ কাটি কএ ঋগ্নত ঋগ্না বঁজন - "এতেক নীক
রোঠী তঁ হম কলীযো খেহু নহি ছনহু, মএ তঁ ঋগ্না ছান্ধী ভাত, দূধ-ভাত,
দূধ-রোঠী, খুখা-খুখা কএ মোল ঘোব ক দেএ। ঋগ্না এতেক স্নাদ তঁ
পল্লী বঁব ভেটে বহন ঋগ্ন।"

মৌসী রোঠনক গল্প ঋ ওকব ঋগ্ন তেজী দেখ বঁজনী - "কক-কক কনী
ঋগ্নারো তঁ ঋগ্নি দেবখ দএ।" গা কহি মৌসী ঋগ্না তাঁকৈ বঁবন এহু - "উহু
তাঁকৈ বঁগনী ঋগ্না ঋগ্না কতৌ বঁহ তহন তঁ ভেটে।"

রোঠন - "বহথ দীযো, এতেক নীক গা মোঠকা রোঠী বঁহ ঋগ্না কেঁ কোন কাজ
। রোঠী তঁ খতম ভএ গেন। মৌসী বঁকব-বঁকব ওকব মুহ তকৈত বহনী।

রোঠন - "ঋগ্না ঋগ্ন হম জাগ ছৌ, ঘব দেখ বেনীযে ফেব মধু বঁনী এনহু তঁ
ঋগ্না বঁগ জবব ঋগ্নে, ঋগ্না হা এহলে নীকগব মোঠকা রোঠী বঁবনে বহব।" গ
কহেত মৌসী কেঁ গোব নাগি রোঠন গোবী জকা বঁহব ঋগ্নি গেন। ঋগ্না বঁহব
এনা বঁদ মৌসীক দয়নীয় হানত দেখি ওকব দনু ঋগ্নি সঁ নোবক ধাব বঁহত
বঁহ।

২. ঋগ্নিম জগহ

ফেলকা। মএ বঁউ কী নাম বখনকে গাম মেঁ কেকরো নহি বঁবন ঋ কীচীত
ওকবা ঋগ্নো ঋগ্না হোএ কী নহি। ও এহি উপনাম সঁ গাম ভবি মেঁ জানব
জাগত ছন। খেতিহব মজদূব ঋগ্না জীৱন ভবি উমীন বঁবুক ছৌবি দোসব
কেঁ খেত পব কাজ নহি কএনক। তুনকে জমীন পব জনমন ঋ তুনক এব
তুনকে পবিবাব কেঁ জীৱন ভবি সেরা কহেত এহি সঁসাব সঁ ঋগ্ন পাখিক শিবী
ছৌবি বঁদা ভএ গেন। জেকব জন্ম ভেজেক ওকব মূন্ নিশ্চিত ছৈক এহি সন
কেঁ মোল বাখি ফেলকাক সঁগি সঁ ওকব ঋগ্নিম ফিয়াক তৈযাবী মেঁ নাগি গেন

।
উমীন বঁবু নোত পুরৈ বঁবন দোসব গাম গেন বহথি। গামক সীমা মেঁ পএব
বাখিতে মাতিব কএকরো সঁ ফেলকাক মূন্ক সঁমাচাব ভেটে গেনেহে। সঁনি দূখী
মোনে ঘব দিস ডেগ সঁঠকাবনেহে। কিছু দূব এনা বঁদ বস্ত্র মেঁ তুনকা



विदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक ISSN 2229-547X VIDEHA

हेकनाक शेरयात्राक दर्शन भेलैत । हेकनाक समाधि सभ हुनका देख ठामैक
गेल । उमिन राँव चले जा कए हेकनाक साँपन मूठ उघाबि ओकवा मूठ
देखना आ नम आँख सँ हेकनाक रैठौ सँ पृष्ठनथि - "अग्निदाह केँ राँव
कतए छैक ।"

" ठूठी गाछी मेँ मानीक । "

" दूब रूँबि कहिके, कनीक हमरो आँखेक अंतजाव तँ करै जेतख, जीवन
भवि हमब जमीन पब काज केनक आ आँख मूँगना बाद ठूठी गाछी.... । चनख
हमब कऽनम चनख, हमब कऽनम मेँ नहि जगठ केँ कमी अछि आ नहि गाछक
ओतए दूक राँवसा छैक " आ कहैत उमिनराँव आँगू-आँगू आ सभ हुनक पाछ-
पाछ हुनकब कऽनम दीस रिदा भए गेल ।

ई बचनाव अपन मंतब ggajendra@videha.com पब पठाउ ।



किनास दास, पत्रकार, जनकपुर



বিদেহ' ১১২ ম অংক ১৭ অগস্ট ২০১২ (বর্ষ ৭ মাস ৭৬ অংক ১১২,

মানুস্কৃত সংস্করণ, ISSN 2229-547X VIDEHA

'ঋগ্না স্মৃথন ঘবমে পানি'

'ঋগ্না স্মৃথন, ঘবমে পানি, ভবি রখি উপভু পানি ।' একব মতনর স্পষ্ট কপে
সভ কিও বৃষি গেন হোএর জে বর্ষা হোগতে নগবমে বহযরানা সভকে কতেক
স্মৃথ আ কতেক ঋগ্না ঋগ্নেত ঋগ্নি । ঋগ্নদক মতনর সডক পব গগা জহ্ননা
জেকা পানিক ধাব বহেত বহেত ঋগ্নি আ লোক সভ মোঠবসাগকিন, সাগকিন,
জীপকাব চনা-চনা কহ ঋগ্নদ লেত বহেত ঋগ্নি । ওতরে লে, লৌখা বৃচী সভ
পানিক ঋগ্নদ ঋগ্নব বেসীএ লেত বহেত ঋগ্নি । ও সভ ঋগ্ন দর্দশা রিসবি
জাগত ঋগ্নি, পানিমে খেনরীক ক্ষণমে । ওতরে কহা, বৃক্ষজীরা সভ সডকক
দুদু কাত বঁড় ঋগ্নদ পূরক ঠাঠ. পানিক ঋগ্নদ ওঠরৈত বহেত ঋগ্নি ।
দেখরীমে ঋগ্নেত ঋগ্নি, সডক কাতমে বহন দোকান সভমে পানি ঘূসন ঋগ্নি ।
কোনো দোকানদার সমান সভ নিচা-উপব কবএমে রাস্তা নজবি ঋগ্নেত ভুখি
তঁ কোনো পানি উপভুত-উপভুত ঋগ্নসিহাত ভেন বহেত ভুখি । ওগ সমযমে
ও দৃষ্টকৈ কতেকো গোঠে মলোবজ্ঞনকৈ কপমে লেতি ভুখি তঁ কতেকো গোঠে দুখ
রাজ কলেত ভুখি । ওনা বর্ষা বঁড় ভেনাক বঁড় দু-চাবি ঘাঠামে সডকক পানি
বঁহি নদীমে চনিএ জাগত ঋগ্নি । হুদা ঘবমে পেসন পানি একটা পোখবিক
খাকাব নহ কহ দু চাবি দিন ধবি ঘব রিহীন কহ দৈত ঋগ্নি । জিনকব
রীস/পচীস বর্ষ পূবান ঘব ঋগ্নি, তুনকা ঘব বহিতো গাম ঘবসঁ বৈকাব জীরন বহয
নেন বাধা কহ দৈত ঋগ্নি । উপবসঁ বর্ষা আ নিচা ঘবমে পোখবি জকা পানি ।
আখিব সোচিয়ো একব দোষী কে ভুখি ? নগবমে বহযরানা লোক বা নগব
রিকাসক সঙ্ঘক্ষমে সোচএরানা বৃক্ষজীরা, কর্মচারী ঋগ্নরা লেপান সবকাব ? কোনো
নগব রিকাসক নেন একটা কানুন হোগত ঋগ্নি । আ ওগ কানুনক দায়বামে বহি
কহ রিকাস কবরীক দায়িত্ব সভ গোঠেকৈ হোগত ঋগ্নি । হুদা এহেন প্রাধান
জনকপূবমে লে ঋগ্নি । নহিয়ে ঋগ্নন ধবি ভুলে । একব নতীজা ঋগ্নি 'ঋগ্না
স্মৃথন ঘবমে পানি' । প্রহক বর্ষ নয়া ঘব বঁলেত ঋগ্নি । পূবনকা ঘব সঁ দু
চাবি ফিটে উপব । নয়া সডক বঁলেত ঋগ্নি এক দু ফিটে উপব । এহলে যদি
বৈববৈব হোগত বহলৈক তঁ নগব ভিতব বহএরনা কহিয়ো শেহবক ঋগ্নভূতি
নহিএ কহ সকেত ঋগ্নি । ঘব নিমণিক নেন ঘবক ডুঁচাগ, সডক উচাগক
মাপদন্ড নারী ঠা পডতে । ওতরে লে ঋগ্ন বঁহযরানা ঘব শেহবক ঋগ্নকপ
হোএরীক চাহী তগপব সভ গোঠেকৈ বিচাব কবএ পডতেক । লে তঁ জহিনাক
তহিনা । গ তঁ বর্ষক সমস্যা ভেন । গর্মীক সমস্যা সেহো কিডু কম লে ঋগ্নি ।
সডকসঁ ঋগ্নি উগলৈত বহেত ঋগ্নি । রাঠমে চনরীক ককরো হিম্মত লে হোগত
ঋগ্নি । ওতরে কহা জনকপূবক প্রায়: সভ কনক পানি সেহো স্মৃথা জাগত
ঋগ্নি । জনকপূব ধার্মিক পর্যটকীয় স্থন মাত্র লে ঋগ্নি, গী একটা মিথিনাক
বাজধানী সেহো ঋগ্নি । ধর্ম সঙ্কৃতি, কনা, ভেষভূষা আ মাতা জানকীক জন্ম



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानुसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

सुन । किन्तु शेरवक जे संवचना होएरौक चाली, बिकासक गति आ सोच होएरौक चाली से कोनो दूर पाछ अछि । जनकपुरमे आरि क२ माता जानकीक दर्शन कएना सँ पर्यटक मात्र धन-धन ले रहत । पर्यटक नैन पर्यटकीय रातावणकेँ रैनारै पडते । पर्यटकक नैन मनोवङ्गनाके, दर्शनिक, घूमखिब कवयराना शुद्ध रातारवण होएरौक चाली । पर्यटक सब कोनो समय, मौसम, दिन, महिनामे आरि सकैत छथि । ह्रदा सोचियौ यदि पर्यटक छैत रैशाखक कडा धूपमे आरि जाँ तँ ह्रनका सभक नैन कोनो पार्किङ्ग, आनन्द कवयराना सुन, घूमखिब कवयराना रौठघाट ले अछि । कडा धूपमे एक ठाम सँ दोसब ठाम ले आरि जा सकैत छी । सडकपब नाक ह्रह कपडासँ माँपि क२ चनए पडैत छैक । साँउन भादरँमे पर्यटक आएन तँ ले नाना आ ले सडकक पता नगा सकैत अछि । सब गोठेकेँ जनकपुरक रात रँमन अछि ह्रदा सभक चुप्पी प्रश्न चिन्ह ठाठ. क२ दैत अछि । जनकपुरक रूझिजोरी सभ जनकपुरक शेरवीकवण आ धार्मिक पर्यटकीय सुन रैनरीक नैन कतए हेबा गेन छथि । रिचाव रिमर्श आ बिकास दिस अग्रसब होरँ नैन ह्रनका सभकेँ कोन गेठबीमे राहि देन गेन अछि से ले खुनि बहन अछि । एकठा कहारत छैक 'आरथकता अरिष्ठावक देन होगत अछि ।' तँ यदि जनकपुरक बिकासक आरथकता रूमागत अछि तँ जनताकेँ सडकपब आरहे पडते । ले तँ 'अंगना सुथन, घबमे पानि, भवि रँवथा उपछ पानि ।'

ई बचनपब अपन मंतब ggajendra@videha.com पब पठाउ ।



ह्रणी कामत

१

नाटक

50



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मासिक संस्करण, ISSN 2229-547X VIDEHA

अधिविभाग

प्रथम दृष्ट

गंगा- रैडूआ... ..रैडूआ, सुतन छलक की, देखलक रौनु दवरैजा पव
रैजलै छह ।

शैकव- कि, आ..छ छ छ... ।

गंगा- कि भेलह । एना किअ कबहै छलक । माय गे, माय हो, देहे
तुँ सबकैत छह । रैडूआ आँखि खोलह, (कदन स्रवमे) हयो
सुले छिई, दोड़ू यो, देखियो रैडूआ कइ कि भेल । यो,
आँखि ताँखि उनठेले छै यो, जन्दी आँउ ले ।

(बामाक धोती स्रवमेत आँगनमे प्रवेश)

बामा- एना चिकवनाग भोकवनागसँ काम ले चनत । जाड दोड
कइ गोसाँगाँ घबसँ गंगाजन लेने आँउ ।

(गंगा दोड कइ जागत अछि आ गंगाजनक डिब्री लेने अछि आ कलेत-
कलेत कहैत छथि ।)

गंगा- हे कानी माग, हमबा कोणक नाज बाखरँ । हमब नानकै ठीक
कगव दिख । हम सहि कइ समि देरँ ।

बामा- पहिले गंगाजन नाँउ ले तरँ कोरँना-पाती करैत बहरँ । (बामा
अपन पनोरै हाथसँ सँठैक कइ गंगाजनक डिब्री छीन लेत
अछि आ शै'कवक उपर गंगाजन छीठ हनकव झँ'ह रएह
जनसँ धोण दैत अछि ।)

बामा- रैडूआ उठह, केना नगे छह आरँ ।

शै'कव- रौनुजी, हमब माथा ददसँ फाँटन जागत अछि आ जाड सेहो
होगत अछि ।



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मासिक संस्कृत, ISSN 2229-547X VIDEHA

बामा- अछा लेँ अ कस्यन ठुठि क२ सुगत बह२, कनिकरौँ कानमे सभ ठिक
भ२ जेत२ । येँ सुने छिँ शैकबक माय ।

गंगा- कि कहै छिँ ।

बामा- रँडुआक माथपव पीवी पवहक भूत नगाँ आ अकवा अवाम कब२
दियो ।

पठाम्फेप

दोसब दृष्ट

(पति-पत्नी अपन कस्यमे रँठोक हानत पव रिचाव रिमर्श करैत ।)

गंगा- कि भेल, किअ अहाँ कस्मिँ छुप छिँ ? कि कोनो अभास भ२
बहन अछि ? कछु ने, केँ भगडाही केने छुग । एक रँव
अहाँ नाम कहि दिअ, अथने मोठा पकडि पौठा निकानि
देरै आ घिसियारैत पूवा गाम गुँघरै । सँगखोडकी
रँठेखोडकी सभ ककरो नीक देखै नेन लेँ चाहि छुग ।

बामा- (जोबसँ) रँद कब अपन सलनबायननक कथा । अ ककरो केनहा
लेँ अपने घबक गोसाँग अछि । आग तक ककरो एहेन
रौंखाव देखने बहिँ । अपन देहमे अतक आगि देरिये
बथैत अछि । जकब हमबार्स

कोनो गनती भेल जे हमबा पव मगया तमसा गेनखिन ।
हमबा हिनका शाँत करै नेन गृहाव नगरैगये पडत ।

गंगा- अहाँ तँ अपने भगत छी । कोनका दिन निक अछि, कस्मिये
रँसकी रँठाँड । हम जाग छी, पूजाक सामग्री जूठै नेन ।

(गंगाक प्रश्न होगत अछि आ बामा गम्भीर सोचमे डूब
बैत अछि ।)



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,
मासिक संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

पठामेप

तेसब दूथ

(एगो दोबामे पूजा सामग्री एकठ्ठा करि गंगा आ शै'कबक आगमन, हुनके पाछु
दू-चांगव नोकनी सेहो अरैत छि ।)

गंगा- रैड आ रौनु आरै छु, तारै तू पूजा कब । आ हुन अक्षत
छटा कइ धूप देखरै ।

शैकब- (हुन जन चठरैत कहैत छथि) आरै की कबर ?

गंगा- अतइ कन जोगड रैतू ।

(बामक संगे चाबि नोग जे ठोन आ मागन नैन छि, हुनक प्रवेश ।)

बामा- शैकब माय सब तैयारी कइ नैन ? गंगाजन संगेमे बाखन
बहरै ।

(बामा गोगांग निपेत छि आ हुन अक्षत छटा कइ माँक प्रार्थना कब नगैत
छि । चाक नोकनी डाना रिचमे बथैत माँक गृहाव नगरैत छि आ ठोन
मागन सेहो रैजैत छि ।)

चाक नोकनी- तोहरे दूखारे मगया हम

अजी नगैनिग छे२२२२२२२२ छे२२२२२२२

रौन जय गंगे,

रौन जय गंगे,

रौन जय गंगे ।



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मासिक **ISSN 2229-547X VIDEHA**

एगो ग्रामीण- हुनका रैठौ कइ देहमे कानी समैन छग, कहे छग कि जानक
रैदने जान नग देरौली तँ अकवा भुज कथ खेरेड।
अथन रएह रैगन दैत अछि, ओकरे भिड छिई।

बघनाथ- कहिया तक अ अधरिग्रास बहत अहि गाममे। चनू चनि कइ देखै
छी।

(बामाक घरमे बघनाथक आगमन)

बघनाथ- कारी, कतइ अछि रैडआ, देखू।

गंगा- बघनाथ रैडआ, आगरै गेनहक सहवस। अए, देखहक ले आग
छइ सात दिन भइ गेलैए, आँख नग खोलै छग। जाधवि
रैगन नग देरैग, नग छोडथिन मगया।

(बघनाथ शै'कवक नङ्क देखैत आ सिब पब हाथ बाथि आँख देखैत कहैत
छथि।)

बघनाथ- कारी अहाँ सभ अपन मूर्खताक कावणी अकवा जानसँ मागव देरैग।
अकवा दिमागी रूखाव भेल अछि। अगव गनाजमे देव
कवरे तँ रैठौ कतौ नग मिनत।

बामा- रैसी तँ गर्गनिस नग रतिया, अ कोनो रूखाव नग देरीक केनहा
छिई, हमवा अपन काज कवइ दे।

बघनाथ- हो कक्का, एगो रातक जराँ तँ सभ ग्रामीण मिन क दए। तोवा
दूगो पुत्र छइ, एगो रिमाव छइ तँ कि तँ एगो पुत्रक जान
नइ कइ दोसब पुत्रक जान रैछेरैहक, नग ले। तँ खेब
माँ कानी अ कोनो कवथिन। हुनका नेन तँ अहि संसारमे
बैठैना हव जीव माँक संतान छी। खेब ओ अ कोनो
कवथिन। अधरिग्रासक चादवमे नग निपठन बहइ।
जागइइइइइइइइइइइइइइइइइ आरौ तँ जागइ।

बामा- तँ आग हमव आँख खोजन देनहक। चनइ रैडआकेँ अप्पतान
नइ चनी।



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संकेत **ISSN 2229-547X VIDEHA**

“जानक रैदने जान देनाग

अछि ३ अर्धरिश्तासक रौगन

कवि पवन हमसभ ३ कि

नग नेरै आरै ककरो प्राण ।

गति ।

२

बिहनि कथा

ठूठन मन

एगो जान डन हमबा संगे, ९ महिनाक सुख-दुखक संगी । अनेकानेक सपना
हमब, अनेक सरानक जरारै डन । रैत थुँ बहए हमब पबिराब । बहै
गंतजाब सरैक नयनमे कि कहिया ३ मास थमे हएत आ ग'जत किनकारी
आंगनमे । आग ओ गंतजाब थमे भेल । हम एगो मासूमकेँ जन्म देलौ, हम
अपन अशिकेँ ई संसारमे आनलौ । हमबा नेन ओ ले रैठौ डन ले रैठौ । रैस
हमब सतति डन, हमब अबमान, हमब सपना, हमब भरिषा डन । पब कोण ले
रूमनक हमब ३ आशि,

करनक कि दुनियामे आँखि थोलेसँ पहिले ओ आँखि मृगन नेन डन । हम
संतोष कएब नेलौ, ३ ले रूमनौ कि रैठौक नानचमे ओ रैठौकेँ मागब
देननि । जे हाथ ओग मासूमक गना पब डन ओ एक रैब ले कापन, ओकब
कान अकब कदनकेँ ले सुननक । ३ हमबे ठौ ले रैत नारीक कथा छी । हम
अरना ले पब ३ समाज आ

अपनारकेँ आग अरना रैनै गेन छी, जरतक हम जूँ सहेत बहै छी तरतक
हम पबिराग, शांति आ ममताक मूर्ति छी । जर ओकब जूँकेँ आग खबा उतरै



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मासिक संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

छी तँ हम अनङ्कनी आ कर्कनी छी । आखिब हमछुँ ई संसारक गावीक एगो
पहिया छी,

अगब एगो पहिया निकनि जएत तँ असगब कतेक दूर तक अहाँ नै संसारकेँ
नह जा सकरौं ।

कहिया तक रैठीक रैनी चठरैत बहरै आ मायक कनेजाकेँ डली-डली करैत
बहरै ।

ई बनावब अपन मंतब ggajendra@videha.com पब पठाउ ।



बैबाम साह

बिस्मृत होखत हमब लोक संस्कृति

काँक खवाम, झक चठकनी, हाथसँ निखन कोहरब, रिखलक गीत, मोहरब-
समदाउन, हगुआक जोगीबा, भोवका पवाती, रैठनगनी, डोमकच, जठे-जठौन,
शोमा-चक्रेरी, भोगेत, नचारी, अन्हा डुदन, ब्रैजभान, सीत-रमंत, बाजा-संस्कृत
अमब गाथाक लौठकी, रिभिन्न अध्यात्मिक-समाजिक घटनाक्रमपब आधारित नाटक
आ लौठकी, गामक घुब आ घुब नग होगत पचपती, पचमेडक जनथे, तारापब
तबन तिनकोबक तकथा, कोजगबक मथान, चूड़ १-झबलीक सनेशे, प्रबनीक पात,
ओहब नागन रैनगाडी, जरावी भोज, समूब-भैरवक धाक, पैघक पएब छुरि



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

नेन असीबराद यएह सत तँ मिथिलाक अद्वितीय संस्कार आ संसृति अछि ।
ह्रदा अतुल्य ध्वनिक भौतिकराद आ अधकचवा पश्चिमी संसृतिक समागमक कावर्णे
उपरोक्त विश्व देशी शैर्दक अनेकालेक शैर्द नरका पीठाक नेन अनन्त आव
भू गेन । नरनुविद्या लोकनि ए शैर्दकेँ रिदेशेज रू नि बहन छथि । जौ
किछ पवम्पवागत संसृति अशेषक कपमे रँचनो अछि तँ नर पीठ ी ओकवा
ओछ, घटिया आ हीनताक प्रतीक मानैत छथि । दोसब दिस किछ पवम्पवागत
लोक संसृति आजुक भौतिकरादी ब्यवस्थाक प्रभारमे अपन सरकप रँदनि नर
नाम आ सरकपसँ प्रचलित भू सरयकेँ रिकसित करैलक प्रयास कए बहन
छथि ।

सोहब-समदाँन, जठ-जठैन, पवाती, भगेत, अल्लाक स्थान आँवकेसुद्धा आ
ह्रव भोजपूरी गीत तँ अल्ला-हुँदर, दीनाभद्री, बाजा सकसक अमव गाथा नंग-
धर्ग अपसंसृतिक परिचायक थियेठवसँ रिस्थापित भू गेन, भाँगक गौरी
रिदेशी शिवाँ आ देशी पाँडचमे हेवा गेन, गामक पचायत अतिहासक हिस्सा
रँनि गेन, ह्रगुआक जोगीवा आ जूवशीतनक नचावीपव रँशाथीक भाँड १ भावी
पछा गेन, गामक मेना, हाँ-राँजावक योन संसृतिमे पूर्ण कपेण समारसित
भू अपन अस्तित्व मेठा देनक अछि ।

हमव समाज रिभिन्न अरसवपव अल्ला-हुँदर, ह्रमव ब्रजभान, दीना भद्री, सीत-
रँसतक अमवगाथा देखि आ सुनि सरयकेँ गौवरानरित रँनेत बाजा हविचन्द्रक
सत्यरादी सरकपसँ प्रेवणा लेत छन तँ श्रैणह्रमावक नाँकसँ माँह-पिँह
भक्तिक ज्ञान प्राप्त करैत सरयकेँ श्रैण ह्रमाव रँनरौक प्रयास करैत छन ।

ए बचनपव अपन रँतव ggajendra@videha.com पव पठाँ ।



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,
मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA



जगदीश प्रसाद मंडल

तीनटी बिलि कथा-एकटी कथा

(१) पठेब

किशोरी एठाम रिखाक काज तेतबी सोहो देखनक । पक्का पति पवाया
तेतबी । बाति-दिन पतिक रिचावक सेरा छदैसँ करैत ।

बंग-बंगक पठेब साड़ १ पहिबन देखि नाड़-साड़ करैत पति-ग्रनेतीकेँ तेतबी
करनक -

“हमरो पठेब साड़ १ कीन दिख ? ”

अबकून बयै दूखारे ग्रनेती अबकून शरदक सहावा जैत सोचाए नगन जे जहिना
अनहाव घर साँपे-साँपे होग छै तहिना ले दू गोरे छी । बंगक चमकी देखि
ओ (तेतबी) नदूआएन अछि आ अबकूनक अपनै नदूआएन छी । नदू छी तँ दू
एक बंग । जखन एक बंग छी तखन रीचमे रीधा कथीक । जेहने अपनै पठेब
साड़ १क समरन्धमे जननिहाव, किनिनिहाव छी तेहने ले ओहो अछि । तखन तँ
भेल जे, की पवस छी, तँ हूँसि । तहन कनी नगा कइ देखै । ओना अपन
आँठ-पेठ देखि ग्रनेती सहमन ले । रूमनक जे जहिना ग्रनेतीक शिकाव तहिना
ले नदूक शिकाव होगए । दूक सोलैनी गावठी थोड़ अछि । तछमे
चोरिसो घण्टा संग बहनिहाव नाबीक नशे-नशे ले रूमि तँ ए केकब दोख ।
जहिना कनीसँ ग्रनार छिठैक छिठैक नगैत तहिना चोरिगिया मोती छिठैकरैत
ग्रनेती राजन-



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

“केहने पठेब नेर ? ”

जहिना सुराक्षक आशिये लोक, सब किछ दान करेले तैयार बहेत अछि तहिना
पठेबक आशिये तेतबी भेल । हजारोक झिडमे जहिना प्रेमी प्रेमीकेँ पकड़ि
सठि जागत, तहिना गुरेतीक छंदमे तेतबी सठि गेल । गौदीक रँचचाक
सुरेतीक भाव जहिना गौद लेत तहिना एनिसाएन तेतबी राजन-

“जेहने किशोरीक अंगनामे देखनिई । ”

“एक बगक देखनिई ? ”

“नै, सब बगक बहे । ”

एकठा संगी बहने ले लोक हवागए जौ तगसँ रेसी हवाग तँ केना हवाएत ?
जेतग हवाग नागन तते संगी भेटे जेते । पनौकेँ हवागत देख गुरेती
राजन-

“अहाँक रिचाव ले मानरँ तँ दुनियाँमे केकब रिचाव माने रँना अछि । अहाँकेँ
हाथ पकड़ि अनेले छी तहन रिचाव केना ले मानरँ । अहाँक माँग मानि नेनौ ।
कागजमे लिख नेनौ । जग दिन रँजाव जाएरँ तग दिन किनले आएरँ । खानी
रँजाव जाग घड़ि प्रबजी मोन पाड़ि देरँ अहाँ । अछ्छा एकठा रात बूमन
अछि, ओ साड़ि (पठेवरँना) एक रेब पहिबना रौद खिचन जाग छे से । से
सब दिन कतए खिचरँ ? ”

साड़ि खिचरँ सूनि तेतबीकेँ तवास उपकन । उपकिते पिआससँ राजनि-

“तहन एरँब छोड़ि दिओ । आगू मान अगते कीन देरँ । ”

भाव घुसकेत गुरेती दू जघिपब हाथक शान पिजरेत राजन-

“कछ तँ भना, अछ्छा अही माने पाड़ि दिख जे एतेक उमेबमे अहाँक कोन
गप कहिया कठनौ ? ”



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

केकरो गप अपने ठूँठि जाग छै तँ एमे केकब दोथ । हँ तखन ए रात
जकब भेल छि जे गामक चानि रँदनन । पहिले गाममे चोबकेँ खरिते जए
देखनक सए चोब-चोब हन्ना कबए नगैत डन झुदा अर्थक चक्का तेनेन दिना
पकड़ि लेनक जे सामाजिकता तहस-नहस भँ गेल छि । जहिना बाम-
बारणक रीचक जे तीव चनए आ दस-दस रीस-रीस गर्दिन कठि हरामे
उधियागत एकठाम भँ सठि जागत तहने ले भँ बहन छि ।

(ए कथा, पठैब झरझरी बेब...)

(२) अजाति-

(२)

ग्वक काका, रँडका काका, पट् आ काका, नान काका, भैया काका, दोस काका,
संगी काका सब एकठाम रैस बघ्नाथक गप चलेनि ।

ग्वक काका रँजनाह-

“शैतानक चवथी छि बघ्नाथा । ”

सह माबैत रँडका काका कहनिथि-

“एहने छ तहब एकोठा ले कर-खनदानमे भेल । ”

एकझबही गप देखि दोस काका रँजनाह-

“एना गौ-गौ केने ले हएत ? किड स्पष्ट रिचाव कबए पड़त । ”



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

अपन भाव ठेकेत पढ़् आ काका ठेपकि गेनाह-

“भले दोसक रिचाव छै । नान भाय अही अपन निर्णय सुना दिउ । ”

गर्भित होगत नान काका हेलसना देनथिन-

“बध्नाथ अजाति भइ गेल । ”

(3) कृषिपार

सुभितगव समथ भेले अन्नकून काजक बृद्धि जिनगीकेँ आगू झूँहँ ओहिना समारित
अछि जहिना प्रतिकून भेले रिपरीत दिशामे पढ् झूँहँ समारित अछि । झूँदा
किछ भेद तँ भग्ये जागत अछि । ओ छी कम-रेशीक गणित ।

सामक आठ रैजेत । ओना माघक आठ बाति कहलैत अछि झूँदा से ले साउन-
भादोक आठ सामे कहलैत । आठ घंटी दमकन चना घबपव आरि कमनदेर
गद्गदाएन मने पनी-सुचित्राकेँ कहनि-

“पहिले चाह पिआड, पछाति एकठा गप करै ? ”

जहिना कर्म कइ रचन सदति दलैत बहैत अछि तहिना सुचित्रा चाह रैनरैसँ
पहिले हठ करैत रैजनीह-

“सुनन बहत तँ चाले रैनरै रैव रिचावर, ओना अठ-थूँ मन केने कही चाहो
ने दूगव भइ जाए । ”



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मासिक संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

पनौक रात सुनि कमनदेर सौचमे पड़ि गेलाह । शुभ काजमे अशुभ रात
ओहन कवामात कइ दैत जहिना एकठा छिक्का हाथ कोठक हिसना डनठा-पुनठा
दैत अछि । हो ने हो कही अही गपक धुनिमे चाहक धुनि रिसवि जाथि ।

तखन तँ दिन-भरिक मेहनति तँ मेहनते बहि जाएत, राजन-

“अनेरे कोन मूठ-हसिक हेलिमे पड़ि छी पहिले चाह पिआड़, तखन दुनियाँ-
दाबिक गप-सप हेतए । ”

झुम्की दैत अचित्रा उतब देननि-

“तँए ने पहिले घब-पबिरावक काज निरँठा निख चाहि छी । अही सन प्रकथ हम
थोड़ छी जे भवि दिन डाती भरे खै छी आ गामक लोक हसियाह
कहे । ”

पनौक रात सुनि कमनदेरक मनमे मोक एननि । जहिना ग्रम हरामे सूर्यक
ताप अपन कवामात करैत तहिना एक तँ कमनदेरक मनमे चाहक मोक चढ़न
तएपसँ पनौक झुम्के हसियाह सुनि मोक तेज भइ गेननि, रँजनाह-

“ने अहाँ कहने कठहब हएत आ ने गौआँ कहने रँवहब हएत । कठहब
कठहबे बहते, रँवहब रँवहबे बहते । एक बग आँठा-कमड़ी भेलहि की
हएत ? ”

पतिक रिचावकेँ अँकित अचित्रा रँजनीह-

“अहाँ तमसा गेलौ । तमसाड ने । लोक जे अहाँकेँ हसियाह कहे तेकब
काबणी अछि जे काजक हिसारसँ समए ने दग छिई, घड़ीक हिसारसँ समए द
दग छिई । ”

पनौक रिचावकेँ आँकित अमनदेर दोहड़रैत रँजना-

“कनी हबिछा कइ कहियो ? ”



विदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

सूचिका - “कैकरो खेत पठैरैक जे समए दग छिई ओ खेतक हिमारीसँ समए
दिउं । काजक समए दोसब लोग छै आ घड़ीक समए दोसब ।”

वधूकथा

जन्म तिमि

तीस रँथ लोकरी केना उँतब बरिबान्त आग.जी. पदसँ सेरा निरुति तेनाह ।
जखन कि बरिशकब आग.जी.सँ आगू रँथि आ.जी.पीक पदभाव सम्हावननि ।
मानु भवि ई पदपव बहताह । ओते लोकरीक खरधि रचन छन्हि । तीन दिन
बरिशकबकेँ पदभाव सम्हावना उँतब बरिबान्तकेँ मन पड़नि जे मीत -
बरिशकबकेँ रँधाग कहाँ देनिथनि । काबणो भेननि जे पनबह दिन पहिनेसँ जे
कार्य-भाव दिखए नगनथिन ओ लोकरीक अंतिम दिन धवि ले हबिछोई भू
सकनि । मनमे एननि जे मोरागनेसँ रँधाग दइ दिखनि । ह्रदा एकर काजक
तँ भिन्न-भिन्न जूगत होगत छि । जूगतिक अन्नकुने ले काज अन्नकुन
होगत छि, तँए मोरागनेसँ रँधाग देरँ उचित ले रूनि पड़नि । ओना तकान
जानकारीक रुपमे दइ समए नेन जा सकैत छन । ह्रदा से ले भेननि ।
चाहक रुप ठेड़नपव बथि, दहिना रँहि उँठरैत पनी-बन्धिकेँ कहनिथिन-

“कौ ई रँहिक शिजि म्हाँ भू गेन जे काज ले कइ सकैए । ह्रदा..... ?”

बन्धि अपना धुनिमे डूनीह । ओना एकरे ठेड़नपव रैसि चाहो पीरैत डूनीह आ
मेद-मेदीन चिड़ जकाँ ह्रदमिनी गपो-सप करैत डूनीह । अपने धुनिमे
मनो रौआगत डूनि । एकठाम रैसि चाह पीरितो मन दूक दूदिशिया डूनि ।
बन्धिक मनमे बरिशकबक पनी किवण नछे डूनिथिन । जिनगी भवि सखी-रँहीनपा
जकाँ बहनो, ह्रदा आग ? आग ओ बानीसँ महबानी रनि गेली आ.... ? कौ हम



বিদেহ' ১১২ ম অংক ১৭ আগস্ট ২০১২ (বর্ষ ৭ মাস ৭৬ অংক ১১২,

মানুস্ক্রিৎ ISSN 2229-547X VIDEHA

ওগ বঁঠেলিনী সদৃশ তঁ লে ভঁ গেলোঁ জেকবা সন্ত কিছ ভঁনি ঘবসঁ নিকানি দেন জাগ ছেক।

জহিনা কোনো নীনভেব রঁচা মাগক উঠোঁনাপব চহাগত উঠেত রঁস্বধমে রঁজৈত তহিনা পতিক শ্রমক উত্তব বশেমি দেনখিন-

“এঁ বঁঠিক শিক্তি ওতরোঁ কান বঁঠে জতে কান শোন চহ ঐন হখিযাব ওকবা হাখমে বঁঠে ছে। লে তঁ শ্রাশিক্তি নিকননা উত্তব শেবাব জহিনা মাঠি বঁনি জাগ ছে তহিনা বঁনি কহ বহি জাগত খিছ। হাখসঁ হখিহাব হঠিতে জিনগী হহবএ নগে ছে।”

পুন: চাহক কপ ওঠা চুস্কী লেত বরিকানত রঁজনান-

“রঁচহেসঁ দনু গোরে সঙ্গে বহলোঁ। খেনাগ-পীনাগ, খেনোাগ-ধূপেনাগ, ঘূমনাগ-ফীবনাগ সন্ত সঙ্গে বহন। কহাঁ কহিযো মনমে উঠন জে দনু গোরেমে কোনো দূবী খিছ। খপনারোঁ কে কহএ জে ঘরো-পবিরাব আ সরো-সমাজ কহাঁ কহিযো বঁসননি। ফুদা খাগ....?”

“ফুদা খাগ কী?”

“গহএ জে...। খাগ রঁহত দূবী বঁমি পড়ি বহন খিছ। বঁমি পড়এ জে জেনা খকাস-পতানক খঁতব ভঁ গেন খিছ। কোন ফুদ নহ কহ খাগু জাএব, সে মন নিগঁযে লে কহ পারি বহন খিছ।”

“তখন?”

“সএহ লে মন খসখিব লে ভঁ বহন খিছ। জিনগী ভবিক সগীকেঁ ঐলেন শ্রুভ খরসবপব কেনা লে রঁধাগ দিখনি। ফুদা এতে দিন রঁবারবীক রিচাব ছন খারি ও খোড় বহত। কহাঁ ও সিহ দ্বাবপব রিবাজমান কেনিহাব আ কহাঁ হম দেশেক খদনা একটা নাগবিক। কি খপনারোঁ ওগ ফুসীক বঁমী জগসঁ ছেঠে ভেলোঁ। সীকপব বাখন রা তিজোবীমে বাখন রসন্ত ওতরোঁ কান লে জতে কান ও ওতএ বহত। বরিশীকব খাগ ওতহ ছখি জতহ হমবা সন-সন জিনগী খঁতিম ছোড়পব



বিদেহ' ১১২ ম অংক ১৭ আগস্ট ২০১২ (বর্ষ ৭ মাস ৭৬ অংক ১১২,

মানুস্ক্রিৎ সংস্করণ, ISSN 2229-547X VIDEHA

পট্টচানিহাব তুনকব তুফমদাবী কৰিত খিছি। কোন নজবিযে ও দেখে ডুন আ
আগ কোন নজবিযে দেখতাহ ? ”

বরিকান্তক অন্তবমনকে বশি আকি বহন ডুনীহ। হুদা জতে খ ১'কএ চাটি
ডুনীহ তগসঁ রেসী ঘরোণ মাছ জকাঁ আপন সড়নি বঁদন জাগত বহনি। কি
আঁখিক সোমক দেখন সূঠ ভহ জাগত। কেনা লৈ ভহ সকেএ। দূ গোঠে
রীচক রাত তঁ ওতরে কান ধবি সত্য বহে জতে কান ধবি দুনু মালিত খিছি।
কাজ খোড়। ছী জে গবজি কহ কহত জে তোবা পনঠলে হম খোড়। পনঠি
জাগে। মন অসখিব হোগতে বশিমক মনমে রিচাব জগনি। দূখক দুরাগ
লোব ছী। পেঘ-সঁ-পেঘ দূখ লোক লোক ধাবমে বঁহা বৈতবণী পাব কৰিত
খিছি। বঁজলীহ-

“জহিনা খটক মনমে উঠি বহন খিছি তহিনা হমরো মনমে বঁগ-বঁবগক রাত
উঠি বহন খিছি। কহাঁ বরিশকবক পনৌ কিবণ বাজবানী আ কহাঁ হম.... ? কহাঁ
বাধা সঁগ গুয়া আ কহাঁ.... ? কালি ধবি দুনু গোরে একঠাম রেসি এক খাবীমে
খেঁরো কৰে ডুনোঁ আ একে গিনাসমে পানিযো পীরে ডুনোঁ, হুদা আগ সঁভর
খিছি। আখিব কিখএ ? ”

হরাক তেজ মোকমে জহিনা ডাবি-ডাবিক পাত ডোনি-ডোনি এক-দোসবমে সঠরো
কৰিত আ হঠরো কৰিত তহিনা বশিমক ডোনেত রিচাব সুনি বরিকান্ত সুর্য
ডোনে নগনাহ। এক তঁ পহিনেসঁ মন ডোনি বহন ডুননি তগপব বশিমক রিচাব
আরো ডোনা দেনকনি। গন্তব্য জগহ পট্টচানাপব জহিনা সন্ত হবা জাগত
তহিনা হবাএন মনে বরিকান্ত বঁজনাহ-

“কানসঁ সুনিতো, আঁখিসঁ দেখিতো কিছু বুঁমি লৈ পারি বহন ছী জে কি নীক কি
খবনা। কী কবী কী লৈ কবী। হুদা সাঠি বঁখক সঁগীকে এতে দূব কেনা
বুঁমর। হুদা নগো কেনা বুঁমর। সাঠি বঁখক পখিক সঁগী জঁ দূ দিশায়ে সঁগে
চনী তখন কতে দূবী হএত। হুদা সাঠি বঁখক জিনগিযো তঁ ছোঠ লৈ ভেন ? ”



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,
मासिक संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

बरिकान्तक रिचाव सुनि बन्मि ठैपकि पड़नीह-

“जिनगी तँ एक दिन, एक म्कण, एक घटनामे रँदनि जागए आ साठि-रँथ कि
धो-धो चाँरै । ”

“तखन ? ”

“सएह ले बूनि बहन छी । एतेठाँ जिनगी एक संग रितेनौं हूदा आग जग
जिनगीमे पहुँचि गेल छी तग जिनगीक संरंधमे किछ रिचाव कहियो ले
केनौं । ”

पनौक रात सुनि बरिकान्तकेँ जहिना खान गामक चौरङ्गी, तीनरँझीपव पहुँचि
भरू नगि जागत, जगसँ पूर-पछुडिमक दिशे रँदनि जागत । हूदा एहनो तँ
होगते अछि जे नगनो भरू ओहले चौरङ्गी, तीनरँझीपव अजितो अछि । अपन
भरू तँ तेना भइ कइ ले अजनि, खाली एकठाँ प्रमठाँ उठनि जे रँचसाँ
सियान भेलौं, सियानसँ चेतन भेलौं, चेतनसँ बूँढ १५ की प्रमाणपत्र भेल गेल ।
हबराह थोड़ जे अमड् ओ अरस्थामे बूँढ १५ की प्रमाण ले भेलै छैक ।
केना भेलैते प्रमाणपत्रक संग पेन्सिलो ले अरै छै । हूदा मन किअ धक-
धका बहन अछि । जिनगीक चाबिम अरस्था रानप्रस्त होग छै, संयामक होग
छै जे दिन-बाति दोड़त दुनियाँक हान-चान जानए चाहित अछि । से कहँ
मन मानि कइ बूनि बहन अछि । पतिकेँ गँजिब अरस्थामे देखि बन्मि ठैपनि-

“अहाँक मनमे जे नाचि बहन अछि उहए हमरो मनमे नाचि बहन अछि । हूदा
ओहो रात तँ मूँठ नहियो छी जे जिनगीक संग रौंठे रँले छै । आ रौंठे संग
रँठेहियो रौंठ रँनरै छै । ”

बरिकान्त- “करी रौंठ ? ”



बिदेह ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संकेत ISSN 2229-547X VIDEHA

पत्रिका प्रथम स्थान बर्षा बिदेह भन्ने गेनौह । हेबागत संगीके राठ देखाएर रहत
पेय काज छी । ह्मदा नगरे मनमे उठि गेलनि जे तखन अपने किछ एते
रौखाग छी । कम-स-कम चाह पीले कान रैसाबियोमे ई रातक रिचाव करैत
अरितो त आम्का जका त ले रौखेतो । जहिना जेतन आ रिन जेतन
थेतमे चननास पहिले धड़ि आग छै, धड़ि एनाक पछाति पतिआग छै,
पतिएनाक पछाति पेविआगत पेवा रैले छै । रहए एकपेविआ रैपेविआ
रैलेत चले छै । बर्षा रैजनाह-

“अहाँ कओनेज छोड़ना उतब जिम्मा उठा सबकारी राठ पकड़ा साठि बरष पूवा
गेलौ । ने कहियो जमीन दिस तकै जकबति मलसूस भेल आ ने तकलौ ।
ह्मदा आग त ओतग उतबि आरि गेल छी जेकर बस्ता अखन धबक बास्तास
भिल आछि । ”

पनेक रिचाव स्थान बरिक्कान्त ह्मदा १ डोनरैत आँखि उठा कथनो पनेक
आँखिप बथेत त कथनो उतबि धबतीप दगत । जहिना आँखिप चढ़न
कोनो रबतनक पानि निछास ताँ पारि डुप उठि उधियागक पबियास करैत
तहिना बरिक्कान्तक रैचाविक मन सेहो उधियागक पबियास करैत बहनि । ह्मदा
जहिना पिजवाक राँघ पिजवामे गम्हबि क२ बहि जागत, तहिना आग धबक जे
मन कपी राँघ एहेन शरीर कपी पिजवामे हँसि गेल छननि जे जस्त आगू ह्मदें
डेग उठैलेक कोशिने करैत ओत सद्दी राँदन जकाँ आसते-आसते ठीन
होगत बहनि । आगूक मनफलागत राँठ देखि बमकान्त रैजनाह-

“रिचावणीय राँत जकब आछि, ह्मदा रिन बूमनक जिनगीक संग त अँक जिनगी
चनन । कहाँ कतो रैरधान भेल । आग जे कहलौ ओ त ओछ दिन कहि सकै
छलौ, जग दिनस रहत आगू धबि रैठि गेलौ । से त रोकि क२ मोड़ि
सकै छलौ । ह्मदा आग त जानन-रिन (जानी-मूर्य) जानन दू संगे रौखाए
चाहि छी ! ”



বিদেহ' ১১২ ম অংক ১৭ অগস্ত ২০১২ (বর্ষ ৭ মাস ৭৬ অংক ১১২,

মানুস্ক্রিহ সংস্করণ ISSN 2229-547X VIDEHA

পাতিক রাত স্নি বশ্মি মনে-মন রিচাব কবএ নগনীহ জে দ্বিযায়ে এহলো
লোকক কমী লৈ খি জেকবা জকবতি ভবি নুবি-বুধি লৈ ছৈ, হুদা গহো ত
মুঠ লৈ জে জেকবা ছেরো করে ওগমে রেসী ওহনে খি জে যা ত উনঠা রাণ
চনরৈএ রা নহিয়ে চনরৈএ। তখন স্ননঠা রাণ কেনা আগু রঠত জঁ রঠরৈ কবত
তঁ কতে আগু রঠত জেকবা আগু দ্মান জকাঁ চৌরগনী উনঠা রাণ ঘেবলে
খি। হুদা উপাএ কী ? শূফ তেন-মোরিন দেন মজগুত গঁজলো চত গপব
দম তোড়এ নগো ছৈ হুদা ধুঠলো চক্কা রিন তেলো-মোরিনক ভুঠা গবে দৌগেত
রিন ব্রেকক গাড ১ জকাঁ কেসকে জানো জগএ খা কেসকে হুঠো-কানো
হোড়এ। ডেগ আগু উঠাএর জকব কঠিন খি। হুদা নগলে মনমে উঠননি
জে জগ রাঠ পকড়া আগ ধবি চনলো জোঁ ওহী রাঠকে ছোড়া দোসব রাঠ
পকড়া নর রঠেহী জকাঁ বিদা হোগ, গ তঁ সন্ডর খি। জহিনা চিন্হাব
জগহক চোব পড় ১ দূব দেশে জা খপন ফিয়া-কনাপ রদিন নর-মন্ডয়ক জিনগী
রনা জোরএ চাইত ও তঁ সন্ডর ছৈ...

রাণ নাগন পন্ডী জকাঁ পতিরৈ দেখি খন্ডরক সান্‌ত্‌রনা ভবন শির্দ নিকানি
বশ্মি রঁজনীহ-

“জহিনা খহাক জিনগী তহিনা লৈ হমরো রনি গেন খি। যহে বৃদ ১পা খহাক
সএহ লৈ হমরো খি। হুদা একঠাম তঁ দনু গোঠে এক ছী। একে দরাগক
জকবতি দনু গোঠে লৈ খি। তঁএ রিচাব দগ ছী জে খার লৈ ও কতরা
বহন খা লৈ ওকাগত, তখন জানি কহ জহরো-মাছব খা রেঁ সোহো নীক
লৈ।”

বশ্মিরৈ আগুক রাত পেঠেমে ঘুবিখাগত বহনি তগ রীচেমে বরিকান্‌ত ঠিপ
দেনখিন-

“রেসী দ্ব তঁ লৈ বুমি পড়এ হুদা সাঠি রঁখক প্রাড ১ খরস্‌খা ধবি হমবা
সরহক নজবি লৈ গেন। সবকারীক পেঘ জিন্মামে বহলোঁ। সমাযান্সাব কাজ
কবিতো হুদা খপন জিনগী তঁ স্ববক্ষিত বখিতো। সাঠি রঁখক পড়াতিযো তঁ
চানীস রঁখ জীরাঁক খি। কি লৈ জলৈত ছলোঁ জে দবমাহা ধুঠি জাএত
জিনগীক আরশ্যকতা রঁদৈত জাএত ওহন স্থিতিমে কি কএন জা সকে ছৈ।”



বিদেহ' ১১২ ম অংক ১৭ অগস্ট ২০১২ (বর্ষ ৭ মাস ৭৬ অংক ১১২,

মানুস্কৃত সংস্করণ, ISSN 2229-547X VIDEHA

পাতিক বিচাৰকো গহবাগত সঙ্কল্প দিস জাগত দেখি স্ফটক দসো রাণ সাধি
বশ্মি ছোড়নি-

“খলো মনমে জুব-শীতলক পোখবিক পানি জকাঁ ঘোব-মষ্টা কৰি দৈ। ঘোলে
মষ্টা নে ঘোঁও নিকালৈখা আ খনটে সেহো নিকালৈখ। সঁযাসী সন্ত কেনা ফটনাহা
কমনক মেঠৰী রাঁহি কনহামে নঠকা নগএ আ সোঁসে দ্ৰুনিয়া ঘুমে। খনটকৈ
তঁ সহজহি চবি-চকিয়া গাড়া চনৰৈক নুবিয়ে খন্ডি।”

পলৌক বিচাৰ স্নি বরিকান্ত ওসবা গেনাহ। এক দিস সঁযাসীক রাঁত রাঁজ
কহি বহন ছুখি জে জহিনা কান্ধী অধিকাবসঁ জীৱন-বক্ষা হোগত তহিনা নে
সঁযাস খরসখা -রানপ্রস্তু- পৱিত্র মনুষ্যক লৈতিক অধিকাব সেহো দী। দোসব
দিস চবি চকিয়া গাড়া ক চৰা সেহো কৰি ছুখি জে ভবিসক আপনো নগা ক
কহি ছুখি। সঁগী দেখি বরিকান্ত দহনাএ নগনাহ। জহিনা কোসী-কমনাক
রাঁহি মে ভঁসিত ঘবপব বৈসি ঘবরাবী রাঁহিয়ে খেনাগএ আ কমনা-কোসীক গীতো
গৱৈ, তহিনা বিন্ধন ভঁ বরিকান্ত বৈজনাহ-

“হঁসী-মজাক ছোড়া। খাৰ কোলো রাঁ-রোধ লৈ দী। হম সন্ত আপন জীৱন
আপন সামাজিক জীৱন লৈ বনাএৰ তঁ দেখিতে ছিঁ জে মনুষ্য এক দিস চান
ছুৱৈ তঁ দোসব দিস সীকীক রাঁক জগহ ৰম-ৰাকদ নহ মনুষ্যক ৰীচ কেনে
খেন দ্ৰুনিয়ামে খেন বহন খন্ডি। খেব, ওতে সোচক সমএ খাৰ লৈ বহন।
জেকব তিন খেনিওঁ ওকবা ৰৈহি দেনিওঁ। আপন চনাস ৰৈখক জিনগী খন্ডি, নে
হমব কিযো মানিক আ নে হম কেকৰো মানিক ছিঁওঁক। ভগৱান বামকৈ জহিনা
আপন ৰানপ্রস্তু জীৱনমে খনেকো ধৃষি-ধ্ৰুনি, যোগী-সঁযাসী সন্তসঁ ভেঁই ভেননি আ
আপনো জা-জা ভেঁই কৈনিখ। তহিনা নে আপনো দোসবাক ঐঠাম জাগ আ
ওহো আপনা ঐঠাম খাৰএ। স্ফট বিচাৰণীয় শ্ৰম ও খন্ডি জে বামকৈ কৈ সন্ত
ভেঁই কবএ এননি আ কিনকা-কিনকা ওতএ ভেঁই কবএ স্ৰৱ্য গেনাহ। ও শ্ৰম
মনমে খৰিতে গাছসঁ খসন পঘিলাএন কঠৰ জকাঁ মন ছোঁহোছিত ভঁ গেননি।
খোঁগচা-কমবী সঁগ এক দিস তঁ দোসব দিস কোহ ওড়া-ওড়া কোখা খাগু
পট্টি জাগত। খাটী ছুড়পি-ছুড়পি ৰোন-মাৰমে ৰৈচা দগ দ্ৰুখাৰে জান
ৰৈচৰৈ, তঁ নেবহা ওত্তব-দঙিনে সিবহনা দহ পড়ন-পড়ন সোচৈত জে জতে
পকৰৈ ততে সঙ্কত হেঁহ তঁ সমএ বহৈত ভোজন ৰৈনা লৈ লৈ তঁ দ্ৰুগব ভঁ
জাএৰ। বরিকান্ত সোচৈত-সোচৈত জেনা খনিসাএ নগনাহ। হাফী ভেননি।



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,
मासिक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

बरिकान्तके हाथी होगत देखि बर्षिक मनमे उठननि जे हाथी तँ निनिया
देरीक पहिन सिंह द्वाबिक घटी छी । भले नीक हेतनि जे स्रति बहताह ले
तँ ए उमेवमे जेँ निन उठननि तँ खनेर सौलो-महीनेमे रँदनि जेतनि ।
हठकावि क२ रँजनीह-

“जते माथ धूँके हूँए रा देह धूँके हूँए अपन धूँ । हमब जे काज अछि
तगमे हम रिखूत ले हूँए देर । हमबा निघे तँ अही ने सभ किछ छी । ”

तीन सए घबक रँसती रँसन्तपुव । छोट-नमहब चानीस ठी किसान परिवार शेष
सभ खेत-रौनिहाबसँ न२ क२ आलो-आलो रोजगाव क२ जीरन-रँसब करैत
अछि । खनेको जाति गाममे । ओना ममोनका किसान रँसी । ओकरो दशा-दिशा
भिन्न-भिन्न । तेकब खनेको कावणमे दूठा प्रहूँ । जगसँ रिधि-रँरहाबमे
सेहो अतब । किछ जातिक लोक अपने हाथे हरो-जागत नैत आ खेतक
काजो करैत जगसँ आमदनीक रँचतो होगत आ किछ एहलो जे अपने हाथसँ
काज-उदम ले करैत तँए रँचत कम । कम रँचत भेने परिवार दिनान्दिन
सिफुडित जागत । ओना गामक रँनारँटे भिन्न अछि । एक तँ ओहना दू गामक
रँनारँटे एक बंग ले अछि । तेकब खनेको कावणमे प्रहूँ अछि, खेतक रँनारँटे,
जनसंख्या जाति गत्यादि । रँसन्तपुवक रँनारँटे आरो भिन्न । डूँचगब जमीन
रँसी निचबस कम अछि जागसँ गाडी-रिबडी सेहो रँसी अछि आ घब-घवाडी,
बस्ता-पेवा सेहो एन-हगन अछि ।

रँसन्तपुवमे दूठा नमहब किसान रँकी छोट । नमहब किसान परिवार बहने
गामोक आ अगन-रँगनक आलो गामक लोक जेठरैयती परिवारो रँमेत आ
जेठरैयत कहरो करैत अछि । बाजक जमीन्दार तँ ले हूँदा गमेया जमीन्दार
सेहो किछ गोठे रँमेत । तेकब कावण जे दूक महाजनिषो चनेत आ



बिदेह ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२)

मानुसिंह सक्सेना ISSN 2229-547X VIDEHA

गामक सड़-संमठक पनचैतियो करैत । कनी-मनी अनचितो काजकेँ गामक
लोक अनठिया दैत । तगमे बाधाकान्त आ हसुमनान दनू गोठेक जमीनोक
रनारंठि आरौ भिन्न अछि । चौरंगनी ठेन सभ रसन अछि आ रीचक जे तीस-
पेतीस रीघाक पूर्वांठे छे ओ मध्यम गलीब अछि । जगसँ अधिक रंखा भेले नाना
होगत पानिक निकासी क२ लेत, कम भेले चौरंगनीक ओहसी एले रौदियाहो
समैमे उपजिये जागत । ओना दनू गोर रौबिंग सेहो गरौले छथि । तँए
रौदियाहो समए भेले खेतक नाभ उठागये लेत छथि । पछास-तीस रीघाक
रीचक दनू किसान । रूदा दूआवपव रंखाबियो आ पौखबिक महावपव दू-सनिया
तीन-सनिया नारोक ठान बहिने छन्हि ।

बाधाकान्तो आ हसुमनानोक परिवार रीच तीन पसुतसँ उपरक दोस्ती बहन
छन्हि । ओना दनू दू जातिक रूदा अपेक्षा-भार एहेन जे चानि-टानिसँ अनठिया
ले रूनि पलैत जे दनू दू जातिक छथि । किछ ए तँ कोनो काज-उदेममे
एक-दोसबाक रौले-रौछे एक-दोसबठाम जागत । ओना आने गामक रूदूम
जकाँ दनू परिवारक रीच कपड़ १-नडाक रब-रिदागक चननि सेहो अछि । रूदा
तेयो सबाध-रिखाह खादि पाबिबिक काजमे दनू दू जातिक पबिचय देरै
करैत अछि ।

नमहर भूमकम होगसँ पहिले जहिना नहियो होगरना रौछा सरहक जनम भ२
जागत अछि जगसँ दोस्तीआरक संभारना अनेरो रंठि जागत अछि, रूदा से
ले बाधाकान्त आ हसुमनान दनू गोठेकेँ एक दिन रौठा भेलनि । ओना कियो-
केकरो एठाम जिगेसा करै ले गेनखिन तेकब कावण भेलै जे अपने-अपन
घब ओमड़ १ गेलनि । ओना पमबिया-हिजवनी मलीना दिन धबि दौड़-रौछा
करैत बहन । दागयो-माग डुठियाबमे बरिदिन एकक नाँ बरिंकान्त आ
दोसबाक नाँ बरिंशकब बधि देनकनि । अनेरो हूनक रौनमे ठेहनितथि आकि
साँप-कीड़ १ रौनमे । रौन तँ रौले छी, दनूक छी । तँए हबहब-खटखटसँ
नीक दिलेकेँ पकड़ि लेननि । ओना एकठा आरौ केननि जे दनूमे सँ केकरो
जातिक पदरी ले नगोननि ।



विदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,
मासिक संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

स्वभ्रमस्त परिवार बहने तीन रथक पछातिये सकून जाग जोकब भन् गेन
रूदा चाबिम रथमे दूक नाउ गामेक सकूनमे निथोन गेन । उना जेहने
समयतिथा बाधाकान्त तेहने ह्मनारो । रूदा नाउ निथरै दिन बरिक्तान्त
पिता गेनथिन आ बाधाकान्त अपने ले जा भायकेँ पठोनथिन आ बरिक्तबक
पित्री एक रथ घटरी कन् कन् निथोनथिन । उना बाधाकान्तकेँ सकूनपब जेरौक
मनो ले होगत छन्हि । किएक तँ सकून सरहक जे किवदानी भन् गेन ओ
देखरी जोग ले छि । शिक्षक सब रिद्यार्थीकेँ नहिये पढ़ेक लेन प्रेवित आ
नहिये पढ़ेक जिज्ञासा जगा पढ़ैत छथि । छुड़ि हाथे पढ़ैए चाहित छथि ।

एक तँ एक बगह परिवार तछमे दोसती । दू गोरे तेलेन चन्सगब जे
गामेक सकूनसँ पठका-पठकी करैत निकनन । पठका-पठकी आ जे एक सान
बरिक्तान्त ह्मन् करैत तँ दोसब सान बरिक्तब उना हाग सकूनमे थोछ
गजपठ भेल, सकूनक शिक्षक आकि लेननि जे केतरो उपा-उपरी छै तेयो
सोचन शक्तिमे दूमे अन्तब किछु जकब छै । कउनेज तँ रिन माए-रूपक
होगए, केकबा के देखत । रूदा आनर्सक संग दू गोठे प्रथम श्रेणीमे
निकनन ।

आग.पी.एस. कन् दू गोठेक ट्रेनिंग आ ज्वानिग सेहो लेन । अपेक्षामे
रूदा उतरी होगते गेन ।

ई बचनपब अपन रथब ggajendra@videha.com पब पठाउ ।



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानकीह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



१. नरेंद्र कुमार झा- गर्गा नदी पब पुनक माधाम सँ रैठत
कारोराबक चानि/ महिषीमे आयोजित होयत साँस्कृतिक महोत्सव/ सरसम्पत्ति
सत्तापति आ उपाध्यक्षक निरर्चित/ रिहावमे शिक्षाक नेन मदति कबत बिन्ने रैक



२. अमित मिश्र- कतिआएन आखब

३



नरेंद्र कुमार झा

गर्गा नदी पब पुनक माधाम सँ रैठत कारोराबक चानि/ महिषीमे आयोजित
होयत साँस्कृतिक महोत्सव/ सरसम्पत्ति सत्तापति आ उपाध्यक्षक निरर्चित/
रिहावमे शिक्षाक नेन मदति कबत बिन्ने रैक



विदेह ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,
मासिक संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

१

गंगा नदी पब पुनक माध्यम सँ रैठत कारोबारक चलि

प्रदेशे मे गंगा नदी पब पुनक कमीक कारण प्रदेशे मे कारोबार के गति नहि
भेटि बहन छि । नीतीश कुमारक नेतृत्व रैना बाबूनीय जनताधिक गठबंधन
सबकाव प्रदेशेमे विकासक गति देरौक संगहि कारोबारके गति देरौक दिस
सेहो डेग उठौनक छि । कारोबारक एहि समस्याक समाधानक लेन सबकाव
गंगा नदी पब पुन रैलेरी पब विशेष जेब दह बहन छि । एखन गंगा नदी
पब तीनठा पुन रैनि बहन छि आ चाबिम पुनक लेन सेहो केन्द्र सबकाव सँ
अनुमति भेटि गेन छि । ओ तँ एखन गंगा नदी पब चाबिठा पुन छि जाहि
मे पठेनाक महामो गंधी सेतु आ मोकामाक बाजेन्द्र पुन पब रैसी भाव बहेत
छि । एक दिस महामो गंधी सेतु संवचनामेक खबारीक कारण मात्र एक लेन
चानु छि जाहि सँ हवदम पुन पब जाम नागन बहेत छि । तह दोसब दिस
बाजेन्द्र पुन रैसी पुवान होयरीक कारण रैब-रैब मबन्धनक लेन रैद कवय
पडैत छि । एहि स्थिति मे प्रदेशेक पूर्वी आ पश्चिमी भागक मध्याक आराजाली
मे परेशानी रैठि गेन छि । सबकाव एहि समस्याक जनतर लेनक छि आ एहि
समस्याक समाधानक प्रयास कइ बहन छि । गंगा नदीक उपर पुन यातायात
लोक सुरक्षा आ कारोबारक लेन आरथक छि तेँ बाज सबकाव प्रदेशे मे नर
पुन रैलेरीक काज तेजरी सँ चलि बहन छि ।

पथ निर्माण मंत्री नंदकिशोर यादव जनतर देननि जे एखन सबकाव गंगा नदी
पब दू ठा पुन रैलेरीक योजना रैलोनक छि । एहि मे एकठा ताजपुर-
रैथियावपुरक मध्या रैनाउन जा बहन छि । आ पुन सार्वजनिक-निजी-भागीदारी
(पीपीपी)क अंतर्गत रैनि बहन छि । चाबि लेनक एहि पुन पब गोठेक 1700
करोड ठाका खर्च होयत । एकर 20-20 प्रतिशत ठाका केन्द्र आ बाज
सबकाव दह बहन छि तथा 60 प्रतिशत ठाका निजी सामेदाव कम्पनी नगा
बहन छि । श्री यादव जनोननि जे महत्त्वक एकठा योजनाक अंतर्गत आ पुन
रैनाउन जा बहन छि । एकर अंतर्गत सबकाव प्रदेशे के उडीसाक पावदीप
रैन्दवगाह सँ जोडरीक योजना रैलोनक छि । एहि पबियोजनाक मंजूरीक लेन
केन्द्र सबकाव सँ नगाताव गपसप चलि बहन छि । जाँ एकर मंजूरी भेटि
जागत छि तह आ प्रदेशेक लेन महत्त्वपूर्ण होयत आ कारोबारी गतिरिधि मे
सेहो तेजरी आगत । ओना ताजपुर-रैथियावपुर पुन वर्ष 2016 धरि रैनि कइ
तेयाव भइ जायत ।

76



বিদেহ' ১১২ ম অংক ১৭ অগস্ট ২০১২ (বর্ষ ৭ মাস ৭৬ অংক ১১২,

মাদ্রাসা সংস্করণ, ISSN 2229-547X VIDEHA

সবকাব কে পঠনাক মহামো গান্ধী সৈতুক সমানান্তব সৈহো নব পূন বঁলৈরাক
ঋনমতি কেন্দ্র সঁ ভেঠি গেন ঋন্থি। পথ নিমণি মন্ত্রী জনৌননি জে সবকাব
কতেকো দিন সঁ এহি পূন কে বঁলৈরাক ঋনমতি কেন্দ্র সঁ মাণি বহন ছন।
দবখসন মহামো গান্ধী সৈতুক ঋন্থি ঋন্থকতাক পূঠি কবরী মে ছোঠে পডি বহন
ঋন্থি। পঠনা প্রদেশিক ঋন্থিক গতিরিখিক কেন্দ্র ঋন্থি। তেঁ এহি ঠাম ঋন্থিক
ঋ নব পূনক ঋন্থকতাক ঋন্থি। কেন্দ্র সবকাব মহামো গান্ধী সৈতুক সমানান্তব
ছন নেন এহি পূনক ঋন্থমতি দেনক ঋন্থি। এহি সঁ প্রদেশিক ঋন্থকতাক পূবা
ভহ স্কত। এহি সঁ ঔৎ পাব ঋ দক্ষিণ রিহাবক মধ্য ঋরা জাহী ঋসান ভহ
স্কত। সঁগতি প্রদেশে মে সঁগতি গুগা নদী পব বঁনন পূন পব বঁনন কম
হোয়ত। ঋ পূন লোক নিজী সামেনদাবী (পীপীপী)ক ঋধাব পব বঁনাওন জাহত।
এহি নেন সামেনদাবক খোজ কয়ন জা বহন ঋন্থি। একব ঋনারী সবকাবক
নজবি বেনরেক পবিযোজনা পব সৈহো ঋন্থি। দবখসন এখন পঠনা ঋ ফুগেব
মে দু-দুঠা সডক সহ বেন পূন বেনরে দ্বাবা বঁনাওন জা বহন ঋন্থি। হানাকি
বেনরেক ঋনাী খজনা কে দেখি ঋ যোজনা সন্ত জন্মী পূবা ভহ স্কত। একব
ভরোসা রাজ্য সবকাব কে সৈহো নহি ঋন্থি। রাজধানী পঠনাক দীঘা ঋ
সোনপুবক পবমানন্দপুব মধ্য বঁনি বহন বেন সহ সডক পূনক নিমণি স্থিতি
বেনরেক রাস্তারিকতা জাহিব কহ বহন ঋন্থি। পঠিনা দস বর্ষ সঁ ঋ পবিযোজনা
চনি বহন ঋন্থি ঋ এখন ধবি পূবা নহি ভেন ঋন্থি। বর্তমান স্থিতি কেঁ দেখি
সঁভারিত সময় সীমা 2015-16 ধবি পূবা হোয়রাক উন্মীদ নহি ঋন্থি। পথ
নিমণি মন্ত্রী জনৌননি জে রাজ্য সবকাব দীঘা ঋ পবমানন্দপুবক মধ্য বঁনি বহন
বেন সহ সডক পূন কে জন্মী পূবা কবরীক ঋগ্রহ কেন্দ্র সঁ কবতা এহি রাস্তা
রাজ্য সবকাব ঋন্থি হিহসাক ঠাকা উপনরঁধ কবা দেনক ঋন্থি।

২

মহিষীমে ঋযোজিত হোয়ত সাঁস্কৃতিক মহোসের

মিথিনাচন ঐতিহাসিক শিজি পাঠ উগ্রতাৰা স্থান মে নববাত্ৰাক ঋসব পব উগ্রতাৰা
সাঁস্কৃতিক মহোসের ঋযোজিত কয়ন জাহত। সহবসাক মহিষী স্থিত উগ্রতাৰা
স্থান মে 17 ঋ 18 ঋকট্টরব কেঁ ঋযোজিত এহি দু দিনক মহোসেরক উদ্ধাঠন
রিহাবক ঋখামন্ত্রী নীতীশে ফুমাৰ কবতাহ। এহি দবমিয়ান মিথিনাচনক সাঁস্কৃতিক,
সামাজিক ঋ ধার্মিক রিবাসতক মহত্ব পব রিচাব-রিমর্শ হোয়ত ঋ মিথিনাক
সাঁস্কৃতিক পবস্পবা সঁ লোকসন্ত কেঁ ঋরগত কবাওন জাহত। এহি মহোসেরক নহ
কহ মিথিনাচন সহিত পত্ৰ সী দেশে লেপানক তবাগ বনা ক্ষেত্রক লোক সন্ত মে
উসোহ দেখন জা বহন ঋন্থি।



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानुषीह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

३

सर्वसम्यतिर् सभापति आ उपाध्यक्षक निरर्चित

रिहाव रिधान मंडनक मॉनसून सत्रक दबमियान रिहाव रिधान सभाक उपाध्यक्ष आ
रिहाव रिधान पविषदक सभापतिक चूनार सप्तम भेन । आजपाक रविष्ठा नेता
अरधेशे नावायण सिंहक रिधान पविषदक सभापति आ एहि दनक अमरेन्द्र प्रताप
सिंह रिधान सभाक उपाध्यक्षक पद पब सर्वसम्यति स निरर्चित घोषित भेनाह ।
दूनू पदक नेन मात्र एक-एकठा नामाकिन होयराक कावण हुनका निरर्चित घोषित
कयन गेन ।

४

रिहावमे शिक्षाक नेन मदति कवत रिश्वे रैक

रिश्वे रैक रिहाव मे गुणामेक शिक्षाक नेन 1600 करोड ठाकाक मदति
कवत । एहि पब सैद्धांतिक रुप स सहमति रैनि गेन अछि । शिक्षा मंत्री पी.के.
शौरी रिधान मंडनक मॉनसून सत्रक दबमियान आ जनतर दैत कहनि जे आ
ठाका दिसप्लव मास धवि उपनद्ध भू ज्ञायत । एहि ठाका स प्रदेशिक प्रशिक्षण
संस्थानक आधावभूत संवचना के मजगूत कयन ज्ञायत ।

२



अमित मिश्र

कतिआएन आखव

रात चाबि रैष पतिव्रक अछि हमबा संगे एकठा संगी हमरे कम मे बहैत हुन
। पठैमे कले कमजोब हुने हुदा कपठीसनमे हमबास 2-3 घंठा रैसोए बाति
क२ जागे हुन आ एकव फनस्रकप 10 ठा मे 4 ठा सरौन जकेव हन क२ ले

78



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मासिक ISSN 2229-547X VIDEHA

हुले । उना तऽ हम्बासँ रेशी रात ले करैत हुन ह्मा भोव होगते राँकी
रँचन सँनक लेन हम्बा नऽग जकब आरि जागत हुन आ एखन ओ मित्र री
ठेक कऽ बहन छि । ओ घटना चाबि सानक राँद मोन पडन ह्मा जौक एकठा
शेब पठिकऽ

डाहसँ पहुँचरँ कोस-दू कोस
आगू रँठरी लेन तँ प्रेम चाली

पिछना डेट महिनासँ ह्माजौक गजन संग्रह "माँस आँगनमे कतिआएन छी "
थोड़-थोड़ पटे डलौह ह्मा कालि भवि वाति एकब गहन अधावन केनौ
। ह्म 50 ठी गजन आ 10 ठी करौग के संग्रह छि "माँस आँगन मे
कतिआएन छी" । पौथीक नाम पठि मोनमे किदन-कहँदिन राँत सरँ उठऽ नागन
। कतिआएन उहो माँस आँगनमे रिचित सन नागन ह्मा पठनाक राँद हम्बा
नागैत छि जे नागव एहि समाजके आँगन आ एहि समाज कपि आँगनक माँस
मे अपन रँसाव रँनेले छथि । ओ तऽ सकैए जे समाजक किछु भागसँ ओ
कतिआएन हेताह ह्मा पूवा समाजसँ किछोह कतिआएन ले नागै छथि । हम्ब
ओ कथनक सन्ता एहि संग्रह के पठनाक राँद रँसा जाएत । ओ तऽ प्रेमो
केननि तऽ समाजके धान मे बाकि तैए तँ कह छथि

सरँ उमवि रक्का के प्रेम चाली
मबितो दम धवि रुशेन छेम चाली
आशा आ निवाशिके हविछारैत कहननि

निवाशि संग आशापव ठिकन छै दुनियाँ
जँ देखनँहँ भगजोगनी तँ दिरानी रँम्

रिहावक ताकत आ कमजोरी के समेटले ओ शेब

रिहावक सिवखारी रँदनि गेन सन नगैए आरँ
श्रमिक घटेनासँ कंपनी मानिक नगै रिहावी जकाँ
एहन-एहन कतेको दमदाव शेब सरँस सजन ओ गजन संग्रह अपना-आप मे
अनग पहचान रँनरैत छि ।

पहिले गजन के देखनापव एकठा राँत हम्बा खँकन जे हुन मात्र चाबि ठी
शेब । गजनमे कमसँ-कम पाँच ठी शेब बहराक चाली ह्मा एहि संग्रहक गजन
संख्या

1.2.7.10.11.19.22.23.24.25.27.28.32.34.35.37.39.42.43.44.47.48



বিদেহ' ১১২ ম অংক ১৭ অগস্ট ২০১২ (বর্ষ ৭ মাস ৭৬ অংক ১১২,

মানুস্ক্রিত সংস্করণ ISSN 2229-547X VIDEHA

মে মাত্র চারিএ ঠা শৈব ঋতু জে কী গনত ঋতু । ওনা শাগব ঋতুখক
ঋতুমমে ও গনতী স্নিকাব করে ডুখি ঋ একব জিন্দাদাব ঋপনা কে মালিত
ভরিয়ামে একব সুধাবক রাদা করিত ডুখি ঋদা হনক শিঙ্কক পকড ঋ ভারক
ঋধ্যন কেনা কে রাদ হমবা নাগেত ঋতু জে শাগবক নেন উপরোজ গজনমে
এক-এক ঠা শৈব রৈদনোও কোনো ভাবী রাত লে ডুলে তেঁএ হম একবা ঋনস
মালি ডী ।

ঋর চব্ব কাফিয়াপব । এহি সংহক কিছু গজনমে একে কাফিয়াক প্রয়োগ ভেন
ঋতু জেনা 26ম গজন মে তিন ঠাম কাফিয়া "চহিএ" ঋতু । 29মে পাঁচ ঠাম
"এখালো" 31মে পাঁচ ঠাম "উয়াক" 46ম মে পাঁচ ঠাম "কেকরো-কেকরো" ঋতু
। কিছু ঋব গজনমে ও রাত ঋতু । ওনা কাফিয়াক দোহরেনাস গজন গনত
লে হোগে ডে ।

তেসব গজনমে মতনা লে ঋতু কিএক তঁ ও গজনক পহিন শৈব ঋতু
ফাট্টেত ডন জতএ মেঘ ঋ জমীন
পট্টচন পহিনে ওতহি ঋভাগন

রৈচন চাবিঠা শৈবমে "ঋভাগন" কে কাফিয়া মানি ফমশে: "বাগিন ,ভাজন , মাজন
ঋ সাধন নিখন ঋতু । 4ম গজনক মতনামে "করৈএ" ঋ বায়েএ" "এএ" তুকান্ত
সংগ ঋতু ঋদা পাঁচম শৈব মে কাফিয়া "হোগএ" ঋতু । ডুঠম গজনক ঋতুম
শৈবমে "কহাগ" কে রৈদনা গনত কাফিয়া "কহাগত" নিখা গেন । 32ম গজনক
মতনা ঋতু
হমবা তঁ সুখ ভেট্টেএ গজনক গাঁতীমে
ওহিনা জেনা জাড মে গমী ভেট্টেএ গাঁতীমে

এহিঠাম "গাঁতীমে" বদীফ ভেন ঋ কাফিয়াক ঋতা-পতা- লে ঋতু । ওনা ঋন
শৈবমে কাফিয়া "ঋতীমে" তুকান্ত সংগ ঋতু ।

41ম গজনক মতনামে কাফিয়া "নমকা ঋ চমকা " তুকান্ত "মকা" সংগ ঋতু
ঋদা দোসব শৈবমে কাফিয়া "উঠা" ঋতু ।
44ম গজন মে কাফিয়াক তুকান্ত "এন" ঋতু ঋদা দোসব শৈবমে কাফিয়া
"বখেন" "এন" তুকান্ত ঋতু ।
17ম গজনমে ঋগেজী শিঙ্কক কাফিয়া "গেম" ঋ "ব্লেম" নিখন ঋতু ।

এহি সংহক সরঠা গজন সবন রাফিক রৈচবমে ঋতু । ওনা তঁ ও রৈচব গজনক
সরসঁ হল্লক রৈচব ঋতু ঋদা শাগব ওহো রৈচবমে রৈচতে রৈব ধোখা ঋগত ডুখি
। হমবা জালিত 26ঠা গজন গজনক কোনো শৈবমে এক-দু ঠা রপ রৈচ ।
দেননি তঁ কোনো মে ঘটা দেননি । জেনা



বিদেহ' ১১২ ম অংক ১৭ অগস্ত ২০১২ (বর্ষ ৭ মাস ৭৬ অংক ১১২,

মানুস্ক্রিহ সংস্করণ ISSN 2229-547X VIDEHA

দোসব গজনক খঁতীম শৈবমে 15 কে বঁদলে 16 রপাঁ খিছি । 7ম গজনক
তেসব শৈবমে 18 কে বঁদলে 19 রপাঁ খিছি । 9ম মে দোসব শৈবমে 11 কে
বঁদলে 10 রপাঁ খিছি । 11ম গজনক খঁতীম শৈবক খঁতীম পাঁতিমে 18 কে
বঁদলে 17 রপাঁ খিছি । এহন গজতী গজন সংখ্যা
12.14.15.18.19.20.22.24.26.28.29.30.31.32.34.35.38.42.43.46.47
48 মে মোহো ভেন খিছি ।

ওনা জঁ ভারক রাত কবী তঁ এহি গজন সংগ্রহকে ভুঁচাগ পব পহুঁচা দেনে খিছি
একব ভাৰ । সরঁঠা গজন দ্বাদয কে ছু নেত খিছি আ মোচরাক নেন মজবুব
করৈত খিছি তেঁএ গ আন সংগ্রহ সরঁসঁ রিকুন খনগ খিছি আ একব আখব আন
সংগ্রহক আখবসঁ কতিখাএন খিছি । ভারক কাবশে গ সংগ্রহক "কতিখাএন
আখব" পঠরাক যোগা খিছি । হমব সনাহ খিছি জে একরৈব একবা খজমা কহ
জকব দেখু ।

রৈস তঁ খিছি সরঁ পহুঁ আ হম জাগ ছী দোসব গজনক খোজমে . . .

এ বচনাপব খপন যঁতৰ ggajendra@videha.com পব পঠাউ ।



শির অমাব নস

১

প্রযোজনা :: কথাকার্যক সূত্রগীত

মৈথিলী সাহিত্যমে মহাকার্যক পহিবুক ডাঁহি বতিপতি ভগতক "গীত-গোরিন্দ" সঁ
সন 1723-এক নগিচমে দেখএমে খাএন । জগ ডাহবিকৈ স্পষ্ট রিম্বক কপ



বিদেহ' ১১২ ম অংক ১৭ অগস্ট ২০১২ (বর্ষ ৭ মাস ৭৬ অংক ১১২,

মাদ্রাসা সংস্করণ ISSN 2229-547X VIDEHA

মনরোধ দ্বারা ১৪ম শতাব্দীক মধ্যমে “প্ৰযা জন্ম” স্ৰবপে দেন গেন।
মনরোধ মধ্যকালীন মৈথিলীক বিশিষ্ট বচনাকার মানন জাগত ছথি।

জৌ পদারনীকৌ ছোড়ি দেন জাএ তঁ জ্যোতিবীশ্বর আ রিদ্ধ্যাপতিক ঋধিকাশি
বচনা তত্‌সমসঁ নীপিত ছন। মনরোধক প্ররেশে মৈথিলী কার্য জগতমে
অত্‌যন্ত মহত্‌রপূর্ণ কিএক তঁ “প্ৰযাজন্ম” তত্‌সম পবম্পবাকৌ তোড়নক মাত্র
লৈ সগ-সগ চন্দা না বচিত মিথিলা ভাষা বামাযাঙ্গী আধাবশীনা সেহো প্রদান
কএনক। ডা. গ্রিফিনক মতে প্ৰযাজন্ম মহাকরি রিদ্ধ্যাপতি আ আধুনিক মৈথিলীক
হরনাথ না আব তত্‌কালীন ঋন্য মহাকার্যক যোজক কড়ী থিক। এ
নি নরিরাদ সত্য জে প্ৰযাজন্মক ভাষা ও শৈলী সঙ্গত, প্রাপ্ত, অপভ্রংশ ও
অরহত্‌সঁ রিনগ জনভাষামে বচত পহিব্বক কার্য থিক। বতিপতি ভগতক গীত-
গৌরিন্দক রিপবীত প্ৰযাজন্মক রযাপক প্রচাব-প্রসাব ভেন কিএক তঁ কতৌ
ভাষামে কনিষ্ঠতা লৈ। তঁএ প্রায়: সন্ত সমালোচক এক মতৌ সুরীকার করৌত
ছথি জে ভুতসঙ্গত বামচবিত মানস জকা “প্ৰযাজন্ম” মৈথিলী সাহিত্যকৌ প্ররধ
কার্যক পহিব্বক সরন স্তত্ত প্রদান কএনক। রিদ্ধ্যাপতিক বচনা বীতিকার্যাত্মক
হুদা মনরোধ এ পবম্পবাকৌ তোড়ি জে নরন রিম্র ও শৈলীক সৃজন কএননি
ওগসঁ চন্দা না অরশ্য প্রেবিত ছথি।

স্বভাষচন্দ্র যাদব নিথৌত ছথি “মনরোধ” কথাকার্যক পবম্পবাক আর্বত
কএননি। শ্রুগাবিক কার্য পবম্পবাকৌ রিবাম দহ কহ ও রাতসন্য ভারসঁ যাক্ত
বচনামে বিশেষ কচি দেথেননি। মনরোধ বিষয় আ শিল্প দূ স্তবপব
পবম্পবাক অতিফ্রমা করৌত ছথি। বিষয়ক স্তবপব প্ৰযা'ক লেনপন আ
পবাক্রম তুনকা অপ্রযষ্ট করৌত ছন্থি তঁ শিল্পক স্তবপব চৌপাগ। লোক
ভাষাসঁ সম্পৃকতি সন রিদ্ধ্যাপতিক পবম্পবাকৌ মনরোধ অখুণ রনৌনে বথৌত
ছথি।

দুর্গনাথ না শ্রীশিক শির্দমে “অঠাবহম শতাব্দীক অতিম চবণামে মনরোধ অরশ্য
প্ৰযাজন্মক বচনা কএননি ও অদ্ভুত লোক ভাষাত্মক প্রবাহ ও রিনক্ষণ
সক্ষিপ্ত হুদা সজীর বর্ণনক দৃষ্টিসঁ লোকপ্রিয় সেহো ভেন। পবন্চ প্ৰযাজন্মসঁ



विदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मासिक अंक ISSN 2229-547X VIDEHA

प्रबंधकार्यक विकास पत्रम्पवा स्थापित ले भेल । ए स्थापित भेल करीश्वर
चन्द्रा माक मिथिला भाषा बामायण एर नानदासक बमेश्वर चरित बामायणसँ ।
“ प्रज्ञाजन्म मन्त्रान कार्य तँ ए महाकार्य रा प्रबंध कार्यक श्री गणेश श्री
एकरा ले मालेत छथि संग-संग महाकार्य पत्रम्पवाक सञ्चा रिभाजन एमे ले
भन् कइ अध्यायमे रिभक्त छि । एकर एकठा खाव निर्दन पक्ष जे अठावह
अध्यायमे रिभक्त ए प्रतिक पहिन दस अध्याय मात्र मौलिक आ थाँटी
मैथिलीमे बचित छि । अन्य आठ अध्याय जनभाषा ओ बचनाक दृष्टि
रिवादित तँ श्री जीक मत अशितः सत्य मानन जाए ह्दा महाकार्य
पत्रम्पवाक पहिलक अनपानन प्रज्ञाजन्ममे भेल तकब प्रज्ञा एकर पहिन
अध्यायक उन्नेथमे तँ मंगनाचन ले थिक ह्दा आर्यभाषाक महाकार्यक मूल
रिन्द मंगनाचनक छि एठाम अरश्य भेटैत छि -

प्रज्ञा गोविन्द कूमावि-चवण

जे रन करि सभ विभुवन रवन

हमछ कएन छि मन मड गोष्ट

प्रज्ञाजन्म पविषय ले छोट

कोनपव होएत तकब निवराह

एथन नगै छि अगम अथाह...

मनरोध सोनह कनास निष्ठा प्रज्ञाकेँ एमे कोनो अतिमाव पथपव रिहसित बाधाक
सिले ले रेलोले छथि ।

मनरोधक प्रज्ञा रास्तमे नायक छथि ।



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मासिक अंक, ISSN 2229-547X VIDEHA

‘धर्म’ स्थापनाथीय सम्भामि हागे-हागे क ह्काव भवैरना प्रष्क मात्र जन्म
कथा ले, मात्र श्रुति गाथा ले ह्क समग्र जीवन दर्शनक श्रुतिप्राय थिक
‘प्रष्कजन्म’ भगवत ओ हविरशि प्रष्क कथापव आधारित ‘प्रष्कजन्म’ क
नायक प्रष्क वाम जकाँ गर्भव, नम्भुषा जकाँ मर्यादित सिनेली, सुर्य प्रष्क जकाँ
रातुसनय भवसँ भवन शिशु आ नवमिह जकाँ आकाशित दृष्टि नमिक छथि ।
एमे पतिव्रत क्रांति जे प्रष्क जीवन वृत्तांतक धाव श्रुगावसँ कर्तव्यरोध धवि चनि
आएन । रान मनोरिक्तानक रिशैशिक दृष्टि ई प्रष्कजन्म पतिव्रत रासत्रिक
रान्य शैलीसँ भन महाकाव्य थिक-

गुडकन-गुडकन भिड्कन जाए

जतय अछन दू ग रिकु आकाय

जमना अर्जुन कनना-नाथ

जुगति उपावन दुगन न हाथ

थसन महातक हसन म्हावि

भेन अघात जगतपव चाबि...

डा. चेतकव माक शैर्दमे रसुतत: ओ पौवाणिक महाकाव्य मात्र थिक आकि
महाकाव्य ओ अखन चवि रिद्वत समाजमे रिवादक रिषय रैनन अछि । रिवादक
रिषय ओहो अछि जे अर्थावत अध्यायमे रिभक्त “ प्रष्कजन्म” सम्पूर्ण कर्पे
मौनिक अछि आकि मात्र दस अध्याय धवि ।

समानोचकक मन्त्रय जे हेल्लि म्हादा ओ अम्भवशि: सत्य जे प्रष्कजन्मक बीति
नीति आधार-रिचाव, थान-पान, रीत-रिचावक संग-संग रयरहाव मिथिनाकसँ
प्रभावित अछि । नगैछ जेना प्रष्क कथा गौहनक कथा ले मिथिनाक कोनो
भूभागक कथा थिक । गाम भवि हकाव, च्माउन, तेन-सेनूव, नाच-गान, भदरा,



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक ISSN 2229-547X VIDEHA

सोहब, रठगरनी, सठठा आ ठेपा फेकरी, ठेनरा ठेनगक थेन थेनाएर सन
थाष्टी मैथिन पबम्पवा ए कार्यके मिथिना धवापव जीरन्त क२ देनक ।

म. म. डॉ. उमेश मिश्रक अन्वसाव आ कथा दशम अध्याय धवि श्रीमन्नागरतक दशम
सूक्तक पुरधिक आधावपव निखन गेन अछि, एगावहमक अध्यायसँ अन्त धवि
हविरशि रिष्पुपरक आधावपव निखन गेन अछि ।

प्रा. बमानाथ साक कहै छन्हि- “मनरोध पहिन करि छनाह जे अपन
प्रज्ञाजन्ममे शुंगार बससँ शून्य भक्ति बसमय एकछन्द मे जे बाग तान
प्रभृति गीतक रिषयसँ बहति अछि अपन एक गोष्ट नूतन शैलीमे कार्यक बचना
कएनि । आ छन्द आरं टोपाग कहन जागत अछि पवन्त ताहि दिन आ
गाहिक मेव रूमन जागत छन । ”

बाग-नय, गति, यति ओ नियतिक बचनात्मक मर्यादा जे ह्वाँ अपितु आ
अक्षरशः सत्य जे प्रज्ञा जन्मक महाकार्यय सृजनतामे रहै मौनिक स्थान
जे स्थान संसृष्ट साहित्यमे रेंदर्यास ओ रान्मीकिक अछि । अर्थात् रेंद र्यास
ओ रान्मीकिक हृद्म मनरोध मैथिली महाकार्यक शिनाका प्रकष छथि ।

स्मन जीक शैर्दमे प्रप्रति रर्पन, भने ओ जड़ प्रप्रति होख अथवा मानर
प्रप्रति मनरोधक बचनामे सहज, स्वरोध एरं हृदयार्जक रैनन अछि । संज्ञा,
प्रिया विशेषण, नामधातु ओ अन्ध्रनिक रिनम्पण प्रयोग एमे भेटैत अछि ।

मैथिली कार्यमे गीत-शिल्पक जे पबम्पवा छन तकवा नागि सरतंत्र कथा-
कार्यक पहिन प्रयोग “प्रज्ञाजन्म” मे भेन । रौन साहित्यक दृष्टिसँ जौ
देखन जाए तँ प्रयोगकेँ रादक धवातनपव आनि महाकार्यक कप रेथामे रौन
मनोरिज्ञानकेँ पूर्ति: स्पर्श मनरोधसँ पूर कियो नै क२ सकनाह । शैर्द-शैर्दमे
प्रराह हास्य स्पर्शी ओ सजीर अछि । तँ दशम अध्याय धवि उन्तव आधुनिक



বিদেহ' ১১২ ম অংক ১৭ অগস্ত ২০১২ (বর্ষ ৭ মাস ৭৬ অংক ১১২,

মানুস্কিহ সংস্করণ ISSN 2229-547X VIDEHA

কার্যকর নেন সেহো ঋণগামী তাঁ বচনাকানমে একব মহত্বর কী হএত এ মখনক
বিষয় থিক।

তঁএ এ সত্য মানন জাএ জে মাত্র এক চন্দ্রদমে নিখন সমস্ত মহাকাব্যক শীলক
এ মৈথিলীক প্রয়োগ গ্রন্থ থিক জে ভাষা বিন্যাসক সঙ্গ-সঙ্গ রিম্বরক মৌনিক
স্পর্শ থা বান সাহিত্যক নেন ঋখন ধবি উপযোগী ঋষ্টি।

২

স্মরণ

“স্মরণভা”ক ঋর্থ হোগড় রিজবী জেকবা প্রবৃদ্ধ জন তড়িত কহেত ছথি। হম
কোনো লৈসজ্জিক করি লৈ, স্মরণিক ভাৱনা করিতাক কর্পে ঋভিব্যক্তি ভেন জেকব
প্রাসঙ্গিকতাক নির্ণা পাঠকগণপব চুন্হি।

হমব কহর মাত্র গএহ জে হমব এ পহিবক প্রয়াস থিক ঐমে কার্য নক্ষণা ও
ব্যজনাক ঋনপান ভেন রা লৈ ঐ বিষয়মে হম কিছ লৈ কহি সকেত ছী, মাত্র
গএহ কহরাক নেন নীতি সঙ্গত হএত জে জগ ভাষাক বান কানহিসাঁ হি হথামে
নগা কহ বখরোঁ ওগ ভাষামে ঋপন কিছ ঋভিব্যক্তি পাঠকগণ নগ পবসি বহন
ছী।

হমব জন্ম ঋপন মাতক রেগুসবায় জিনাক মানীপব মোড়তব গামমে ভেন।
কহিও এ ভূমি মৈথিলীক প্রাজন করি ঋজবব বহমান হাসমী জীক কর্মভূমি
ছন। হমব পিতা মৈথিলীক চর্চিত ঋশুকরি কানীকানত মা ‘বুচ’ থা হাসমী
জীমে রঁড ঋত্মীয়তা ছননি। মাএ চন্দ্রকনা দেবী সেহো মৈথিলীমে কিছ পণ্ড
নিখনে ছনীহ। বানকান মাতকমে রীতন, তকব রাঁদ পেভক গাম উদয়নাচার্যক
ভূমি কবিফনক মাঠি-পানিমে বমি ঋগা রঁডেত গেলোঁ। পিতাক করিত্রক



विदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

कावर्ण महाकरि खावसी, चन्द्रभानु सिंह, श्रवसी श्री. नरेश कुमार बिकन, श्री.
बिद्यापति सा, श्री. बाबू हनुमान चौ. बाकेश्वर पवित्र भवन। तब पवित्राय थिक
अ छोट-छोट प्रतीति।

अ बचनपत्र अपन मंतब ggajendra@videha.com पब पठाउ।

३. पद्य



३.१

बैबबाय साह २



महेश कामत



३.२

बिनीत उपेन



विदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,
मान्यविह संस्कृतम् **ISSN 2229-547X VIDEHA**



३३.९.

जगदीश प्रसाद मल्लिक



अरुण मयंक



३४.९.

बाजदेव मण्डल



उमप्रकाश सा



३५.९.

शिर कुमार सा



किशन कावीगव



३६.९.

मो. प्रव लाल



चंदन कुमार सा



विदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,
मासिक संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA



३.१ १. कपिलेश्वर बाउंठ

माहलाय २.

जगदानन्द सा



‘मव’ - एव एहन किक्क छी ? / छेना यदव छ हेप्पी ? ३
ब्रम्हाव सा (कहैया) - देशे भक्ति

बाजेश



३.४.१.

जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिर’ - की भैठैन आ की हेलो गेल



(आमे गीत) - (आगाँ) २.

नारायण सा - एखनहँ जकडन छी/ एकता



१.

बैववाय साह २



मन्नी कायत

१



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA



बैबबाम साह

जन्म- 21/11/1973

पिताक नाउ श्री जीरड साह, गाम- नौखारौखव, पवानय- ठठनी, भाया-
घोषवडीहा, जिला- मधुबनी (बिहार)

संप्रति- अधिवक्ता, जिला न्यायलय, मधुबनी

सांसद प्रतिनिधि, संसदपर्व ।

द्वन्द्वक मसधाव

एकठा एहेन नोक जेकवा कबिया आखवसँ भेटै ले

एकठा एहेन नोक जेकवा हाथमे आखराव अछि ।

एकठा एहेन नेना जेकवा पेठमे अछि ले



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मासिक संस्करण, ISSN 2229-547X VIDEHA

एकठा एहेन नेना जेकवा खेनौनाक भवभाव अछि ।

एकठा ओ समाज जे खागत नित मारि अछि

तँ एकठा ओ समाज जेकवा हाथमे तकखावि अछि ।

एकठा ओ जाति जिनक रौखाक पएव परिव्र अछि

एकठा ओ जाति जेकवा दुनियाव पापक भागीदाव अछि ।

देखबामे करबामे हम सब डी एक्क भूदा

हमबा मोनमे आगयो द्रन्दक मनभाव अछि ।

२



झनी कामत

झनी कामत

५



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,
मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA
रैठौ

रैठौ खलिगोप ले रवदान खडि ।

तिनकक बिहाबिसँ

रैठौकै ले रैठौ

ए डी घबक नम्मी

खकवा ले समान रैठौ ।

ले खडि ए रौम

ले खलागी

शेजिक ए प्रतिकप खडि

खकवा नङ्ग शोपित रैठौ ।

दुर्गा, कानी, नम्मी, सबस्रती

संगे सीतो खगमे समागत खडि

तिनकव आ 'चनमे लमव कालि खडि

खकवा ले कर्नाकित रैठौ ।



बिदेह ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

२

दलेजक आगग ।

स्नथून ये सान्ना

हमछुं छी किनको रैठौ

हमछुं किनको द्वाब छी

हमछुं ९ महिना किनको कोणथमे

आस आ ममता सँ सिंचन छी ।

ले रूँसियौ आन हमबा

हमछुं एगो मायक श्रमि छी

नह क२ आगन छेलौं

आनि एगो कि,

माय क२ छोडि, माय नग जाग छी,

राबू छोडि राबू नग

यएह अबमान रँसनड हम

सपना सजेले एनौं हम ।

राबू हमब अछि गबीर

रैठौक कग्यादान क२ क२



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संकेत ISSN 2229-547X VIDEHA

तुँ बाजो जनको भुन गेन हुन हकीब

जरै दिवक दुँकड़ मेगिप देवकनि

तुँ कि आगाँ चाह बथेत छी ।

दहेजक खातिब कतनो रैब 'खल' हमबा जरैरै

तगयो ले 'खल' अपन

एक रितक पेठक अग्लिके रूना पएरै

छोड़ूँ ग नानच, मोह

अछ' तुँ ककरो रैछी छी ।

आगक ले तुँ कालिक चिंता कक

घबमे रैछी अछि अछक जरान

अपन ले तुँ ओकब पवराह कक ।

३

ओग पाव

तुँ रैता रे मानी

कि छै ओग पावमे

माय, राप, भाग, रहिन

अपन, पवाया सब नाता, बिश्ता



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

मिनते ७५ संभावमे ।

सुले छिई बाजा तूथ या बक

छोड पडते सबकेँ अ देहक संग

तू रैता रे मानी

रिन देहक रएह मनाव

मिनते ७५ संभावमे ।

ले मजिनक छिई खरब

ले वस्तुक पहचान

तू रैता रे मानी

अन्हाव बाह पव चलेत हम

एकोगो बाह रैना पैरै

७५ पावमे ।

४

नेताजी

सन्देश निरौसमे निपठन नेताजी

हाथ जोडि, नतमस्तक नेताजी

जूरान खामोशि, अरौध नेताजी



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानकसंख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

देखियौ आगन हमब गाम

हमब पानन हाब, नेताजी ।

माँ'गै लेन भूख

आमि नगौले नेताजी

भित्थक नाम पब

खून माँ'गैत अछि, नेताजी ।

कतेक सानसँ हम सभ चूसागत छी

आरँ रँस पागन अछि देहमे

यौ नेताजी ।

रू'मि बहन छी कबहुत अहाँ'क

सहेद रम्हक भूतब

काबी मन अहाँ'क नेताजी ।

कतलो आग छी तगयो

दैतक खून पेठ ले भरित अछि

अहाँ'क नेताजी ।

जो फेब पकड़ । देरँ रँदूक



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,
मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA
हरनदाव रैन

हमरे सभ पब दहावरैँ खहाँ

यौ नेताजी ।

३.

पहिन रैबखा

छू क२ हमब मनकैँ

गुदगुदैनक ओ पावसँ

हुनक हराक मोका हमबा

अपन शीतनताक मनावसँ ।

छिठका बहन हुन चाँद-चाँदनी

जे अपथपैनक हमबा गानकैँ

अपन ममतामय द्वावसँ ।

समयैक क२ ईन काबी मेघ

नहनाक२ गोन अग जहाँ कैँ

अपन होठक मिठास सँ ।

छू क२ हमब अंग-अंगकैँ

चूगम क२ धवतीक कण-कणकैँ



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संख्या **ISSN 2229-547X VIDEHA**

प्रकाशक सह लेखक

अपन सल्लहक रैबथा सँ ।

उ

किसान

होगत भिनसरे

अजरे नजबा सभ गामक

कोग पकडि रैददक जूथा

कोग थाय रोठी संग नूनया

दौडल अपन काम पब ।

सरे पवानी मागठ संगे

अपन जीरन रितारैए

रैछा तँ रैछा

रैडको अहिना पोसागए ।

दिन-बागत मेहनत कगब ए

धवतीक कोगथ सँ अन्न उपजारैत अछि

ले कोनो थकान अकबा

ले ककरो सँ शिकागत अछि ।



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संकेत **ISSN 2229-547X VIDEHA**

एहन निर्मल छुट्टि

हमर किसान जिनकर

प्रतिदान आ सतोष

संस्कार आ पहचान छुट्टि ।

ई बर्नापब अपन र्थतब ggajendra@videha.com पब पठाउ ।



रिनीत उपेन

१

बाजनीति

कतेक बास गप करैक छुट्टि अहाँ सँ
जिनगीकै नह कइ
घब-राहब कै नह कइ

साहिल कै नह कइ

बाजनीति कै नह कइ



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानचिह्न संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

एकठाँ गप प्रुँडेत छी

की हमब आपन सरँहक जिनगी

बाजनीति क रिसात मे जकडन छि

शेतरँजक मोहवा जना हम सब छी

जे जेना थिनाड ी चनत तना हम चनरँ

घब मे बाजनीति

भाय-भोजायक-भारौक बाजनीति

रँहिन-रँहिनय- सादू क बाजनीति

कका-काकी-रौराक बाजनीति

थाना थागक, रँड ी-भतक बाजनीति

थेत मे बाजनीति

रँष्टि-रँष्टेदाब, थेत-पथाबक बाजनीति

पगन पठैरौ, रिंथा रँनगक बाजनीति

हमन चवारँक, हमन चोवारँक बाजनीति

हमन काँटेक, हमन रँचरौक बाजनीति

ऑफिस मे बाजनीति

प्रमोशन, डिमोशनक बाजनीति

कर्मयोगी, अकर्मयोगीक बाजनीति

रौंसक आगाँ-पाछाँ करैक बाजनीति

तेन नगरँक बाजनीति

ह्रदा, एकठाँ गप मन मे आरँेत छि

आ सब बाजनीति कोन बाजनीति छि

आ एकब स्थान कतए छि

जखन साहित्यक बाजनीति धवगब भँ बहन छि

साहित्यक नाम पब सबकारी संस्थाँ पाग रसूत्रैक बाजनीति

रँष्टी-रँहिनरँ रँदनाम क आपन धौंस आ रँत्रैकमेनिगक बाजनीति

एनजौं रँनाक संस्थाक नाम पब पाग उघारँक बाजनीति

नाँठक, गीत-नाद, कना आ संस्कृतिक नंगा नाच देखरौक बाजनीति

जखन एहन बाजनीति दमगब छि

तखन देशक विकास आ शासनक बाजनीतिक स्थान कतए छि

गंधी आ अरँडकबक देसमे आहो बाजनीतिक हिस्सा छि



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मासिक संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

जेकवा कोनो स्कूलमे ले पठ १७न जागत अछि
हुदा हम रा अहाँ सब ननासँ योष्टि-योष्टि क२ पीने छी
ताहिँसँ बग-बगमे अछि बाजनीति ।

१

भाषा

भाषाक एकठाँ गतिहास होगत अछि
जहिना-जहिना दंड-पन रँदनेत अछि
तहिना-तहिना भाषामे सेहो रँदनाँर आँरैत अछि
ओहिना कोस-कोसपव भाषा तँ रँदनिनेत अछि
हुदा भाषा की होराँक चाली, एकव उँतव के देत ?

भाषाक रिशतीकवण एकठाँ शिद्ध अछि
जेकवा नेन रिद्वानजन गहीब-गंजीब अछि
कियो हिंदीक पाछाँ भाँगेत अछि
केकरो अंग्रेजीक नशा चढ़न अछि
ओना हिंदीक लोक हिंलिशिँसँ तंग अछि
हुदा मैथिलीमे कोनो 'मैथिलीश' क कोनो काँसेप्ट ले अछि

भाषाक परिवर्तन रा परिवर्जनक गप रेंसी गंजीब अछि
परिवर्तन गतिशील अछि आ संस्कृतिकवण सेहो एकठाँ शिद्ध अछि
एकठाँ भाषाकेँ दोसब भाषामे घुसपेठ आ अंतर्गतता कोनो हुदा ले अछि
अंग्रेजी आ हिंदीक आधिपत्य स्वीकार कबहि रेंना संस्कार जखन बग-बगमे रिचवण
क२ बहन अछि
तखन अहाँ की क२ सकैत छी आ की कहि सकैत छी ?

मैथिलीक रिद्वानजन जखन घरमे हिंदी रा अंग्रेजीमे टिपिब-टिपिब करैत अछि
नंद-हंदसँ जागत, नंद-हंदसँ स्तुत
जकब हव साँसमे अछि नंद-हंद
प्रगतिशील कलारैक नेन पव-गतिक रौंठपव अछि
तखन भाषारिद कतेक गंजीब भ२ सकैत अछि, एकवा आँशिका जता जा सकैत
अछि ।

३

शिका



बिदेह ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२)

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

दुनियाँमे अछि रैड बास रीयाबी

माथ दुखा बहन अछि केकरो तँ कियो अछि पेठे गूड़-गूड़सँ तंग

आँसि नोब रहि बहन अछि तँ कानमे दर्द अछि केकरो

सूगब रैसी भेन तँ जिनगी भवि योँ नै खा सकैत छी

सूगब कम भेन तँ तबते अहाँकेँ गूनकोज पीरै पडत

केकरो हाँग रैनड प्रेशेब अछि तँ केकरो नो

कियो एड्ससँ ग्रसित अछि तँ कियो केँसबमे जकडन

जतेक बास रीयाबी अछि ततेक बास दरागयो

कियो नीम-हकीम नग जागै तँ कियो कबालै

एनोपेथी, होमियोपेथी आ आयरुदिक अनाज ।

दुनियाँ भविक डाक्टर आ रैडानिक

नर-नर रोग आ ओकब डुठारैक दरा रैनारैमे नागन अछि

झुदा, हमबा जानन एकठा एहन रीयाबी अछि जकर अनाज नै

आजुक राजावरद, तथकथित प्रगतिशीनराद जूगमे

राप करै रैठा पब शिका

रैठा करै राप पब शिका

माय करै प्रतोह पब शिका

प्रतोह करै माय पब शिका

ननद करै भोजाग पब शिका

भोजाग करै ननद पब शिका

जतए देखि ओतए शिके शिका

घब मे शिका, ऑफिस मे शिका

रास केँ शिका, कर्मचारी केँ शिका

किले मे शिका, रैठे मे शिका

रौद मे शिका, मेघ मे शिका

पानि मे शिका, दूध मे शिका

प्रेम मे शिका, घृणा मे शिका

दोस्ती मे शिका, दुश्मनी मे शिका

सँस मे शिका, पनक सपके मे शिका

थाग मे शिका, पीर मे शिका

रूँते मे शिका, स्रुते मे शिका

नोटे मे शिका, खजना मे शिका

शिके शिका, सनातन शिका

शिका ब्रह्मा, शिका रिश्ट, शिका देवो महेश्वर



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानुसिंह अस्त्राल ISSN 2229-547X VIDEHA

शैका साप्तात पवम त्रौलि, तयै त्री शैकायै नमः ।

जोब सँ रौजु
शैका बहए मन मे
शैका बहए तन मे
शैका थाएरै, शैका पीअरै, शैका सुतरै, शैका मृतरै
एक-दोसब पव शैका कवरै, हम ले प्रेमसँ बहरै
ओम शैकाय नमः ।

8

सृति रोग

हमब सृति रोग भू बहन अछि
अ गप एतेक धवगब अछि जग सँ
हम कतेको काज सँ रँवजि जागत छी
एकबा सँ हमबा कियो चरियारै ले अछि
आरै हमब धर्म भू गेन अछि, काज कम रँपवाहिट रँसै ।

हमब जे मनक म्हातारिक ले होगत अछि
ओकबा नेन सीधे हूगस रौजि दैत छी
जे हमबा कोनो काज-धाज थान ले बहैत अछि
अ कहि क२ हम घब संगे अहिंस मे दयाक पात्र रँलैत छी
एकबा सँ देहक आवाम भेटि जागत अछि
किएकि हमब देह आ मोन आरै कामचोब रँनि बहन अछि ।

कालि कार्याय मे हमबा एकठा भावी-भवकम काज देन गेन छन
ओतेक भावी ले जतेक हम रँनि क२ बहन छी
महत्त्वपूर्ण गप अ जे आरै हम बुँद । गेलौं मन आ तन दू सँ
किए कि हमबा आरै कोनो प्लानिंग ले अछि जिनगीक
तगसँ दोसब दिन कहि देलौं जे हमबा थान ले बहन ।

ओना अछि "सृति रोग" क पाछाँक खेना रँड पैघ अछि
एकब आव मे ले जानि कतेक बास गप अछि
कोनो नीक गपक नेन नेन कोनो आहँक जकबतो आरै ले अछि
म्हदा अधनाह गप तँ सृति मे मृत ले होगत अछि
आग धवि हमब कक्का, काकी, बाबू, माय, रँहिन-डेयावी
की केने अछि, की रौजन अछि, सभठा थान अछि ।



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,
मानकीकृत संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

हम जेना मे जेना ककरवा कक्षा मे सुनारैत छलौ
तहिना हम सबठा गप सुना सकैत छी
जे कियो हमवा संग नीक काज कवनक
ओकरा तँ जकर बिस्ववि गेन छी
हुदा अधनाह काज, अधनाह गप
सबठा खान अछि
हमवा सेहो गपक खान अछि
जे अपना हिसारै हमवा संग नीक कवनक
हुदा हम ओकरा अधनाह नैलौ आ बूमलौ ।

३.
प्रश्न

अहाँ कै बूमन अछि एकठा प्रश्नक उत्तर
अहाँ प्रश्न सुनि कह कहर जे ए कोनो प्रश्न अछि
अहाँ बूमरक छी जे एहन प्रश्न करैत छी
बूमि गेलौ जे अहाँ पढ़न-लिखन भेनाक बादो अज्ञानी छी

हुदा, हम सत कहैत छी
एकठा प्रश्न हमर आँखि कै चोखवा बहन अछि
हमर शातिकै नाश कबए मे नागन अछि
हमर नीन ले होगत अछि
ओ प्रश्नक उत्तर ताकि मे रीताह भू बहन छी

हमर प्रश्न रैड सोम अछि
हुदा ओकर उत्तर ततरे ओसबाएन अछि
तग सँ कतेको बास प्रयने कबरक बादो
हम ओकरा सोसवारै मे सहन ले भेलौ
ओसबाएन आ सोसबाएन शिद्ध मे हमर हवा गेन छी

प्रश्न कतेको बास भू सकैत अछि
अहाँ खागत किछ छी
अहाँ रोजैत किछ छी



बिदेह ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२)

मानुषीह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

अहाँ गाँव कि ए दैत छी
अहाँ हूँस कि ए रँजैत छी
अहाँ दोष आरोपित कि ए करैत छी
अहाँ पागल नैन हाँ-हाँ कि ए करैत छी
अहाँ केकरो रैठौकेँ रँदनाम कि ए करैत छी
जखन अहाँ एक दिन मबरै कवरै

अहाँ केँ बूझने छैत जे मबनाक रौद अँतिम संस्कार नैन
रँस चाब हाथि धवती चाली आ ओकब दाम आना मे होगत अछि
अहाँ जग दाममे मकान रँनरौक नैन जमीन बजिस्ट्री करैलौ
ओग दामक तुननामे आ किछु ले अछि
रूदा जहिया श्मशान ओग चाब हाथ जमीनक दाम बजिस्ट्रीव अँफिस तय कबए
नागत
तहिया अहाँ केँ कोन ठाम स्थान भेटैत, आ कनी सोचू
यए प्रश्न अछि जे हमबा देह-दिमागकेँ सुन कए बहन अछि
अहाँ की सोचए नागलौ, कनी एकब उतुव दिख ।

३

नामर्दक शहरमे

आग जग कानमे हम सब बहि बहन छी, ओ नामर्दक जग अछि
हमब करितामे नामर्द कोनो जाति ले अछि
रा कोनो मनुष्यक शारीरिक अरुणक उपहास ले कएन जा बहन अछि
आ छी मानसिक दिरानियापनकेँ नः कः एकठाँ शिष्ट

कहैत छी जे हम रैथिक भः गेलौ
ग्लारैन रिनेजक काँसेप्ट आगू बाथि बहन छी
ड्रिष्टव हेल्सर्कक जमानामे बहैत छी
रूदा बहैत छी नामर्दक शहरमे

आग सांस्कृतिक आ सामाजिक दिरानियापनक आ हान अछि जे
कोनो मंत्री जातिकेँ कोनो तबहै अहाँ सहायता ले कः सकैत छी
कोनो दलित जातिकेँ कोनो तबहै अहाँ सहायता ले कः सकैत छी
कोनो हासियासँ रँहबाएन लोकक सहायता ले कः सकैत छी

ए नामर्दक शहरमे जौँ अहाँ अपन सद्गुणता देखाएँ
अहाँक चरित्र, रारहाव, मेन-जोनक प्रति
रिषयमन छैत, गाँबि-हजरीत छैत



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मासिक **ISSN 2229-547X VIDEHA**

साहित्यिक विद्वान ड. द. नामसँ अहाँक माय-बैलिन एक कबत

अहाँकै ले बूनाएन हएत जे हनकब शिद्धकोषमे केहन-केहन शिद्ध अछि
केहन-केहन सोच अछि, केहन-केहन राका अछि
उना चिन्ताक कोनो गप ले अछि, जेँ अहाँ अपना दिससँ नीक छी
जकरा नग जे शिद्ध हएत, जेहन संस्कार भेटैत हएत, जेहन मायक दूध पीले
हएत
ओकरासँ रूढवागक ताकति ओकरामे ले छै
यएह ओकब अखनी कप छै, जे बहैत अछि नामर्दक शिहब मे ।

ई कलनापब अखन यँतब ggajendra@videha.com पब पठाउ ।



१. जगदीश प्रसाद मल्लव.



अ. अ. मर्याक



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,
मानसिक संस्कृतम् **ISSN 2229-547X VIDEHA**



जगदीश प्रसाद मल्ल- पाँच गोट गीत-

सूखने मे सभ...

सूखने मे सभ पिछड़ा बहन छै

झूठ-कान सभ तोड़ा बहन छै ।

सूखन जानि पएव जतऽ रोपे छै

काह-कूह सभ ततऽ जमन छै ।

सूखने मे सभ..... ।

सूखन धवती जतए पड़न छै



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मासिक संचालन ISSN 2229-547X VIDEHA

सन-सन नजबि ततए जाग छै ।

सुखने मे सभ..... ।

खन-जान बरिच्छ मानि बूझि

भोव-भुवकरी सूर्य बूझि छै ।

सुखने मे सभ..... ।

दीनक दिन केना....

दीनक दिन केना कइ चढ़ते

मन कहाँ कहियो मानै छै ।

बहुते काजे दिनो काँटि-थोँटि

बढ़ती कहाँ तानि पड़ै छै ।

दीनक दिन केना..... ।



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

बिबु तनने घोकरि-मोकरि

जाड़ माघ अरैत बहे छै ।

छेतक छेत छेतोनी छति

सिब जेठ धड़ित बहे छै ।

दीनक दिन केना..... ।

तीन जेठ एगावहम माघ

तीनू लोक देखेत अने छै ।

देह-पसेना सबकि चाँटि

माघे ने माघो कहै छै ।

दीनक ि दिन केना..... ।

कोद पकड़ि ।

कोद पकड़ि कोद ी कहै छै

कोद ी या कोद पकड़ने छै ।



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,
मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

केना कऽ हऽरै-हऽरै

रेहे-देहे पकऽले छै ।

कोद पकऽ ।

देखऽरौमे नहि देख पऽ छै

सुनऽरौमे नहि सुनि पऽ छै ।

ठीं-पीड ! ठीं-पीड !

योव-योव मन रौनो छै ।

कोद पकऽ ।

नहि कहियो हऽरै-हऽरै

सथि-सथि आशा तोड़ले छै ।

सकावथ भऽ आकावथ रनि-रनि

दिन-बाति अनियाय करै छै ।

कोद पकऽ ।



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,
मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

मृत यो, जान समाज....

जान समाज महजान रैनन छै

हाना रैन पबिराव सजन छै ।

जान समाज महजान रैनन छै ।

रिन नप हाना रैनन छै

हाना मध्य खाना सजन छै ।

हाना रूनि खाना नपकि

खानामे जा-जा हँसै छै ।

मृत यो, जान समाज..... ।

जान गमाएँ खेन खेनि

रैछैक नहि उपाए करै छै

उपव कूदि-कूदि हानि चाहि



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

गोबिया-गोबिया ग्रहावि कवे छै ।

मौत यो, जान समाज..... ।

मौत यो, देख पानि....

मौत यो, देख पानि तखन हूनाग छै

कोद १ बनि काज कप नगे छै ।

देहक पानि तखन हूनाग छै ।

कोद यै ले हूना-हूना १ संग

बौहि पकड़ि संकल्प हूनि छै ।

देहक पानि..... ।

जाधवि मन संकल्पित नहि

तारे केना उद्धश्य करै छै

संकल्पे ले तन-मन रीच



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

सीमा दगत डेग बढरै छै ।

मीत यौ, देहक पानि..... ।

काम-धाम जहिना बने छै

तहिना ले कर्म-धर्म कहलै छै

धर्म ले धारण करैत

पथ-पानि चढरैत चले छै ।

मीत यौ, देहक पानि..... ।



बिदेह ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,
मानवसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



आनन्द मर्याद

करिता

कनियार्क थायन नगरौ नै कउन एका सान
भु गेन कनियार् मास्टुबीमे रैहान
जहिया सँ भेनी ओ टिचव रैदनि गेन ठमव ह्चव
पहिले करै छनौ मानिकक जी हज्बी
आर रैनि गेनौ घबक रिह्यी
हम करै छी घबक काज
रूठिया करैए रैचाक पबिस्काव
रूठरौके छै आर देखनाहव
सोछै रूठिया कबितौ आरथे कनिया

काठए तँ नै पडितए घुस्कनियार्

ई बचनपव अपन मंत्र ggajendra@videha.com पब पठाउ ।



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



१. बाजदेर मण्डन २. उमप्रकाशि ना

५



बाजदेर मण्डन

करिता-

अकान

पवसान तँ रचनौ रौन-रौन

ऐरौव ध२ नैनक अस्व अकान

थानी पेठे ले हूँते गान



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संकेत ISSN 2229-547X VIDEHA

संरक्षक भवन अर्द्धि हान-हैनान ।

हव-हव प्रवरौ रैति बहन अर्द्धि

कानि-कानि काका कहि बहन अर्द्धि -

सब-सब आगि रैविस बहन अर्द्धि

धानक रीखा सड़कि बहन अर्द्धि ।

पियाससँ धवती हानि बहन अर्द्धि

मरेशी दूरिकै चाँटि बहन अर्द्धि

कतेको माससँ ले खसन एको रून पानि

की भेलै केना भेलै से ले जानि

अपनहि उजावनरक अपन सुख-छैन

गाछ कठौनरक हानि-हानि ।

जनक महत रूमए पड़त

ले तँ अ दूख सहए पड़त



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

कान चढ़ए तँ बिगड़ए बानि

घन सँगे सतुखा देनहक सानि

चाकल पसवन घुसखोबरौ पापी

खसन पड़न अछि पूवा चापी

ठँक-ठँक तँकैत अछि अखारै खेत

पानि बिन उड़ैत अछि सूखन बेत

पछिना कबजामँ हान-रैहान

एरैव बिका जाएत देहक खान

लै रोपन जाएत एको कष्टा धान

केना क२ रँचत सानभवि प्राण

डुपव अछि धूवा भवन आसमान

नीचा अछि परिवारक मान-समान

लोक कहैत अछि -

धीबज धवह सबकाव देतह

हम कहैत छी-

तेजगव लोक सभँ छैतह



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

बहरै छुछे केब छुछे

आमजनकेँ कतौ ले कियो पूछए

रौतब कतए जाएँ यौ भाय रेंगू

पबदेशेमे धन नेत डेगू

ले खेराक नीक आ ले सुतराक ठीक

जेरैसँ पाग नेत उचक्का सपटि-सौ'क

कियो नेत रेंचि कियो नेत कनि

ठामहि बहि जाएत कपाव पबक शृंग

कतए रेंचरँ कतएसँ खानरँ

पाग ले बहत तँ कथी नह कन खानरँ ।

आरँ अछि आशा अगिना जेठ

यो अन्नदाता घटा दियो अन्नक रेठ

सभ काठि बहन एक-दोसबकेँ घेठ

केना कन भवते सरहक पेठ ।



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

मनमे छन छान

बिचारै कवर रिख छ

धर नैनक अकानक छान

आरि केना कऽ कवरि निबराह

केना कऽ पढ़तै बिद्या-प्रता

फाँटन रसुव आ दुँठन जूता

देहमे ले रचन आरि तागत-बूँता

दुखविपव कनेत अछि भूखन कृता ।

सभमे परिवर्तन सभमे उथोन

ठामहिपव अछि हमर गहम-धान

धन्य हे ज्ञान धन्य रिज्ञान

हमरो दिस दियो एकरोव बिद्यान

रएह खेत-पथाव, रएह खबिहान

घरो छै दुँठने कतए देखरै मकान

कतए रैचरै कतए बखरै धान



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

ले छै रँजाव ले छै गोदाम

रएह खाद-रौखा ओहिना पानिक दाम

रएह हड-रँडद ओहिना रँथान ।

यो सबकाव कक जनक प्ररँध

हएव उँठते धवासँ धानक गन्ध

दमकन, ननकूपक कक उँपाए चन्द

धाव-नदीपव कक तँठरँध ।

हम छी एँ अँचनक किसान

देशक रँदुरौक अँडि मान-समान

रँचेरौक अँडि सरँहक प्राँ

भूथसँ दिअरौक अँडि त्राँ

हम कवरँ संघर्ष ले छी रँजान

हएवसँ गाएँ कजबी गान ।



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,
मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

२



उमप्रकाश सा

कविता

जागन आँखि केव सपना रैनन जिनगी
फहबन आँखि केव सपना रैनन जिनगी
फाँटन छन करेज हम सोरैत बहलौ
कसन सुथक आँखि नपना रैनन जिनगी

गजव

चमकन झूथ अलकै अजोब भू गेलौ
अधबतिअ मे नागै जेना भोव भू गेलौ
काजब बूमि हमबा लैन मे रसा निथ



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानुसिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

अहाँक लेना माकक चितछोव भऽ गेलै

अचरै कौआ बहि बहि मोव आँगन मे

जानि अरैया अहाँक मोन मोव भऽ गेलै

लेनक गशीवा दैए प्रेमक निमन्त्रण

आरि नाजे कहुँआ कऽ रँग छोव भऽ गेलै

रँगन नाम अलीक "ओम"क प्राण-डोरी

अहाँक आस मे करेज चकोव भऽ गेलै

सबन राँकि - १३. रँप

ई बचनपत्र अपन मंतब ggajendra@videha.com पब पठाउ ।



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानसिक संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



१. शिर अभाव सा



किशोर काबीगव

१



शिर अभाव सा

अस्मिन्त्रक प्रश्न ?

ककवासँ कहँरै के पतियेते अपने तबंगमे भोजन दुनियाँ

रैड अथाह सूर्यक अरि अ श्रुत रैनि गेलै लोबप रनियाँ

मोक्षित लोबि-लोबि ठाँठ रैनएलौ



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संकेत **ISSN 2229-547X VIDEHA**

खब थोड़ा ठिठली नः गेलै

हाठन आँचबसँ कोना कः सँपलै

थानी चिन्ताब रैपद भः गेलै

ब्रह्म दृष्टिसँ बाकस गडकः चिह्न-चिह्न कः कानए बनियाँ

कर्मक नाहमे भेलै भोकलब

रामे हाथे पानि उँपल्लौ

भदरबिहमे पतराबि हवाएन

दहिना हाथक नग्गा रैनएलौ

सन्तौ आँधु पानि खा गेलै, कोना रँजते दर्दक हवनियाँ

कडेबमे रिमनाबि उँगन छै

थनथन पाँक पएव धसि गेलै

अन्हाब मोनिमे कडमड कः बहलौ

बिन्न जाले ठेँगड १ हसि गेलै

कोनो कः हमरा रौहब कबते लोब चाँटि हहबए सोनमनियाँ...

किड डिदीक तबमे दरि कः

पद्म अना अकसक कः बहलौ



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संख्या **ISSN 2229-547X VIDEHA**

भावी भेल अकर्मक सोती

ओकरे धाबमे गर्गा रहलै

घनन दबिदा ताँडर कबतै,

अस्मित्वक- प्रेम रैनन पैजनियाँ...

२



किशन कारीगर

घोषाडज आ उपबाँडज

(हस्त करिता)

हम अहाँ के गविअरैत छि



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संकेत **ISSN 2229-547X VIDEHA**

अहाँ हमबा गबिआउ

रैमतनरै के कक उपबाँज

धक्रम-धक्री कक थूम घोघाँज.

कोने काजे कहाँ अछि

आरै ताहि दुआरे त

आरोप-प्रवारोप मे ओमबाएन बछ

धक्रम-धक्री क कक उपबाँज .

श्रेय नेरौक होड मचन अछि

अहाँ जूनि पछाँउ

कंठोरसौ मे रैनन बछ

हेल्सर्क पब कक थूम घोघाँज.

मिथिना-मैथिन के नाम पब

अहाँ अप्पन बोठी सेकू

अपना-अपना चक्रव चानि मे



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

वर्ग-विवर्गक गोष्ठी हेतु.

अहाँ चक्रव चाँनि मे

लोक भ्रम ओसबाएन अछि

अहाँ हेल्सर्किया हूप रैनाड

अपनो ओसबाएन बद्ध हमरो ओसबाड.

अ काज हमरी श्रम केनोह

नहि नहि एकरा येँ त हमबा अछि

धू जी अ त हेल्क आ.अ.जी छि

अहाँ माफ़ १ कि एक नहि मंगेत छी ?

रैमतनरँ के रँड-रँड रँजेत छी

त अहाँ मने की हम छुप बद्ध ?

हम की एकरा बति कम छी

हेल्सर्क हविछाड अक्रम-अकरी कक.



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

आदि ले री रीठु रीठिया काज

गावि पबद्ध, नगाडु कोनो भाजि

कोनो झाडा हबिछोठ नहि कक

सभ मिनी कक उपबाडज आ घोघाडज.

ई बचनापव अपन मतब ggajendra@videha.com पब पठाउ ।



१. मो. प्रब हसन २. चंदन कमार सा

१



मो. प्रब हसन

गीत



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानकसंकेत **ISSN 2229-547X VIDEHA**

यो. ग्रंथ रूप

संछाँ किसानमे हमरी बँकनेन

अंगना सन ज्योति-ज्योति

थेत हम बँनेलौं

डी.ए.पी. पोठास संग गहम बँनेलौं

संछाँ किसानमे हमरी

हमरी बँकनेन

दौगू-गौगू यो काका

जबूम भऽ गेन ।

एहेन सुन्दर गहम काका

पवा चरि गेन

दौगू-दौगू यो काका



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,
मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA
जन्म भन्ने गेन ।

कच्चा खाध कोस धवि

पागपो पसाबलौ

मरुग पानि कनि एकरो पठैलौ

ले जानि देरा ए रिपति किथए देन

दोगू-गोगू यो कका डका पवि गेन ।

खली सबपच कका खाँथि थोनि देखियौ

घसरहिनी-चबराहाक उपद्रवकै देखियौ

थर्चा जोड़त-जोड़त

ठमव खून सूथि गेन

दोगू-दोगू यो कका गहूम रकबी चवि गेन ।

निथेत ए रात गुन ठमन कहैए

कि कहँ कका खरै किड ले हूँडैए ।



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मान्यविह संस्कृतम् **ISSN 2229-547X VIDEHA**

कैवल-धनरा सल्लो पानिमे छति गेल

दोगू-दोगू यो काका डाका पड़ि गेल ।

१



चंदन कथाव सा

सबबा मदलेश्वर शून

मधुबनी बिलाव

गजव-१

मोनक रात मोनहि मे बथेत छी



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानुषिह संस्कृतम् **ISSN 2229-547X VIDEHA**

छप्पी बाधि हम जिनगी कठैत छी

चकमक जगत, नागन चौन्ह लोकके

घब अन्हाव टैनक निन स्रतेत छी

मूर्छक लेन आमिन लोक छै पिले

हम सत्ता जनेरौ ले कथेत छै पिले

रौचन खेत डारब-डीह गजब ले

तेयो केस किता दस नडेते छी

जुम्मा जडन एँठन एखनो रौचन

"चंदन" रौन ते एँठन रजैते छी

११११ ११११ १११



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,
मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

गजव -2

ककरो त२ जूना खाँत भेन छै

केयो था-था खल्लयाँत भेन छै

पिसा बहलै देशेक जनता

कानून-बारम्हा जाँत भेन छै

बूँडा रँके लोक नेता रँनलै

बिकास लेनाक खाँत भेन छै

समाज बूँडलै रँक खता मे

संसद भोजक पाँत भेन छै

-----रर्प-११-----



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,
मानुषिह संस्कृतम् **ISSN 2229-547X VIDEHA**

गजव-3

द्वशक धार सँ रेशी झलक छार छै शीतन

लैनक गोब सँ रेशी देहक घाय छै तीतन

देहक थून सँ रेशी लोकक मोन छै धीपन

अप्पन सोच सँ रेशी आनक सोच छै बीतन



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संकेत **ISSN 2229-547X VIDEHA**

ककरो हाथ सँ रेशी ककरो गीत छै जीजन

खूनक छाप सँ देखू सगरो राँठ छै तीतन

ककरो थाप सँ रेशी कबहुँ थाम छै रौदन

ककरो सगव जिनगी धाव-कात छै रीतन

ककरो रौन समदाउनक भास छै भवने

गारैय "चंदन" उदासी जग रूमे छै गीतन

-----रर्प-११-----



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,
मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

हम ककन छी, लेखनी ठमकन अछि

सभ कम्पना ठामे-ठाम दबकन अछि

प्रगतिक पहिया आग रिछ रौठ पव

भ्रष्टाचारक ठोठ नागि अबकन अछि

भोगी भूपति सभ धयले रौना योगी के

रौठी प्रजाके थाय कमरी: सबकन अछि

ज्ञान-शील तप-बाग संरचित भेन छै

ह्रदा संकीर्ण सोच सौंसै हलकन अछि

"चंदन"लोकके निश्चय प्रतिकार चाली

कि हेलब अनेकए मेघ ठनकन अछि ?



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,
मानुषिह संस्कृतम् **ISSN 2229-547X VIDEHA**

-----रर्प-१३-----

जे ज्ञन नहि ! !

आजादीक पैसठि रबथ

रितनाक रौदो

एथनो

मोन अछि जे कहिया

रिदेशी जिजीबक

रैनहन सँ

आऊ भेल बही ।

आदा, देशी जूझा सँ

कहिया गढावन गेनहूँ

बि एन रु बिदेह *Videha* बिदेह www.videha.co.in www.videha.com बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई
पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मान्यमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

से भान नहि ।

ई बचनापव अपन यंत्र ggajendra@videha.com पव पठाउ ।



कपिलेश्वर बाउत



महजरा २

जगदानन्द सा



'मन' - हम एहन किछु छी ? / केना मदन छ हेल्पी ? ३
क्याव सा (कहैया) - देने छति बाजेमे

5



कपिलेश्वर बाउत

करिता-

महजरा



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संकेत ISSN 2229-547X VIDEHA

मागक ओदमे जे भाषा सिखनक

पबदेशे जा सभ रिसवनक ।

गाम आरि काहे-फहे रैजेए

लोक कहत आरि रहु रूनेए ।

पढ़न-लिखन तँ आव रिगबनक

बान-रुचार्के कनलेनठ धरेनक ।

चानि-ठानि अंग्रेजिया पकड़ि

मातृभाषाक खिन्नी उड़ौनक ।

अपन भाषा रिसवि

रहबरेया भाषा अपनोनक ।

अहाँ मैथिलीके केना आगू केनौ

अपने तँ गेरे केनौ रुचोकेँ तँसिनौ ।

जेतनौ गज्जत गौआँ दगए



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संकेत **ISSN 2229-547X VIDEHA**

पबदेशी ओकवा थकैए ।

गोआँ-घकआ मैथिली जि याँए

पबदेशिया रौलब भगारैए ।

कनिये अंग्रेजिया जेब नगरिओ

मैथिलीकेँ आगाँ देखरिओ ।

जनक आ सीताक भाषा अपनाउ

कर्म छोड़ू ले अपनाकेँ रँनाउ ।

रिद्यापति आ यात्री कहि गेना

मण्डन आ अयाची कर्मरीब भेना ।

अपन भाषा सब जन मिठ्ठा

एकवा ले रूमू हँसी ठहँठा ।

मागक ओदमे जे भाषा सिखनक

पबदेशे जा सब रिसवनक ।



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मासिक अंक) ISSN 2229-547X VIDEHA



जगदीश चन्द्र 'मन्त्र'

ग्राम पोस्ट - हविश्वर डीस्टेंन, मधुबनी

हम एहन कि एक छी ?

हम एहन कि एक छी ?
माछि-पानि छोवि कए
जाति-पाति पब नठैत कि एक छी ?
हम एहन कि एक छी ?

आएन कियो हाकि नैनक
जाति-पाति पब रँछि देनक
डूँच-निच केँ सगबा मेँ
अपन बिकास छोवि देनहूँ
हम एहन कि एक छी ?

केँ छी अगबा
केँ छी पडबा
सभ मिथिनाक संतान छी
होबि कपाव देखु तँ
सरहक सोनित एके छी
हम एहन कि एक छी ?

झरझी भवि लोक
अपन स्नायक कावणे
अपना सर केँ
तोब बहन अछि
मोब बहन अछि
जाति पाति मेँ ओसबा कए
मिथिनाक बिकासि रोकि बहन अछि



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक ISSN 2229-547X VIDEHA

धबति केँ कोनो जाति है छैक ?

मएक कोनो जाति है छैक ?

तँ हम सँ सन्तान

रैछैछौह कोना ?

हम एहन कि एक छी ?

आरौह हम सँकल्प कवि

जाति-पाति पब नहि नबि

अपन मिथना हमहि संभावै

सम्पत मात्र एतरे कवि

हम एहन कि एक छी ?

छेना मदब छै हैप्पी ?

आरि केहन जमाना आरि गेन

बर्थ मे एक्क दिन

मए केँ याद करै छी,

'मदब डे' केँ नाम पब

मए केँ याद करै छी

की हुनक सुथएन या केँ

काठी कए केँ जगारै छी ।

हम रिसैव गेनहूँ

अपन मए केँ

झुदा ओ नहि रिसवनी,

जाहिखन हुनका भेटैछै

सुन्दर कार्ड 'हैप्पी मदब डे' निखन

भेटैछै करेजा ताब-ताब

लोब छैयैव कए

अपन स्पर्श सँ

गान केँ छुरैत



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानुसिंह सन्कल्प **ISSN 2229-547X VIDEHA**

हुनक करेजा तक चलि गेल
आ करेजा मे रैद
महामा के कोठ सँ
सोनिता मे डूबै नै नै नै नै नै
आह !
की आ हमर ओह नान ?
जेकरा पोसलौं थुन सँ
पोनलौं अपन दूध सँ
अपने स्वतन्त्र बिजन मे
ओकरा नगेनलौं करेज सँ ।
आओ
चाबि रैथ सँ भेटै नै नै
बहि बहन अछि पबदेशे
अपन कनियाँ सँ
रिसवि गेल रिधरा मए के
आओ अकस्मात मए यदि एतेह
आ सुन्दर चिप्टी (काँड) पठै नै
मदारी की निथन ?
'हैप्पी मदर डे'
नमहर सँ नै
हुनक मन आओ रोजन
जखन मदर नै हैप्पी
तँ कोना
मदर डे हैप्पी
तँ कोना मदर डे हैप्पी ?



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,
मानकीह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



बाजेश कमाव सा (कन्हैया), पिताक नाम :- श्री रिजय कमाव
सा, गाम :- घोघवडीहा (प्रवांछ ठैर), पोस्ट ऑफिस + थाना : - घोघवडीहा ,
जिला :- मधुबनी, (बिहार) -847402

देशे भक्ति

भावत देशे यः सभदेशेमे महान
हम सरं छी, श्री मायक संतान

बाम-प्रशस्तक धाम छी, श्री यः एलेन पारन
गंगा-यक्ष्मा रँहि छथि, अमृत धार जेलेन

भावत देशे यः सभ देशेमे महान
हम सभ छी, श्री मायक संतान

श्री छी ब्रह्मंडक, सृष्टिक शान
एतः जनम नः रँठन हमब मान

भावत देशे यः सभ देशेमे महान
हम सभ छी, श्री मायक संतान

एही गोद मे खेनिकः भेलौं जरीन
यएह हमबा नेन, उपजेनथि अन्न-पानि

भावत देशे यः सभ देशेमे महान
हम सभ छी एही मायक संतान



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,
मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

हम रैन२ चाँटि छी, एहन सुंदर सँतान
जिनकर माना जपेए एहन रीब जराँन

भावत देशे य२ सभ देशेमे महान
हम सभ छी एही मायक सँतान

निकानरँ कष्टवता-थातकराँदक जान
मिठा देरँ ए दूधनक नामो निशान

भावत देशे य२ सभ देशेमे महान
हम सभ छी एही मायक सँतान

नडेँत-नडेँत जेँ चनि गोन जान
करै छुथिन भगराँनो ओकर सम्मान

भावत देशे य२ सभ देशेमे महान
हम सभ छी एही मायक सँतान

भावत माँ पब, भ२ जाँड रैनदान
ओग रीबक, होग छेँ सृष्टिमे पहचान

भावत देशे य२ सभ देशेमे महान
हम सभ छी एही मायक सँतान

दिया दिख मागसँ एकठाँ गहि रबदान
हब रीब जनम नी एँतु चाली रैनी हिन्दू-मुसलमान

भावत देशे य२ सभ देशेमे महान
हम सभ छी एही मायक सँतान

ए बचनपब अपन रँतब ggajendra@videha.com पब पठाउ ।



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,
मानसिक संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



१. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिब' - की लेखन आ की लेखन गेन (आमे



गीत) - (आगाँ) १. नावाया सा- एथनहूँ जकडन डी/ एकता

१



जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिब'

की लेखन आ की लेखन गेन (आमे गीत) - (आगाँ)

निथरौ आ पठरौ केव नशा

सूनरौ आ सूनयारौ केव नशा



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानुसिंह अस्त्रकर्म, ISSN 2229-547X VIDEHA

शेखर सोना, खीवा, मोती

देखरि आ देखयरी केव नशो

सदिखन आनन्दिता बहुराजे

जीवनक अर्थ छन रूखा गेन

हम सोचि बहन छी जीवनमे

की भैरन आ की हेवा गेन ।

२

हम गाम-गाम घूमय नगनहुं

सभ्ठा सभ किछ देखय नगनहुं

'नरनुविषा'के ताकय नगनहुं

'दुखमोचन'के चीन्हय नगनहुं

'मबनी', 'रिहलू' केव देखि रंगय

छन अपन सभ दुख पड़ा गेन,

हम सोचि बहन छी जीवनमे

की भैरन आ की हेवा गेन ।



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,
मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

करितामे देखनहुं हिमगिरिके

करितामे देखनहुं र्गगारके

करितामे देखनहुं खपनहि सन

नहि जानि कते भिखमंगारके

छन नाम, मून आ गोल सलक

करितामे सल्लो रूमा गेन,

हम सोचि बहन छी जीरनमे

की लेठन आ की हेवा गेन ।

२

हम आखि खोनि चनगत बहनहुं

घूमगत बहनहुं, देखगत बहनहुं

पठगत बहनहुं, स्नगत बहनहुं

ग्नगत बहनहुं, धूगत बहनहुं

अहिनामे क्रमशः हमबहुंस



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

'तोबा अंगनामे' बिधा गेन,

हम सोचि बहन डी जीरनमे

की लेठन आ की हेवा गेन ।

२

शिकानु-सुधाकानुक जोडी

हमबा शिद्धुके पाथि देननि

उडि गेन शिद्ध सभ गाम-गाम,

पठना, दिनी आ कोनकता

थकजन, प्रियजनक प्रीसासं

हुन हमब आयो जुडा गेन,

हम सोचि बहन डी जीरनमे

की लेठन आ की हेवा गेन ।

२

सतनावायक कथा सुननहुं

'सपता-रिपता'क राथा सुननहुं

चौबचनमे थीब आ पूबी, त



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संकेत **ISSN 2229-547X VIDEHA**

छठिमे ठंरुआ-तुसरौं खेनह

दुर्गापूजामे रनिप्रदान

छन प्रश्न मोनमे उठा गेल

हम सोचि बहन छी जीरनमे

की छेठेन आ की हेवा गेल ।

२

२



नावाया सा, ग्राम पोस्ट बह्वा . संग्राम । प्रखण्ड.
मधेपुर, जिला. मधुबनी ;रिहाव । पिन कोड 847408

करिता

1. एखनह जकडन छी



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

अपन देस आ अपन गँौर

पब पुरहि पडन सुन्दताक डोर

एथन धरि छी हम जकडन

डेन पकडि जागड पकडन ।

पबपवा आ मनगठ रीत

डेग . डेग पब खीचै हाथ

रिचाव सदिखन बाथि सुनिचाव

गठित बही नीक खाचाव ।

आजादीक दिन होयत तखन परिव

जखन आनोक नयना सँ देखर चित्र

नीकक सदिखन गमकए सुगंध

रैजागक पन पन गन्धकए गंध ।

देखारी हम मेहनत कर

हजारौं छाती अपनहि मेहनत सँ

मेहनतक हन होगड मीठ

छीनन संपदा सदिखन तीत ।

हे शिक्षार्थी हे नरनुविद्या

खोनू टोपतन ज्ञानक पुर्विया

दुनिया अछि लोक भँति . भँति सँ रैन

एथन धरि ठाड छी पबतंत्रक पँति मे अडन ।

अपन देस आ अपन गँौर

पब पुरहि पडन सुन्दताक डोर

एथन धरि छी हम जकडन

डेन पकडि जागड पकडन ।

2.

एकता

रंधू एकताक डोब सँ

रंधू सूत-सूत कर डोब मे

नहि छोट खाँड अनेकताक रोड सँ

गहू एकताक जेब मे ।

न केयो हिन्दू न मुसलमान



बिदेह ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२)

मानक संकेत **ISSN 2229-547X VIDEHA**

सभ थिकह बिदेही गँसान
न केयो सिक्थ न गँसाग
सभ थिकह छोट-पैघ भाँ-भाँ ।
सभ तनक न्हक कण
मिनाड देखै एकहि सन
किया कवरै मानरताक डाह
सोचर तँ नीलो मे थायत थाह ।
जे थिकाह थला, तूनकहि बाम
जे थिकाह गँसा, कहेत छी थाम
कथनहूँ रँनि साँगा, कथनहूँ तनमान
सभ देर-देरीक थीक नाना नाम ।
जाति -पाति छुआ-छुत
एहि मँ बह सभ थुत
पूत रँनि भावत मँ कए
जनि दूतकाक एहि मँ कए
एक भँ नगाड जयकावा
गँजा दिथियो भू-नभ-तावा
जय भावत-भूमि जय हे माता
अपनेक छी सभक रिधाता
रँधूँ एकताक डोब मँ
रँधूँ सूत-सूत कँ डोब मे
नहि छोट थाड अनेकताक रोड मँ
गहूँ एकताक जेब मे ।

ई कानासब अपन रँतब ggajendra@videha.com पब पठाउ ।

बिदेह नूतन अंक मिथिला कला संगीत



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,
मानसिक संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA



१. बाजनाथ मिश्र (चित्रमय मिथिना) २. डमेश मन्दन
(मिथिनाक रनस्पति/ मिथिनाक जीर-जबु/ मिथिनाक जिनगी)

१.



बाजनाथ मिश्र

चित्रमय मिथिना स्लागड शो

चित्रमय मिथिना (<https://sites.google.com/a/videha-com/videha-paintings-photos/>)

२.



डमेश मन्दन



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,
मानक संकेतः ISSN 2229-547X VIDEHA

मिथिलाक रनस्पति स्वागत शो

मिथिलाक जीर-जुड़ स्वागत शो

मिथिलाक जिनगी स्वागत शो

मिथिलाक रनस्पति/ मिथिलाक जीर जुड़/ मिथिलाक जिनगी
(<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/>)

ई बनावब अपन रचित ggajendra@videha.com पब पठाउ ।

बिदेह नूतन र्थक गद्य-पद्य भावती

१. मोहनदास (दीर्घकथा): लेखक: उदय शर्मा (मूँ हिन्दीसँ मैथिलीमे अनुराद
रिनीत उपेन)

मोहनदास (मैथिली-देरनागरी)

मोहनदास (मैथिली-मिथिलासुब)

मोहनदास (मैथिली-ब्रैँल)

२. छिन्नमस्ता- अन्न खेतलक हिन्दी उपन्यास सुनील सा द्वारा मैथिली अनुराद

छिन्नमस्ता

154



विदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संख्या **ISSN 2229-547X VIDEHA**

३. कनकमणि दीक्षित (यूव लोकोपयोगी मैथिली अनुवाद सीमती कगा धीक आ सी
धीलन्दा लेखिका)

लगता छेक देश-भरि



१. प्रा. चम्पा शर्मा क डोगरी करिताक हिन्दी अनुवाद: सीमती बजनी शर्मा



आ मैथिली अनुवाद : डा. शिबु कर्माव सिंह, २. **कर्माव मन्त्र**



‘**अवकाश**’ क हिन्दी करिताक मैथिली अनुवाद: मैथिली अनुवादक: डा.
शिबु कर्माव सिंह

डोगरी करिता



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संकेत **ISSN 2229-547X VIDEHA**



मूल : प्रा. चम्पा शर्मा

(अरकाशे प्राप्त संस्थापक अध्यापक, स्नातकोत्तर डोगरी विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय,
जम्मू)

हिन्दी अनुवाद : श्रीमती बजनी शर्मा

मैथिली अनुवाद : डा. शिबु कुमार सिंह

मूल-लेखक सन्देश

राजू सैनिक ! कोन ठाम ?

मूल-लेखक सन्देश पठारी

अहाँक नाम ?

बहराक अहाँक नहि कोनो ठेकान,

आग 'सियासी' कालि 'पुनगामा

आँखिमे अहाँ काँठी बाति,



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

जड़कला आकि हो रबसाति ।

पठारी मलक मनि-आडव,

पूँड 'बजोबी' 'डोडा', 'पाडव'

अहाँ निथि भेजू, कतए पठारी,

अहाँक नाम ?

राजू सैनिक ! कोन ठाम ?

मल-भवन सनेस पठारी

अहाँक नाम ?

कनहा पब सबदिन रौम उठौले,

ठाम-फठाम अहाँ डेग रँठौले ।

गबम सबकमे हमसभ सूती,

अहाँ छातीसँ रन्दूक नगौले ।

एक रँबोरँबि दिन आ बाति,

की साँय आ की पवात ।

कतए करै छी अहाँ बिश्राम ?

कोन ठाम ?

राजू सैनिक ! कोन ठाम ?



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

मह-भवन समेस पठारी

अहाँक नाम ?

‘सियाचीन’मे कोना बहे छी,

रैफ-रिछोना कोना सहे छी ?

सहेत हएँ अहाँ रैहूँ ठैठ

नहाएँ तँ रैमूँ हेत दंड ।

नाक-सन एकठाँ पेठैँ चूनिअ,

महक एकठाँ स्रोँव रूँनिअ

छी बखने, राजू कतए पठारी

अहाँक नाम ?

राजू सनिक ! कोन ठाम ?

मह-भवन समेस पठारी

अहाँक नाम ?

उतबनाँ आ जेसनमेव

भेन अहाँक झूँठी कैक रैव ।

चनेत रैबूँखानी तुहूँ न

भेन हेँ अहाँ केहन हवान ?



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

करैत अमारस-सन अहब,

अपनहुँ चेहवा भेल अनचिन्हब ।

मल भवन हम चान चठः री

अहाँक नाम ।

राजू सैनिक ! कोन ठाम ?

मल-भवन सनस पठारी

अहाँक नाम ?

जहाज उड़ः एरै भ' जाए सबन,

सदिखन सीमान पब आँखि गवन ।

दुश्मन रैसन अछि तारुमे,

नहि ओकव अवाना पाक अछि ।

डन-कपठ कवि ओ घेबए नहि,

अहाँक मति ओ खेबए नहि ।

मलक हम रँवथा रँवसारी,

अहाँक नाम ।

राजू सैनिक ! कोन ठाम ?

मल-भवन सनस पठारी



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

अहक नाम ?

कोचि, गेरा, बिशाखापट्टनम्

अडमान आ चेन्नई दक्खिन ।

जन-सेना केव रैड् १ तावन,

देशिक दूशनकेँ अहाँ मावन ।

बिसे प्रशंसक अछि अहाँक,

सूर्य रक्ता छथि बम्बक अहाँक ।

एहिसँ रैठ्कि कए हम कहि की सकै छी ?

अहाँक नाम ?

राजू सैनिक ! कोन ठाम ?

मन-भवन सनेस पठाँरी

अहाँक नाम ?

साहस डूँच, जेना की 'पीव'

कावगिन जाड आकि कशीव ।

बम्बा अहाँक कबताह महेश,

गौबी-नन्दन श्रीगणेश ।

देशे रैछाएँ, धवम निभाएँ,



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संकेत ISSN 2229-547X VIDEHA

‘जोबारव’ सन यशे अहाँ पाएँ ।

आशीर्चनक खाता हूँजारी

अहाँक नाम ।

राजू सैनिक ! कोन ठाम ?

झर-भवन सनेस पठारी

अहाँक नाम ?

आखी, चिट्ठी, नीनहा रदी

अछि सबिपहुँ हमबा हमददी ।

माथ सँ न’ कए पयब धवि,

रूमू अम्बेब केब कप अनेक ।

मिनत जखन रीबता केब तगमा,

बचरै एकठाँ सुन्नब-सन नगमा ।

ताब झरोबक केब पठायर

अहाँक नाम ।

राजू सैनिक ! कोन ठाम ?

झर-भवन सनेस पठारी

अहाँक नाम ?



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मासिक **ISSN 2229-547X VIDEHA**

जखन खुने छी अहाँके खेन,

प्रह्लादित 'भ' उठैछ हमब मोन ।

चिन्ताहुँ 'भ' हम खुते छी,

हुँ गगनमे हम उड़ै छी ।

सभ हउ नागए हमबा मीत ।

मोन कबए निखू कोनो गीत,

अहाँक नाम ।

राजू सैनिक ! कोन ठाम ?

मन-भवन सनेस पठारी

अहाँक नाम ?

यो रिक्री, खूबदीप कि तावक,

होमए अहाँकेँ जनम दिन हूँबक ।

समय भेटै तँ गौशाना जाएँ,

हबियब घास गायकेँ ओगावर ।

घूबि कए कवर खेन जनधर,

दादी संग एखन जाग छी मदिब ।

अशेष मन नैन धूप जवायर



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संकेत ISSN 2229-547X VIDEHA

अंक नाम ।

राजू सैनिक ! कोन ठाम ?

मन-भवन सनेस पठारी

अंक नाम ?

भूमी भैसक दूधक घी,

सेहो छी हम सजोगने ।

अनदेरता केव पूजासँ पहिने,

था ले केओ सकता जे हो ।

श्री-पुनार अंकैँ भारै,

'जन्दी रैनाँ' आरि कही 'माए' !

सभ गछा हम पूव कवरै

आगत छी किविया हम ?

राजू सैनिक ! कोन ठाम ?

मन-भवन सनेस पठारी

अंक नाम ?

रैहो दिनसँ

एकादशीक हम ब्रत छी बखने,



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

कवर उद्घाटन

आएँ अहाँ घूबि घब जखने,

काज तँ आओरो.... छैक घब पब

दिन खोनि हम ककवा देखाउ ?

हमब प्राण !

राजू सैनिक ! कोन ठाम ?

मन-भवन समेस पठारी

अहाँक नाम ?

पागन-सन भेन अछि अहाँक रहिन,

अशिन पूछैत छथि ओ सब दिन ।

'बाहड़' १* करैत छथि अहाँके नामक,

चर्च करैत छथि अहाँके काजक ।

रीब हमब हाफ़ जीतकेँ गुंताह,

करूँना कबखि जा कए रौतरे ।

देरी माँ केँ भेँट चटौती

अहाँक नाम ।

राजू सैनिक ! कोन ठाम ?



विदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

मह-भवन सलस पठारी

अहाँक नाम ?

हम जीत कए अहाँ जे आएँ,

कवरँ यत्न आ भोज कवाएँ ।

ठाम-ठाम पव हून रिडायरँ,

बंगोलीसँ घब-द्वाब सजायँ ।

अमृतसब, रौहरे, सतरावी

जाएँ ओतए हम रैवा-रैवी ।

पीब-मजः १५ पव रोठ चठः १५

अहाँक नाम ।

राजू सैनिक ! कोन ठाम ?

मह-भवन सलस पठारी

अहाँक नाम ?

देखि अहाँकै चान चठः १५,

केतनहँ किएक नहि काज रैठः १५ ।

देखी अहाँकै सूबत कोमन,

सदिखन बहए मोन अति हुमन,



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मासिक **ISSN 2229-547X VIDEHA**

चहूँ-दिस आरि जायत रहैव,

रसत गरै छि मेघ-मन्हाव ।

गीत प्रीत केव गरै छि कोयन

अहाँक नाम ।

राजू सैनिक ! कोन ठाम ?

मह-भवन सनस पठाँरी

अहाँक नाम ?

*बाहड़ १' (जन्म क्षेत्रमे मनाउन जाएरना भाय-रैनिक एकठा महर्षि परी)

२



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,
मानसिक संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



कृष्ण रंजन 'भावदाज' (उम्र-12 वर्ष, कक्षा-8, ग्राम- नरुखाव, पत्रानय तेनहव,
अंचल-महिषी, जिला-महसारा, बाँरु चतुर्द्वज सिंहक प्रथम पौत्र छथि। मूल कपस
हिन्दीमे लिखन गेल 'मेवा भावत देशे महान' दिनक पहिन करिता छथि।)



मैथिली खबरदाक: डा. रंजन कृष्ण सिंह

हमर भावत देशे महान

हमर भावत देशे महान

जकर हम गारी गुणगान

बिद्या केव भंडाव एतय अछि



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानुसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

अवीति केव रिनशिक अछि

आन कनामे पविपूर्ण अछि

रूपक अछि आ अन्नपम अछि,

हमर भारत देशे महान

जकर हम गारी गुणगान

करन जागड एहि देशेक आगू

सर क्य माथ स्कोले अछि

आन नदी आ परत सभ सेहो

एकर गुणकै गौले अछि,

एहि धवती पब गंगा-यमुना केव रहित निर्मन धारा अछि,

हमर भारत देशे महान

जकर हम गारी गुणगान

रीब प्रकृषसँ भवन पड़न आ

हमर अक्ष हमर समाज आ

हँरब सिंह आ गाँधीजी केव

येह निवास स्थान अछि,

एहि धवती पब जनम लेने छथि



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,
मानक संख्या **ISSN 2229-547X VIDEHA**
बाम, प्रष्ठ ओ बूझ सेहो

एहि धवती पब जनम लेने छथि

सीता ओ सारित्री सेहो,

हमर भारत देशे महान

जकर हम गारी गुणगान ।

ई बचनापब अपन मंतरा ggajendra@videha.com पब पठाउ ।

बैनाना प्रते



अमित मिश्र

१३. अगस्तपब एकठा गजन आ एकठा करिता

गजन

तीन बगक सजन हहरैरै आग हम

गीत सँडा के निखन गेरै आग हम

गाम मे घूमैरै कटे छथि मास्ट्रब हमर

अमर नावा सरस नगरैरै आग हम



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,
मासिक संस्करण) ISSN 2229-547X VIDEHA

हाथ मे साँडा परेडक चन संग मे
मचपव भाषा अपन देरै आग हम

भगत गाँधी कहर गाथा आजाद के
तीन बगक भेद समझेरै आग हम

तानि छातीके सनायी हम देरै रौ
भेठेते ठाँही "अमित" खेरै आग हम

हागनातन-हागनातन-हस्तहागनातन
2122-2122-2212
रहरै-जदीद

करिता-
तीन बगक पताका

तीन बगक पताका हरहरै आकाशमे
ता धरि नडरै
जा धरि ताकत अछि साँसमे
नका गेना माँ-बाँ एकने रँदनि नहामे
जानपव खेन
रोक नगेनौ दूशनक रिकामे

कतेक नर कनियाँ भेली रिधरा
हृदा खुँ छथि उज्ज्वल निरामे
आग 1947 अगस्त पनवह
आजादी भेलै गेलै
धवती सजन जेना मधुमासमे



विदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,
मानकीकृत संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

आगत 2012 मे फेब्रुअरी ग्रनाम छी
भ्रष्टाचार घुसखोरी , दहेजक आशिये
चोरी अपहरण ,रैम धमका
हमन छै सरे नचाबीके हानसमे
कहिया भेटैत आजादी
के सरे नडत
सैध नागन "अमित" हमर रिश्तासमे

ई बर्नापब अपन यंत्र ggajendra@videha.com पब पठाउ ।

बैठा लोकनि द्वारा श्रवणीय श्लोक

१.प्रातः कान ब्रह्मरूप (सूर्योदयक एक घण्टा पहिने) सरप्रथम अपन दू हाथ
देखराक चाली, आ' ए ग्लोक रँजराक चाली ।

कवांछे रसते नम्रः कवमन्त्रा सबस्यती ।

कवमूने स्थितो ब्रह्मा प्रभाते कवदर्शनम् ॥

कवक आगाँ नम्रः रँसते छथि, कवक मन्त्रा सबस्यती, कवक मूने ब्रह्मा स्थित
छथि । भोवमे ताहि द्वारा कवक दर्शन कवरौक थीक ।

२.संध्या कान दीप लेसराक कान-

दीपमूने स्थितो ब्रह्मा दीपमन्त्रा जनार्दनः ।

दीपांछे शिखरः प्राकृतः सन्ध्याज्यातिर्नमोऽस्तुते ॥



विदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मासिक अंक, ISSN 2229-547X VIDEHA

दीपक मूल भागमे ब्रह्मा, दीपक मध्यभागमे जनार्दन (बिष्णु) आऽ दीपक अग्र
भागमे शङ्कर स्तुति छथि । हे संभ्राज्याति ! अहाँकेँ नमस्कार ।

३. स्मृतिक काल-

वाम अक्षर तन्मूर्तु रैनतेय बृकोदवम् ।

शयने यः अवेक्षितं दः स्वप्नस्तु न स्थिति ॥

जे सभ दिन स्मृतिसँ पहिने वाम, क्रमावस्थामे, तन्मूर्तु, गवड आऽ त्रैलोक्य अर्पण
करैत छथि, तन्मूर्तु दः स्वप्न नष्ट, भऽ जागत छन्हि ।

४. नवैकाल समय-

गङ्गा च यद्गते तैर गोदावरी सबस्यति ।

नर्मदे सिङ्गु कारेवि जनेऽस्मिन् समीपि रुक् ॥

हे गङ्गा, यद्गता, गोदावरी, सबस्यति, नर्मदा, सिङ्गु आऽ कारेवी धाव । एहि
जनमे अपन समीप दिख ।

५. उत्तर यमोदस्त हिमालय दक्षिणम् ।

रश्मि तत् भावत नाम भावती यत्र सन्ततिः ॥

समस्तक उत्तरमे आऽ हिमालयक दक्षिणमे भावत अछि आऽ उत्तरा सन्तति
भावती कहलैत छथि ।

६. अहना द्रौपदी सीता तावा मल्दादवी तथा ।

पञ्चक ना अवेक्षितं महापातकनाशकम् ॥

जे सभ दिन अहना, द्रौपदी, सीता, तावा आऽ मल्दादवी, एहि पाँच साप्ता-सत्रीक
अर्पण करैत छथि, तन्मूर्तु सभ पाप नष्ट, भऽ जागत छन्हि ।

७. अश्विथोमा रिनिरासो तन्मूर्तु रित्रिषः ।



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मासिक ISSN 2229-547X VIDEHA

ग्रुप: पब्लिशिंग सन्तुते चिबङ्गरीन: ॥

अग्निहोत्रा, रौनि, रास, हनुमान्, रिज्जिषा, प्रपाचार्य आऽ पब्लिशिंग- आ सात ठाँ
चिबङ्गरी कछैरैत छथि ।

५.साते भवतु अग्निहोत्रा देरी शिखर रासिनी

उत्प्रेत तपसा नष्टा यथा पशुपतिः पतिः ।

सिद्धिः साधु सतामस्तु प्रसादास्तु धूर्जटेः

जालरीलेननेथेर यत्थु शिनिः कना ॥

६. रौनोऽहं जगदानन्द न मे रौना सबस्यती ।

अपूर्णे पंचमे वर्षे रणियामि जगत्त्रयम् ॥

१०. दूरस्थित मंत्र(शुक्ल यजुर्देद अध्याय २२, मंत्र २२)

आ ब्रह्मन्निष्ठ प्रजापतिर्वक्ष्यः । निभोकता देवताः । स्वाङ्कृतिष्ठन्दः ।
यजः स्वः ॥

आ ब्रह्मन् ब्रह्मणो ब्रह्मरर्चसी जायतामा वाष्ट्रे वाजतः
शुर्वेऽगवरातिर्याध्वी मर्तावथो जायता दोग्ध्री धेनुर्वेताऽनूद्रानाशुः
सन्तिः पुर्वश्चिथेरिा जिह्व वक्थेष्ठाः सृभेयो हरास्त यजमानस्त रौरा
जायता निकायमे-निकामे नः पृज्ज्या रयितुं फलरवा नृऽऽम्भयः पचात्रा
योगेष्ठा नः कम्पताम् ॥ २२ ॥

मन्त्रार्थः सिद्धयः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोवथाः । शत्रूणां वृक्षिनाशोऽस्तु
मित्राणां दयस्तु ।

७. दीर्घचिर्त्तर । ७. सौभाग्यरती भव ।

हे भगवान् । अपन देशमे सुयोग्य आ' सर्रत रिद्यार्थी उपेन्न होथि, आ' शुत्रकै
नाशि कर्णितव सैनिक उपेन्न होथि । अपन देशक गाय खूँ दूध दय रौनी, रवद



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानकीह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

भाव रहन कबएमे सक्षम होथि आ' योडा' ह्वित कर्पे दोगय रँना होए।
मृगीगण नगवक नेतृ कवरामे सक्षम होथि आ' हारक सभामे ओजपूर्ण भाषा
देरयरँना आ' नेतृ देरामे सक्षम होथि। अपन देशमे जखन खरथक होय
रषा होए आ' ओषधिक-रूँठी सरदा पविपक होगत बहए। एरुं एमे सभ तबहँ
हमबा सभक कर्णा होए। शत्रुक रूँधिक नाश होए आ' मित्रक उदय होए॥

मन्त्रार्क कोन रसुक गछा कवरक चाली तकव रनि एहि मन्त्रमे कएन गेन
अछि।

एहिमे राचकवृत्तापमानङ्काव अछि।

अन्वय-

ब्रह्मन् - रिधा आदि गुणसँ पविपूर्ण ब्रह्म

वास्तुष्टे - देशमे

ब्रह्मरर्चनी-ब्रह्म रिधाक तेजसँ हकठ

आ जायत- उपेक्ष होए

वाजः - बाजा

शुभे-रिना डब रँना

अथवा- राँ चनेरामे निष्ठा

अतिर्याधी-शत्रुकें तावण दय रँना

महावृथा-पेय बथ रँना रीव

दोग्ध्री-कामना(दूध पूर्ण कबए रानी)



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

नः - हमबा सभक हेतु

कम्पताम्-समर्थ होए

त्रिफिथक अन्नराद- हे ब्रह्मण, हमब बाजामे ब्रह्मण नीक धार्मिक रिद्धा रैना,
बाजग-बीव,तीवदाज, दूध दए रौनी गाय, दौगय रैना जनु, उछयी नारी होथि।
पार्जन्य आरथकता पडना पब रषा देखि, हन देय रैना गाछ पाकए, हम सभ
संपत्ति अर्जित/संवर्धित करी।

8-VI DEHA FOR NON RESIDENTS

8.1 to 8.3 MAITHILI LITERATURE IN ENGLISH

8.1.1.The Comet -GAJENDRA THAKUR translated by Jyoti
Jha chaudhary

8.1.2.The-Science-of-Words- GAJENDRA THAKUR
translated by the author himself

8.1.3.On-the-dice-board-of-the-millennium- GAJENDRA
THAKUR translated by Jyoti Jha chaudhary

8.1.4.NAAGPHANS (IN ENGLISH)- SHEFALI KA VERMA
translated by Dr. Rajiv Kumar Verma and Dr. Jaya
Verma



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,
मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



Maithili poem by Sh. Jaadish Prasad Mandal



translated from Maithili into English by Sh.
Vinit Utpal)

Mind gem

Mold your mind's gem
light your soul
catching the flamed carcass
identify the divine land.

when mind seems to be gem
light sprinkle on the land
show your own path oneself
walk gracefully on the ground.

suffering erase slowly
obligate are singing and dance
vocalizing pray with aggrieved tone
telling their agony own.

human body is invaluable
unidentified medicine is headache
develop sense and consciousness
told you your brother own.

human is glorious organism



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

humanity is its stance
razing the discrimination among the men
religion their own.

Send your comments to ggajendra@videha.com

बिदेह नूतन अंक भाषापक बचना-लेखन

Input : (कोष्ठकमे देवनागरी, मिथिलाक्षर किंवा फोनेटिक-रोमनमे ठीगप
कक। Input in Devanagari, Mthilakshara or Phonetic-

Roman.) Output : (पविणाम देवनागरी, मिथिलाक्षर आ
फोनेटिक-रोमन/ रोमनमे। Result in Devanagari,
Mthilakshara and Phonetic-Roman/ Roman.)



English to Maithili



Maithili to English

गणेश-मैथिली-कोष / मैथिली-गणेश-कोष प्रोजेक्टके आगू रूढ़ि, अपन
स्मरण आ योगदान अ-मेल द्वारा ggajendra@videha.com पब पठाई।

বিদেহক মৈথিলী-খঞ্জেড়ী আ খঞ্জেড়ী মৈথিলী কোষ (গণিবনেষ্টপৰ পত্ৰিন ব্ৰেব সৰ্চ-ডিৰ্শনবী) এম.এস. এস.কৃ.এন. সৰ্বব খাধাবিত -Based on ms-sql server Maithili-English and English-Maithili Dictionary.

১. ভাবত খা লেপাক মৌখিক ভাষা-বৈজ্ঞানিক ব্রোকনি দ্বাৰা বঁাওব মানক শব্দ
খা ২. মৌখিক ভাষা সম্পাদন পাঠ্যক্ৰম

১. লেণাওব ও ভাবতক যেখিবী ভাষা-বৈজ্ঞানিক বোকনি দ্বাৰা ব্ৰীণাওব মানক শেবী

১১. লোহক যৌথিত ভ্রম প্রকৃতিক নোকনি দ্বারা রঁনাওন মানক উঁচাবণ ঞা
নেখন শেঁনী

(ভাষাশাস্ত্রী ডা. বামরতাব যাদবক ধাবণাকৈ পূৰ্ণ ৰূপসঁ সঙ্গী নহ নিধাবিত)
যেখিবমে উচাবা তথা ত্ৰেখন

১. পঞ্চমাক্ষর 'ঋ' ঋন্ব্যাব। পঞ্চমাক্ষরানুজাত ও, ঞ, ণ, ন এর ম ঋরিত খন্ডি।
সংস্কৃত ভাষাক ঋন্ব্যাব শিদ্ধক ঋন্তমে জাহি রজ্জক ঋক্ষব বহৈত খন্ডি ওহী রজ্জক
পঞ্চমাক্ষব ঋরিত খন্ডি। জেনা-
ঋক্ষ (ক রজ্জক বহরীক কাবণে ঋন্তমে ও ঋএন খন্ডি।)
পঞ্চ (চ রজ্জক বহরীক কাবণে ঋন্তমে ঞ ঋএন খন্ডি।)
খন্ড (ঠ রজ্জক বহরীক কাবণে ঋন্তমে ণ ঋএন খন্ডি।)
সন্নি (ত রজ্জক বহরীক কাবণে ঋন্তমে ন ঋএন খন্ডি।)
খন্তু (প রজ্জক বহরীক কাবণে ঋন্তমে ম ঋএন খন্ডি।)
ও পর্যন্ত রীত মৈথিনীমে কম দেখন জাগত খন্ডি। পঞ্চমাক্ষবক বৈদনামে
ঋধিকশি জগহপব ঋন্ব্যাবক প্রয়োগ দেখন জাগত। জেনা- ঋক, পচ, ঋড,
সন্নি, ঋখ খন্ডি। ঋাকবণিদি পন্ডি গোরিন্দ মাক কহর ডনি জে করজ্জা,
চবজ্জা ঋ ঠবজ্জাস পূর ঋন্ব্যাব নিখন জাএ তথা তবজ্জা ঋ পরজ্জাস পূর
পঞ্চমাক্ষরে নিখন জাএ। জেনা- ঋক, চচন, ঋডা, ঋন্তু তথা কপ্পন। ঋদা
হিন্দীক নিকট বহন ঋধুনিক রেখক এহি রীতকৈ নহি মানিত ডুখি। ও নোকশি
ঋন্তু ঋ কপ্পনক জগহপব সেহো ঋন্ত ঋ কপ্পন নিখৈত দেখন জাগত ডুখি।
নরীন পঞ্চতি কিড্ড সুরিধাজনক ঋরথ ড়েক। কিএক তঁ এহিমে সময় ঋ স্থানক
রীচত হোগত ড়েক। ঋদা কতোক রেব হন্তুনেখন রা ঋদণ্যমে ঋন্ব্যাবক ড়োট
সন রিন্দু স্পষ্ট, নহি ভেচাস ঋর্থক ঋর্থ্য হোগত সেহো দেখন জাগত খন্ডি।
ঋন্ব্যাবক প্রয়োগে উচাবণ-দোষক সম্ভারনা সেহো ততরৈ দেখন জাগত খন্ডি।
এতদর্ঘ কর্ম নং কং পরজ্জা ধবি পঞ্চমাক্ষরেক প্রয়োগ করব উচিত খন্ডি। যর্স
নং কং ত্ত ধবিক ঋক্ষবক সন্নি ঋন্ব্যাবক প্রয়োগ কবরীমে কতত্ কোনো রিরাড
নহি দেখন জাগত।



बिदेह ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,
मानकीह संस्करण, ISSN 2229-547X VIDEHA

१. ठ आ ठ : ठक उच्चारण “वृ ह”जकाँ होगत अछि । अतः जतः “वृ ह”क
उच्चारण हो ओतः मात्र ठ निखन जाए । आन ठाम थानी ठ निखन जएराँक
चाली । जेना-

ठ = ठाकी, ठेकी, ठीठ, ठेठआ, ठम्मी, ठेवी, ठाकनि, ठाँठ आदि ।

ठ = पठ, ठग, रँठरँ, गठरँ, मठरँ, रँठरँ, साँठ, गाठ, बीठ, चाँठ, सीठी, पीठी
आदि ।

उपह्रज शिद्ध सभकेँ देखनासँ अ स्पष्ट होगत अछि जे साधारणतया शिद्धक
श्रुतमे ठ आ मध्य तथा अन्तमे ठ अरैत अछि । अतः नियम ड आ डक
सन्दर्भ सेहो नागू होगत अछि ।

३. र आ रँ : मैथिलीमे “र”क उच्चारण रँ कएन जागत अछि, झुदा ओकवा रँ
कपमे नहि निखन जएराँक चाली । जेना- उच्चारण : रँधनाथ, रिध्या, नरँ,
देरता, रिध्नु, रँश, रँन्दना आदि । एहि सभक स्थानपव क्रमशः रँधनाथ, रिध्या,
नर, देरता, रिध्नु, रँश, रँन्दना निखराँक चाली । सामान्यतया र उच्चारणक नेन ओ
प्रयोग कएन जागत अछि । जेना- ओकीन, ओजह आदि ।

४. य आ ज : कतह-कतह “य”क उच्चारण “ज”जकाँ करैत देखन जागत अछि,
झुदा ओकवा ज नहि निखराँक चाली । उच्चारणमे यत्त, जदि, जझना, जूग,
जारत, जोगी, जद्, जम आदि कहन जाएराँना शिद्ध सभकेँ क्रमशः यत्त, यदि,
यझना, हाग, यारत, योगी, यद्, यम निखराँक चाली ।

३.५ आ य : मैथिलीक रत्नमे ए आ य दू निखन जागत अछि ।

प्राचीन रत्न- कएन, जाए, होएत, माए, भाए, गाए आदि ।

नवीन रत्न- कयन, जाय, होयत, माय, भाय, गाय आदि ।

सामान्यतया शिद्धक श्रुतमे ए मात्र अरैत अछि । जेना एहि, एना, एकर, एहन
आदि । एहि शिद्ध सभक स्थानपव यहि, यना, यकर, यहन आदिक प्रयोग नहि
कबराँक चाली । यद्यपि मैथिलीभाषी थाक सहित किछ जातिमे शिद्धक आवस्थामे
“ए”केँ य कहि उच्चारण कएन जागत अछि ।

ए आ “य”क प्रयोगक सन्दर्भमे प्राचीन पञ्चतक अनुसर्ष कबएँ उपह्रज मानि
एहि पुस्तकमे ओकर प्रयोग कएन गेल अछि । किन्तु तँ दूक लेखनमे कोनो
सहजता आ दृक्ताक बात नहि अछि । आ मैथिलीक सरसाधारणक उच्चारण-शैली
यक अपेक्षा एस रैसी निकट छैक । खास कऽ कएन, हएँ आदि कतिपय शिद्धकेँ
कैन, हँ आदि कपमे कतह-कतह निखन जाएँ सेहो “ए”क प्रयोगकेँ रैसी
समीचीन प्रमाणित करैत अछि ।



বিদেহ' ১১২ ম অংক ১৭ আগস্ট ২০১২ (বর্ষ ৭ মাস ৭৬ অংক ১১২,

মাসিক সংস্করণ ISSN 2229-547X VIDEHA

৩. তি, ত্ তথা একাব, ওকাব : মৈথিলীক প্রাচীন লেখন-পবস্পবামে কোনো রীতপব
রৈন দৈত কান শিদ্ধক পাছাঁ হি, ত্ নগাওন জাগত ঠেক। জেনা- তুনকহি,
খপনহ্, ওকবহ্, তকোনহি, চোষ্টহি, খানহ্ খাদি। হুদা খাধুনিক লেখনমে হিক
স্থানপব একাব এর হ্ক স্থানপব ওকাবক প্রয়োগ করিত দেখন জাগত খি।
জেনা- তুনকে, খপনো, তকোনে, চোষ্ট, খানো খাদি।

৭. য তথা খ : মৈথিলী ভাষামে অধিকারিত: যক উচাবণ খ হোগত খি।
জেনা- যডান্ত (খডযন্ত), যোডশী (খোডশী), য়কোণ (খঠকোণ), বৃষেশী
(বৃথেশী), সন্তায় (সন্তাখ) খাদি।

৪. ধ্রুনি-রোপ : নিম্ননিখিত খরস্থামে শিদ্ধসঁ ধ্রুনি-রোপ ভহ জাগত খি:

(ক) ফিয়াব্লয়ী প্রবয় খয়মে য রা এ ব্রপ্ত ভহ জাগত খি। ওহিমে সঁ পহিনে
খক উচাবণ দীর্ঘ ভহ জাগত খি। ওকব খাগাঁ রোপ-সূচক চিহ্ন রা রিকারী
(' / ২) নগাওন জাগত। জেনা-

পূর্ণ কপ : পঠএ (পঠয) গেনাহ, কএ (কয) নেন, উঠএ (উঠয) পডতৌক।

অপূর্ণ কপ : পঠ' গেনাহ, ক' নেন, উঠ' পডতৌক।

পঠহ গেনাহ, কহ নেন, উঠহ পডতৌক।

(খ) পূর্বকানিক প্রত খায় (খাএ) প্রবয়মে য (এ) ব্রপ্ত ভহ জাগত, হুদা রোপ-
সূচক রিকারী নহি নগাওন জাগত। জেনা-

পূর্ণ কপ : খাএ (য) গেন, পঠায় (এ) দেহঁ, নহাএ (য) খএনাহ।

অপূর্ণ কপ : খা গেন, পঠা দেহঁ, নহা খএনাহ।

(গ) স্ত্রী প্রবয় ওক উচাবণ ফিয়াপদ, সন্তা, ও বিশেষণ তীনুমে ব্রপ্ত ভহ
জাগত খি। জেনা-

পূর্ণ কপ : দোসবি মানিনি চনি গেনি।

অপূর্ণ কপ : দোসব মানিন চনি গেন।

(ঘ) বর্তমান প্রদত্তক অন্তিম ত ব্রপ্ত ভহ জাগত খি। জেনা-

পূর্ণ কপ : পঠৈত খি, রজৈত খি, গরৈত খি।

অপূর্ণ কপ : পঠৈ খি, রজৈ খি, গরৈ খি।

(ঙ) ফিয়াপদক খরসান ওক, উক, ঐক তথা লীকমে ব্রপ্ত ভহ জাগত খি।

জেনা-

পূর্ণ কপ: ঙ্খিযৌক, ঙ্খিযৌক, ঙ্খলীক, ঙ্খৌক, ঙ্খৈক, ঙ্খরিতৌক, হোগক।

অপূর্ণ কপ : ঙ্খিযৌ, ঙ্খিযৌ, ঙ্খলী, ঙ্খৌ, ঙ্খৈ, ঙ্খরিতে, হোগ।

(চ) ফিয়াপদীয় প্রবয় হ্, ত্ তথা হকাবক রোপ ভহ জাগত। জেনা-

পূর্ণ কপ : হ্খি, কহনহি, কহনহ্, গেনহ, নহি।

অপূর্ণ কপ : হ্খি, কহনহি, কহনো, গেনহ, নগ, নখি, নে।



विदेह ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२)

मानकीकृत ISSN 2229-547X VIDEHA

१. ध्वनि स्थानांतरण : कोनो-कोनो स्वर-ध्वनि अपना जगहसँ ठठि कइ दोसब ठाम
चलि जागत अछि । खास कइ द्रव्य ग आ उँक सङ्गमे ग राँत नागू होगत
अछि । मैथिलीकवण भइ गेल शिद्धक मध्य रा अन्तमे जँ द्रव्य ग रा उँ आरँए तँ
उकव ध्वनि स्थानांतरित भइ एक अक्षर आगाँ आरि जागत अछि । जेना- शनि
(शिगन), पानि (पागन), दानि (दागन), माँठि (मागठि), काँड (काँड्ड), मांस
(माँउस) आदि । झुदा तसेम शिद्ध सभमे ग निश्चय नागू नहि होगत अछि ।
जेना- बगिचै बगिचै आ सुधाधुँस सुधाधुँस नहि कहल जा सकैत अछि ।

१०. हननु ()क प्रयोग : मैथिली भाषामे सामान्यतया हननु ()क आरथकता नहि
होगत अछि । कावण जे शिद्ध अन्तमे अ उँचावण नहि होगत अछि । झुदा
संस्कृत भाषासँ जहिनाक तहिना मैथिलीमे आगेल (तसेम) शिद्ध सभमे हननु
प्रयोग कएल जागत अछि । एहि पौथीमे सामान्यतया संपूर्ण शिद्धकै मैथिली
भाषा सङ्गमे निश्चय अन्वय हननुरिहीन बाखन गेल अछि । झुदा र्याकवण सङ्गमे
प्रयोजनक गेल अन्वयक स्थानपव कतह-कतह हननु देल गेल अछि । प्रसुत
पौथीमे मैथिली लेखनक प्राचीन आ नवीन दुनू शैलीक सबन आ समीचीन पक्ष
सभकै समेटि कइ रर्ष-रिगस कएल गेल अछि । स्थान आ समयमे रचितक
सङ्गि हनु-लेखन तथा तकनीकी दृष्टिसँ सेहो सबन होरँरँना हिसारसँ रर्ष-
रिगस मिलाउन गेल अछि । रर्तमान समयमे मैथिली मातृभाषी पर्यंतकै आन
भाषाक माध्यमसँ मैथिलीक ज्ञान लेरँ पडि बहन परिप्रेक्ष्यमे लेखनमे सहजता
तथा एककपतापव ध्यान देल गेल अछि । तखन मैथिली भाषाक मूल विशेषता
सभ र्पित नहि होगक, ताँह दिस लेखक-मन्दन सचेत अछि । प्रसिद्ध
भाषाशास्त्री डा. बामारताव यादवक कहँ छनि जे सबनतक अन्वयमे एहन
अवस्था किन्न नै आरँ देरँक चाली जे भाषाक विशेषता छँहिमे पडि जाए ।
-(भाषाशास्त्री डा. बामारताव यादवक धारणाकै पूर्ण रूपसँ सङ्ग नइ निर्धारित)

११. मैथिली अकादमी, पटना द्वारा निर्धारित मैथिली लेखन-नेव

१. जे शिद्ध मैथिली-साहित्यक प्राचीन कालसँ आग धरि जाहि रर्तनीमे प्रचलित
अछि, से सामान्यतः ताहि रर्तनीमे लिखल जाय- उदाहरणार्थ-

श्राव

एखन
ठाँम
जकव, तकव
तनिकव
अछि



বিদেহ' ১১২ ম অংক ১৭ অগস্ট ২০১২ (বর্ষ ৭ মাস ৭৬ অংক ১১২,
মানুস্ক্রিট সংস্করণ, ISSN 2229-547X VIDEHA

খণ্ডীয়

খখন, খখনি, এখেন, খখনী
ঠিমা, ঠিনা, ঠমা
জেকব, তেকব
তিনকব। (রৈকম্পিক কপে গ্রাফ)
ঐছ, ঐহি, এ।

২. নিম্ননিখিত তিন প্রকাবক কপ রৈকম্পিকতয়া খপনাওন জায়: ভুং গেন, ভুং
গেন রা ভুং গেন। জা বহন ঐছি, জায় বহন ঐছি, জাএ বহন ঐছি। কব'
গেনাহ, রা কবয় গেনাহ রা কবএ গেনাহ।

৩. প্রাচীন মৈথিলীক 'হ' প্লনিক স্থানমে 'ন' নিখন জায় সকেত ঐছি যথা কহননি
রা কহনহি।

৪. 'ঐ' তথা 'ও' ততয় নিখন জায় জত' স্পৃগুত: 'ঐগ' তথা 'ঐউ' সদৃশী
উচাবণ গুগু হো। যথা- দেখৈত, ডলৈক, রৌখা, ছৌক গলাদি।

৫. মৈথিলীক নিম্ননিখিত শিষ্ট এহি কপে প্রযজ হোয়ত: জেহ, সৈহ, গএহ, ওঐহ,
লৈহ তথা দৈহ।

৬. স্ফুস্র গকাবতি শিষ্টমে 'গ' কে ব্রপ্ত কবর সামান্যত: ঐগ্রাফ থিক। যথা-
গ্রাফ দেখি ঐরহ, মানিনি গৈনি (মন্বয় মাএমে)।

৭. স্মৃতত্র দ্রুয় 'এ' রা 'য' প্রাচীন মৈথিলীক উচ্চবণ আদিমে তঁ যথারত বাখন
জায়, কিন্তু ঐধ্বনিক প্রযোগমে রৈকম্পিক কপে 'এ' রা 'য' নিখন জায়। যথা:-
কখন রা কএন, ঐখনাহ রা ঐএনাহ, জায় রা জাএ গলাদি।

৮. উচাবণমে দৃ স্রবক রীচ জে 'য' প্লনি স্মৃত: ঐরি জাগত ঐছি তকবা লেখমে
স্থান রৈকম্পিক কপে দেন জায়। যথা- ধীখা, ঐঠৈখা, রিখাহ, রা ধীয়া, ঐঠৈয়া,
রিযাহ।

৯. সান্নাসিক স্মৃতত্র স্রবক স্থান যথাসম্ভব 'ঐ' নিখন জায় রা সান্নাসিক স্রব।
যথা:- মৈঐগ, কনিঐগ, কিবতনিঐগ রা মৈঐখা, কনিঐখা, কিবতনিঐখা।

১০. কাবকক রিভকিভক নিম্ননিখিত কপ গ্রাফ:- তাখকৈ, তাখসঁ, তাখেঁ, তাখক,
তাখমে। 'মে' মে ঐন্বস্রাব সর্থা লাজ্য থিক। 'ক' ক রৈকম্পিক কপ 'কেব'



बिदेह ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मासिक अंक ISSN 2229-547X VIDEHA

बाखन जा सकैत अछि ।

११. पूर्वकालिक क्रियापदक रौद 'कय' रा 'कय' अराय रैकल्पिक कर्पे नगाउन जा सकैत अछि । यथा:- देखि कय रा देखि कय ।

१२. माँ, भाँ, आदिक स्थानमे माँ, भाँ, आदिक निखन जाय ।

१३. अर्ध 'न' ओ अर्ध 'य' क रँदना अन्तरा नहि निखन जाय, किन्तु डाँपाक सुरिधार्थ अर्ध 'ङ' , 'ण', तथा 'ण' क रँदना अन्तरा नहि निखन जा सकैत अछि । यथा:- अर्ध, रा अर्ध, अर्ध रा अर्ध, कर्ध रा कर्ध ।

१४. हनत चिह्न निश्चयतः नगाउन जाय, किन्तु रिभञ्जिक सँग अकारांत प्रयोग कएन जाय । यथा:- श्रीमान्, किन्तु श्रीमानक ।

१५. सभ एकन कावक चिह्न शिष्टमे सँ क' निखन जाय, हँ क' नहि, सँहज रिभञ्जिक हेतु हँवाक निखन जाय, यथा घब पबक ।

१६. अन्तरासिककेँ चन्द्रिन्दू द्वारा राज कयन जाय । पर्वत द्रष्टाक सुरिधार्थ हि समान जटिन मात्रापव अन्तरासिक प्रयोग चन्द्रिन्दूक रँदना कयन जा सकैत अछि । यथा- हि केव रँदना हि ।

१७. पूर्ण बिबाम पासोसँ (।) सूचित कयन जाय ।

१८. समस्त पद सँ क' निखन जाय, रा हागेल्लसँ जोडि क' , हँ क' नहि ।

१९. निश्च तथा दिश्च शिष्टमे रिकारी (२) नहि नगाउन जाय ।

२०. अर्ध देरनागरी कपमे बाखन जाय ।

२१. किन्तु ध्वनिक नैन नरीन चिह्न रँनराँउन जाय । 'जा' अ नहि रँनन अछि तारैत एहि दू ध्वनिक रँदना पूर्वत अय/ आय/ अय/ आय/ आओ/ ओ निखन जाय । अकि ऐ रा ओ सँ राज कएन जाय ।

ह.- गोरिन्द सा ११/५/१७ श्रीकांत ठाकुर ११/५/१७ अरुण सा "अमन" ११/०५/१७

१. मैथिलीमे अय संपादन पाठक



विदेह ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२)

मानकीय संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

१.१. **उच्चाव निरूपण:** (रौन्ड कउन कप धाँछ):-

दनु न क उच्चावामे दाँतमे जीह सटैत- जेना रौजू नाम , ऋदा ण क उच्चावामे जीह मूधामे सटैत (ले सटैए तँ उच्चाव दौष थिछि)- जेना रौजू गणेश। तानरा मेमे जीह तानसँ , यमे मूधसँ आ दनु ममे दाँतसँ सटैत। निर्गो, सभ आ मोषा रौजि कइ देखु। मैथिलीमे य केँ रौदिक संस्कृत जकाँ य सेहो उच्चित कउन जागत थिछि, जेना रया, दौष। य थनेको स्थानपव ज जकाँ उच्चित होगत थिछि आ ण ड जकाँ (यथा संयोग आ गणेश संज्ञेय आ गङ्गस उच्चित होगत थिछि)। मैथिलीमे र क उच्चाव रौ, ने क उच्चाव स आ य क उच्चाव ज सेहो होगत थिछि।

ओहिना फ्रस ग रौशोकान मैथिलीमे पहिले रौजन जागत थिछि काव' देरनागरीमे आ मिथिलासुवमे फ्रस ग थसुवक पहिले निथनो जागत आ रौजनो जएरौक चाली। काव' जे हिन्दीमे एकर दौषपूर्ण उच्चाव होगत थिछि (निथन तँ पहिले जागत थिछि ऋदा रौजन रौदमे जागत थिछि), से शिक्षा पद्धतिक दौषक काव' हम सभ ओक उच्चाव दौषपूर्ण ठगसँ कइ बहन छी।

थिछि- थ ग छ **ईछ (उच्चाव)**

छथि- छ ग थ - छैथ **(उच्चाव)**

पहुँचि- प हुँ ग च **(उच्चाव)**

आरि थ आ ग ज ए ई ओ ण् थः थ ई सभ नेन मात्रा सेहो थिछि, ऋदा एमे ज ए ओ ण् थः थ केँ सहायक कपमे गनत कपमे प्रयाज आ उच्चित कउन जागत थिछि। जेना थ केँ वी कपमे उच्चित कवरँ। आ देखियो- ए नेन देखिओ क प्रयोग थनचित। ऋदा देखिओ नेन देखियो थनचित। कू सँ ह धवि थ समितित नेनासँ कू सँ ह रनेत थिछि, ऋदा उच्चाव कान हननु हाज शिखर थनुक उच्चावक प्रवृत्ति रैठन थिछि, ऋदा हम जखन मलोजमे ज् थनुमे रैजैत छी, तखनो पवनका लोककेँ रैजैत सुनरहि- मलोजमे, रातुरमे ओ थ हाज ज् = ज रैजै छथि।

हेव छ थिछि ज् आ ए क सहाज ऋदा गनत उच्चाव होगत थिछि- गा।

ओहिना थ थिछि कू आ य क सहाज ऋदा उच्चाव होगत थिछि छ। हेव ने आ व क सहाज थिछि ऐ (जेना ऐमिक) आ सू आ व क सहाज थिछि स्र (जेना मित्र)। त्र नेन त+व।

उच्चावक आँडियो फागन विदेह आकगिर <http://www.videha.co.in/> पव उपनद्ध थिछि। हेव केँ / सँ / पव पूर्व थसुवसँ सटी कइ निथु ऋदा तँ / कइ हटी कइ। एमे सँ मे पहिल सटी कइ निथु आ रौदरना हटी कइ। थकक रौद ठी निथु सटी कइ ऋदा थन ठाय ठी निथु हटी कइ- जेना

डलठी ऋदा **सभ ठी**। हेव उथ म सातम निथु- छठम सातम ले। घवरनामे **बव** ऋदा घवरानीमे **बाव** प्रयाज कक।

वरुए-

बहै ऋदा सकेए (उच्चाव सके-ए)।



बिदेह ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२)

मानकीय संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

झुदा कथनो कान बहए आ बहै ये अर्थ भिन्नता सेहो, जेना से कम्या जगहमे
पार्किंग कबराक अग्रिम बहै ओकरा। झुदनापव पता नागन जे दुनदुन नामा आ
ड्रागव कनाई झसक पार्किंगमे काज करैत बहए।

हुनै, हुनए ये सेहो ए तबहक भेल। हुनए क उच्चारण हुन-ए सेहो।

संयोगले- (उच्चारण संयोगले)

कै/ क२

कैव- क (

कैव क प्रयोग गद्यमे ले कक, पद्यमे क२ सकै छी।)

क (जेना बामक)

- बामक आ संगे (उच्चारण बाम कै / बाम क२ सेहो)

सँ स२ (उच्चारण)

चन्द्ररिन्दू आ अन्नस्राव- अन्नस्रावमे कठ धविक प्रयोग होगत अछि झुदा
चन्द्ररिन्दूमे ले। चन्द्ररिन्दूमे कनेक एकावक सेहो उच्चारण होगत अछि- जेना

बामसँ- (उच्चारण बाम स२) बामकै- (उच्चारण बाम क२/ बाम कै सेहो)।

कै जेना बामकै भेल हिन्दीक को (बाम को)- बाम को= बामकै

क जेना बामक भेल हिन्दीक का (बाम का) बाम का= बामक

क२ जेना जा क२ भेल हिन्दीक कव (जा कव) जा कव= जा क२

सँ भेल हिन्दीक से (बाम से) बाम से= बामसँ

स२, त२, त, कैव (गद्यमे) ए चक शिष्ट सरलक प्रयोग अवाञ्छित।

कै दोसव अर्थ प्रहाज भ२ सकैए- जेना, कै कहनक? रिजिजि “क”क रँदना
एकव प्रयोग अवाञ्छित।

नकि, नहि, ले, नग, नँग, नगँ, नगं ए सबक उच्चारण आ लेखन - ले

ओर क रँदनामे झ जेना मरुझपूर्ण (मरुओरुपूर्ण ले) जातए अर्थ रँदनि जाए
ओतहि मात्र तीन अक्षरक संज्ञाक्षरक प्रयोग उचित। सम्पति- उच्चारण स स
ग त (सम्पति ले- कावण सही उच्चारण आसानीसँ समुह ले)। झुदा सरतिम
(सरतिम ले)।

वास्तिव्य (वास्तिव्य ले)

सकैए/ सकै (अर्थ परिवर्तन)

पौछेमे पौछे नेन/ पौछेए नेन

पौछेए पौछेए (अर्थ परिवर्तन) पौछेए पौछे

ओ लोकनि (छठी क२, ओ मे रिकारी ले)

ओअ/ ओहि

ओहिमे/

ओहि नेन/ ओहि क२

अथर्वी कैसरे



बिदेह ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२)

मानवीय सहकार्य ISSN 2229-547X VIDEHA

पठितव्य

देखियोक/ (देखियोक ले- तहिन आ मे ज्ञान आ दीर्घक यात्राक प्रयोग
अवचित)

जर्ज / जेक

तंग / तंग

होत / हत

नहि / नहि / नंग / नग ले

सोरो / सोरो

बैठ /

बैठ (सोरोओन)

गाथ (गाथ नहि), दूदा गाथक दूध (गाथक दूध ले।)

बहरो / पहिले

हमरी / अरी

सर - सत

सबलक - सबलक

धरि - तक

गग - रौत

सुसर - समसर

सुसरो / समसरो / सुसनह - समसनह

हमरा आ - हम सत

आकि - आ कि

सकेड / करेड (गद्यमे प्रयोगक आरथकता ले)

लोखन / होनि

जाखन (जानि ले जेना देन जागन) दूदा जानि-बूनि (अर्थ परिवर्तन)

गग / जाग

आड / जाड / आड / जाड

मे, के, स, पव (शेड्स सटो क२) त क२ ध२ द२ (शेड्स सटो क२) दूदा दूदा
रा रैसी रिभिजि संग बहनापव पहिन रिभिजि ठोके सटोड। जेना एसे स ।

एकटी, दूटी (दूदा क२ टी)

रिकावीक प्रयोग शेड्स अत्रमे, रौचमे अनावथक कपे ले। आकावातु आ

अत्रमे अ क रौद रिकावीक प्रयोग ले (जेना दिख

. आ / दिय , आ , आ ले)

अपेस्ट्रायनक प्रयोग रिकावीक रैदनामे कवर अवचित आ यात्र हस्तक
तकनीकी नूनताक परिचायक)- ओना रिकावीक संस्कृत कप २ अत्रगत कहन
जागत अडि आ रतनी आ उचावण दू ठाम एकव नोप बहैत अडि/ बहि सकेत
अडि (उचावणमे नोप बहिने अडि)। दूदा अपेस्ट्रायन सेहो अत्रेजाने
पससिर केसमे होगत अडि आ अत्रेचमे शेड्समे जतए एकव प्रयोग होगत



बिदेह ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानकीह संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

अछि जेना *raison d'être* एतए सेहो एकव उचावना लेजोन डेठव लोगत
अछि, माने अपोसद्वर्षने अरकाश ले दैत अछि रवन जोडैत अछि, से एकव
प्रयोग बिकाबीक रदना देनाग तकनीकी कपे सेहो अवचित)।

अगमे, एहिमे/ एये

जगमे जाहिमे

एथन/ अथन/ अगथन

ले (के नहि) ये (अवस्थाव बहित)

मे

दर

तँ (त२ त ले)

मँ (म२ म ले)

गाछ तब

गाछ वन

मँम वन

जो (जो *go*, कबे जो *do*)

तो/तअ जेना- ते दूखारे/ तअमे/ तअने

जो/जअ जेना- जे कावना/ जअमँ/ जअने

ए/अअ जेना- ए कावना/ एमँ/ अअने/ मदा एकव एकटा थोस प्रयोग- नावति
कतेक दिनमँ कहैत बहैत अअ

लो/वअ जेना नैमँ/ नअने/ नै दूखारे

नहँ/ लो

नेलो/ नेलो/ नेलो/ नेनहँ/ नेनहँ/ नेनहँ

जअ/ जाहि जे

जाहिआम/ जाहिआम/ जअआम/ जेआम

एहि/ अहि/

अअ (बकक अतमे आर) / ए

अअछ/ अछि/ अछ

तअ/ तहि/ तो/ ताहि

ओहि/ ओअ

मोथि/ मोअ

जोआ/ जोआ/ जोआ

बनेली/ बनेहि

तो/ तँ/ तँ

जअर/ जअर

ॐ



बिदेह ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानुसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X **VIDEHA**

१७.

३०. **की** बूबन जे कि बूबन जे

३०. **जे** जे / जे२

३१. **कूदि** / **यादि**(मोन पावर) कूगद/यागद/कूद/याद/

यादि (मोन)

३२. **अछो** / **ओछो**

३३.

हँस / **हँस** / **हँस**

३४. **लो** **आकि दस** / लो किंरा दस / लो रा दस

३५. **सास-ससुव** सास-ससुव

३६. **डल** **सात** ड/डः / सात

३७.

३८. **की** की / की२ (दीर्घाकावातुमे २ रजित)

३९. **जराव** जराव

४०. **कबताह** / **कबताह** कबताह

४१. **दना** दिशि दना दिशि / **दना** दिशि

४२.

४३. **पेवह** गयनाह/गयनाह

४४. **किड** **आव** / किड ओव / किड आव

४५. **जाध डव** / **जाधत डव** जाति डव / जेत डव

४६. **पूँछ** **जे** **जाधत डव** / **जे** **जाध डव** पूँछ / जेत जाधत डव

४७.

जराव (यरा) / **जराव** (खोजी)

४८. **नय** / **वय** क / **क२** / **वय क२** / **क२** / **क२** / **क२**

४९. **न** / **क२** कय

५०.

५१. **एथन** / **एथले** / **अथन** / **अथले**

५२.

अलीके अलीके

५३. **गलीव** गलीव

५४.

धाव पाव केनाथ धाव पाव केनाथ/केनाथ

५५. **जेका** / **जेका**

जका

५६. **तलिना** तलिना

५७. **एकव** एकव

५८. **बलिउ** बलिउ



विदेह ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

†४. शुश्रूष

/ शुश्रूषा सुश्रूष

†३. सठहाक सठहाक †३.

हुवि

†१. कवगयो/७ कलेयो ल देवक /कवियो-कवगयो

†१. पुर्वोवि

पुर्वोष

†२. सगङ्गा १-साँडी

सगङ्गा १-साँडी

२०. पगल-पगल पेले-पेले

२१. बेवबोको

२२. बेवबोको

२३. वगी

२४. लो-लो - लो-लो

२५. बुँसव बुँसव

२६.

बुँसव (संरक्षण अर्थमे)

२७. योह योह / अहो सैहो अहो

२८. तातिव

२९. अयनाय- अयनाय/ अयनाय/ अयनाय

३०. निन्न- निन्द

३१.

विन रिन

३२. जाय जाय

३३.

जाय (in different sense)-last word of sentence

३४. उत पव आवि जाय

३५.

ल

३६. बेवब (pl ay) - बेवब

३७. शिकायत- शिकायत

३८.

ठप- ठप

३९.

पद- पद

४०. कनिय कनिय कनिय



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानुसिंह सन्तुलन ISSN 2229-547X VIDEHA

१११. बाकस- बाकस

११२. लोथ- लोथ लोथ

११३. अडवदा-

अडवदा

११४. बुंमवहि (different meaning- got understand)

११५. बुंमवहि/बुंमवहि (understood himself)

११६. चवि- चवि चवि गेव

११७. अथाथ- अथाथ

११८.

मोन पाठवहि/ मोन पाठवहि/ मोन पाठवहि

११९. कैक- कैक- कैक

१२०.

का न ग

१२१. जलनाथ

१२२. जलनाथ जलनाथ- जलनाथ

जलनाथ

१२३. लोथ

१२४.

गवरोवहि/ गवरोवहि गवरोवहि/ गवरोवहि

१२५.

चिथैत- (to test) चिथैत

१२६. कवरोवहि (willing to do) करैयो

१२७. जेकवा- जेकवा

१२८. तैकवा- तैकवा

१२९.

बिदेसब झालेयो/ बिदेसब झालेयो

१३०. कवरैयनहुँ/ कवरैयनहुँ/ कवरैयनहुँ कवरैयनहुँ

१३१.

लविक (उठावण हावक)

१३२. उजन रजन अकसोच/ अकसोस कसत/ कसत/ कागज

१३३. अथै लन/ अथै-लन

१३४. पिछा / पिछा/पिछा

१३५. नथै/ ले

१३६. रैछा नथै

(ले) पिछा लन

१३७. तन ल (नथै) कहैत अछि। कहै/ सुनै देवे डव नद कहैत-कहैत/

सुनैत-सुनैत/ देवेत-देवेत



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानुषीह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१३४.

कठक गोट/ कठाक गोट

१३५. कयाव-धयाव/ कयाज- धयाज

१३६.

- वन न ग

१३७. खेवाव (for pl ayi ng)

१३८.

डकिह/ डकि

१३९.

लोवत लोव

१४०. का कियो / केउ

१४१.

केने (hair)

१४२.

केस (court -case)

१४३.

- रैननाव/ रैननाय/ रैनना

१४४. जखनाव

१४५. कयौ कयौ

१४६. चचा चचा

१४७. कय कय

१४८. डूरीव/ डूरीव/ डूरीव डूरीव/ डूरीव

१४९. अथुनका/

अथुनका

१५०. वथ विथ (राकाक अतिम गेह)- व

१५१. कयनक/

केक

१५२. गयौ गयौ

१५३.

- रवदी रदी

१५४. सुना खेवठ सुना/सुना

१५५. एनाव-खेनाव

१५६.

तेना ल खेवठ/ तेना ल खेवठ

१५७. नथि / ले

१५८.

डरो डरो



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानकीह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१७३. कृत्य कृत्य कृत्य

१७४. उमरिगव-उमरिगव उमरिगव

१७५. उमरिगव

१७६. धोन/धोन धोन

१७७. गप/गप

१७८.

के के

१७९. दवरिगव/ दवरिगव

१८०. ठाय

१८१.

धवि तक

१८२.

धवि लोठि

१८३. धवि लोठि

१८४. धवि

१८५. धवि

१८६. धवि (पद्यमे धाय)

१८७. धवि / धवि

१८८.

कवरिगव कवरिगव

१८९. कवरिगव

१९०. कविता / कविता

१९१.

गह्वरिगव गह्वरिगव

१९२. गह्वरिगव गह्वरिगव गह्वरिगव

१९३.

गह्वरिगव गह्वरिगव गह्वरिगव

१९४.

गह्वरिगव (उचावगव गह्वरिगव)

१९५. गह्वरिगव (उचावगव गह्वरिगव)

१९६. गह्वरिगव गह्वरिगव

१९७. गह्वरिगव/ गह्वरिगव

गह्वरिगव

१९८. कवरिगव/ कवरिगव/ कवरिगव

कवरिगव/ कवरिगव

१९९. कवरिगव/ कवरिगव

२००.



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

आकि कि

१०१. गहँटा

गहँटा

१०२. रँगी जवाय/ जवाय जवा (आंगि नगा)

१०३.

मे से

१०४.

हाँ मे हाँ (हाँमे हाँ रिभक्तिमे लहाँ कए)

१०५. केव खैल

१०६. कृष्ण(spacious) खैल

१०७. होयतहि/ होयतहि/ होयतनि/होयतनि/ होयतहि

१०८. हाथ मटियाएर/ हाथ मटियाएर/ हाथ मटियाएर

१०९. केका खैल

११०. देखाए देखा

१११. देखाए

११२. सउवि सउव

११३.

आखै सारै

११४. गेलै/ गेलै/ गेलै

११५. खैल/ खैल

११६. केनो/ केनो/ केनो/ केनो

११७. किड न किड/

किड ले किड

११८. घुमेन/ घुमेन/ घुमेन

११९. एका/ एका

१२०. अ: / अ:

१२१. नय/

वय (अर्थ-परिवर्तन) १२२. कनीक/ कनीक

१२३. मरक/ मरक

१२४. मिना/ मिना

१२५. क/ क

१२६. जा/ जा

जा

१२७. आ/ आ

१२८. भ/ भ (अर्थ-कमीक घातक)

१२९. नियम/ नियम

१३०.



विदेह ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२)

मानवीय संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

लेखक/ लेखिका

१११. पहिल प्रथम टा/ बौद्धक रीचक टा

११२. तलि/तलि/ तलि/ तलि

११३. कलि/ कलि

११४. तँ/ तँ

११५. तँ/ तँ

११६. नँ/ नँ/ नलि/ नलि

११७. तँ/ तँ/ तँ/ तँ

११८. तँ/ तँ/ तँ/ तँ

११९. दृष्टि/ दृष्टि

१२०. श्री (come)/ श्री (conjunction)

१२१.

श्री (conjunction)/ श्री (come)

१२२. कलि/ कलि/ कलि/ कलि

१२३. गेलि- गेलि- गेलि

१२४. गेलि- गेलि- गेलि

१२५. कलि- कलि- कलि/ कलि

१२६. किड न किड- किड ल किड

१२७. केलि- केलि

१२८. श्री (come)- श्री (conjunction-and)/ श्री। श्री- श्री/ श्री- श्री

१२९. तँ- तँ

१३०. गेलि- गेलि- गेलि

१३१. गेलि- गेलि

१३२. गेलि- गेलि/ गेलि

१३३. श्री- श्री/ श्री (conjunction), श्री कहलक (he said)/ श्री

१३४. श्री तँ/ श्री तँ/ श्री तँ/ श्री तँ

१३५. दृष्टि/ दृष्टि

१३६.

गेलि/ गेलि

१३७. तँ/ तँ/ तँ/ तँ

१३८. श्री

१३९. श्री/ श्री

१४०. श्री/ श्री

१४१. श्री/ श्री

१४२. श्री/ श्री

१४३. श्री/ श्री/ श्री/ श्री

१४४. श्री/ श्री/ श्री/ श्री/ श्री/ श्री



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानुषीह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१ अ.३. केन/ केन/ कन/ कन

१ अ.४. अ/ अह

१ अ.५. जले/ जन

१ अ.६. गेवनि/

गेवह (अर्थ परिवर्तन)

१ अ.७. केवहि/ कएवहि/ केवनि/

१ अ.८. नय/ वय वयह (अर्थ परिवर्तन)

१ अ.९. कनीक/ कलेक/ कनी-मनी

१ अ.१०. गठवहि गठवनि/ गठनगन/ गठवहि/ गठवनि/

१ अ.११. निशय/ नियम

१ अ.१२. लेवह/ लेवह

१ अ.१३. पल्लि अरु बल्ल ठ/ रौचमे बल्ल ठ

१ अ.१४. आकावाभुमे रिक्काविक प्रयोग उचित नै/ अपोस्ट्रोफिक प्रयोग फाल्गुनिक
तकनीकी नूनताक परिचायक ओकर रीदना अरु अह (रिक्काव) क प्रयोग उचित

१ अ.१५. केव (पद्यमे आह) / -क/ क२/ के

१ अ.१६. डेहि- डहि

१ अ.१७. वनेय/ नगेये

१ अ.१८. होयत/ हयत

१ अ.१९. जायत/ जयत/

१ अ.२०. आगत/ अगत/ आगत

१ अ.२१.

आगत/ अगत/ अगत

१ अ.२२. पिअरौक/ पिअरौक/ पिअरौक

१ अ.२३. अरु/ अरु

१ अ.२४. अरु/ अरु

१ अ.२५. अगत/ अगत/ अगत/ अगत

१ अ.२६. जाहि/ जाहि/ अरु/ अरु

१ अ.२७. जायत/ जेत/ अरु/ अरु

१ अ.२८. अरु/ अरु

१ अ.२९. केक/ कक

१ अ.३०. आयन/ अरु/ अरु

१ अ.३१. अरु/ अरु/ अरु (नानति जाय नगनीह ।)

१ अ.३२. अरु/ अरु

१ अ.३३. अरु/ अरु

१ अ.३४. तहि/ तै/ तै

१ अ.३५. गायर/ गायर/ गायर

१ अ.३६. अरु/ अरु/ अरु



बिदेह ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२)

मानकीय संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

१५१. मेवा/मेवा/ मेवा (जोत मेवा गेन)

१५१. कहेत बली/देवेत बली/ कहेत डवो/ कहे डवो- अलिना छकेत/ गटेत
(गटे-गटेत अर्थ कबला काव परिवर्तित) - आव बुसे/ बुसेत (बुसे/ बुसे
छी म्हा बुसेत-बुसेत)/ सकेत/ सके। कहेत/ कहे। दे/ देत। छेका
छे। रकेत/ रकेत। बखरा/ बखरा। बिना/ बिना। बातिका बातक बुसे
आ बुसेत केव अपन-अपन जगहनव प्रयोग समीचीन अछि। बुसेत-बुसेत
आ बुसविष। लखै बुसे छी।

१५२. दुआरे/ दूरे

१५३. जेठ/ जेठ/ जेठ

१५४.

बना/ बीना/ बीना (बोव बन/ बोव बीन)

१५५. तक/ धवि

१५६. गे/ ले (meaning different - जनरै गे)

१५७. स/ स (महा द, न)

१५८. उ. उ. (तीन अक्षरक मेव रैदना पुनर्जाति एक आ एकठा दोसबक उपयोग)
आदिक रैदना उ. आदि। मत उ. उ. मह/ कर्ता/ कर्ता आदिमे उ. संज्ञक कोनो
आरथकता मैथिलीमे ले अछि। बउर

१५९. रै/ रै/ रै

१६०. रौना/ राना रौना (वैरैना)

१६१.

रा/ रा (रैदनेरानी)

१६२. रा/ रा/ रा

३००. अन्वार्थिक/ अन्वार्थिक

३०१. वे/ वे/ वे

३०२. व/ व/ व

३०३. व/ व/ व

जेठ/ जेठ/ जेठ

३०४. व/ व/ व

३०५. व/ व/ व

३०६. व/ व/ व

३०७. आ (come)/ आ (and)

३०८. प/ प/ प

३०९. २ केव बारबार शिष्टक अन्तमे मात्र, यथासंभव रीतिमे ले।

३१०. कहेत/ कहे

३११.

ब/ ब/ ब (meaning different)

३१२. ता/ ता/ ता



बिदेह ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२)

मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

३५१. खवाग/ खवाग

३५२. खौवन/ खौनि/ खौगनि

३५४. जार्जि/ जार्ज

३५३. कागज/ कागज/ कागज

३५७. निवे (meaning different - swallow)/ निवे (शमल)

३५९. वास्तिव/ वास्तिव

DATE-LIST (year - 2012-13)

(१४१० रूपवै प्रव)

Marriage Days:

Nov.2012- 25, 26, 28, 29, 30

Dec.2012- 5,9, 10, 13, 14

January 2013- 16, 17, 18, 23, 24, 31

Feb.2013- 1, 3, 4, 6, 8, 10, 14, 15, 18, 20, 24, 25

April 2013- 21, 22, 24, 26, 29

May 2013- 1,2,3,5,6,9,12,13,17,19,20,22,23,24,26,27,29,30,31

June 2013- 2,3

July 2013- 11, 14, 15

Upanayana Days:

January 2013- 16



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानुषिह संस्कृतम् **ISSN 2229-547X VIDEHA**

February 2013- 14, 15, 20, 21

April 2013- 22

May 2013- 20, 21

Dviragaman Din:

November 2012- 25, 26, 28, 29

December 2012- 2, 3, 14

February 2013- 14, 15, 18, 20, 21, 22, 27, 28

March 2013- 1

April 2013- 18, 22, 24, 26, 28, 29

May 2013- 12, 13

Mundan Din:

November 2012- 26, 30

December 2012- 3

January 2013- 18, 24

February 2013- 1, 14, 15, 20, 28

April 2013- 17

May 2013- 13, 23, 29



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानुषिह संस्कृतम् **ISSN 2229-547X VIDEHA**

June 2013- 13, 19, 26, 27, 28

July 2013- 10, 15

FESTIVALS OF MITHILA (2012-13)

Mauna Panchami -08 July

Madhushravani - 22 July

Nag Panchami - 24 July

Raksha Bandhan- 02 Aug

Krishnastami - 10 August

Kushi Amavasya / Somvari Vrat - 17 August

Vishwakarma Pooja- 17 September

Hartalika Teej - 18 September

ChauthChandra-19 September

Karma Dharma Ekadashi -26 September

Indra Pooja Aarambh- 27 September

Anant Caturdashi - 29 Sep

Agastiyarghadaan- 30 Sep



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानुषिह संस्कृतम् **ISSN 2229-547X VIDEHA**

Pitri Paksha begins- 30 Sep

Jimootavahan Vrata/ Jiti a-08 October

Matri Navami - 09 October

Somvati Amavasya Vrat - 15 October

Kal ashsthapan- 16 October

Bel nauti - 20 October

Patri ka Pravesh- 21 October

Mahastami - 22 October

Maha Navami - 23 October

Vijaya Dashami - 24 October

Kojagara- 29 Oct

Dhanteras- 11 November

Diya bati, shyama pooja-13 November

Annakoota/ Govardhana Pooja-14 November

Bhratri dwitiya/ Chitrakupta Pooja- 15 November

Chhat hi -19 November

Devotthan Ekadashi - 24 November



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानुषिह संस्कृतम् **ISSN 2229-547X VIDEHA**

ravivratarambh- 25 November

Navanna parvan- 25 November

KartikPoornima- Sama Vi sarj an- 28 November

Vivaha Panchmi - 17 December

Makar a/ Teela Sankranti -14 Jan

Nar akni varan chaturdashi - 08 February

Basant Panchami / Saraswati Pooja- 15 February

Achla Saptmi - 17 February

Mahashi varatri -10 March

Hol i kadahan-Fagua-26 March

Hol i - 28 March

Var uni Trayodashi -07 April

Chaiti navar atrar ambh- 11 April

Jur i shi tal -15 April

Chaiti Chhathi vrata-16 April

Ram Navami - 19 April

Ravi Brat Ant - 12 May



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

Akshaya Tritiya-13 May

Janaki Navami - 19 May

Vat Savitri - barasait - 08 June

Ganga Dashhar a-18 June

Somavati Amavasya Vrat a- 08 July

Jagannath Rath Yatra- 10 July

Hari Sayan Ekadashi - 19 July

Aashadhi Guru Poor ni ma-22 Jul

VI DEHA ARCHI VE

१.बिदेह अ-पत्रिकाक सभ्ठा पुवान अंक ब्रैल, तिवहता आ देवनागरी कपमे
Videha e journal's all old issues in Braille Tirhuta
and Devanagari versions

बिदेह अ-पत्रिकाक पठिन ३.० अंक

बिदेह अ-पत्रिकाक ३.०म सँ आगाँक अंक

१.मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download

३.मैथिली ऑडियो संकनन Maithili Audio Downloads

४.मैथिली वीडियो संकनन Maithili Videos



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

३. मिथिला चित्रकला/ आधुनिक चित्रकला आ चित्र Mithila Painting/
Modern Art and Photos

“बिदेह”क एहि सब सहयोगी विकसित भेलो एक लेब जाले ।

७. बिदेह मैथिली क्विज :

<http://videhaquiz.blogspot.com/>

१. बिदेह मैथिली जानबुत एग्रीगेटर :

<http://videha-aggregator.blogspot.com/>

४. बिदेह मैथिली साहित्य अध्येतृजीमे अनूदित

<http://madhubani-art.blogspot.com/>

९. बिदेहक पूर्व-रूप “भानसबिक गाँव” :

<http://gajendrathakur.blogspot.com/>

१०. बिदेह अड्डेक :

<http://videha123.blogspot.com/>

११. बिदेह हाउस :

<http://videha123.wordpress.com/>

१२. बिदेह: सदेह : पहिल तिवृता (मिथिला:सकल) जानबुत (बैक:सकल)

<http://videha-sadeha.blogspot.com/>

१३. बिदेह:ब्रेन: मैथिली ब्रेनमे: पहिल लेब बिदेह द्वारा

बि ए र बिदेह *Videha बिदेह* www.videha.co.in www.videha.com बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिक ई
पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिक* ३ पत्रिका



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानुषिह संस्कृतम् **ISSN 2229-547X VIDEHA**

<http://videha-braille.blogspot.com/>

१४. *VI DEHA 1ST MAITHILI FORTNIGHTLY EJOURNAL ARCHIVE*

<http://videha-archive.blogspot.com/>

१३. बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिक ३ पत्रिका मैथिली पोथीक आर्काइव

<http://videha-pothi.blogspot.com/>

१३. बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिक ३ पत्रिका ऑडियो आर्काइव

<http://videha-audio.blogspot.com/>

११. बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिक ३ पत्रिका वीडियो आर्काइव

<http://videha-video.blogspot.com/>

१५. बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिक ३ पत्रिका मिथिला चित्रकला, आधुनिक कला आ
चित्रकला

<http://videha-paintings-photos.blogspot.com/>

१६. मैथिल आब मिथिला (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय जानबूत)

<http://maithilaurmaithila.blogspot.com/>

१०. श्रुति प्रकाशन

<http://www.shrutipublication.com/>

११. <http://groups.google.com/group/videha>

बि ए रु बिदेह *Videha* बिदेह www.videha.co.in www.videha.com बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई
पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम ट्योथिनी पौष्पिक अ पत्रिका



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,
मानुषिह संस्कृतम् **ISSN 2229-547X VIDEHA**

Google समूह

VI DEHA केव सदस्यता निश्च

अमेन : ? ? ? ? ? ? ?

एहि समूहपब जाउ

२२ http://groups.yahoo.com/group/VI_DEHA/

Subscri be to VI DEHA

Power ed by us.groups.yahoo.com

२३ गजेन्द्र ठाकुर अडेकर

<http://gajendrathakur123.blogspot.com>

बि ए र बिदेह *Videha बिदेह* www.videha.co.in www.videha.com बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई
पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका*



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानुषिह संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

२४. लेना छुठेका

<http://mangan-khabas.blogspot.com/>

२३. बिदेह रेडियो: मैथिली कथा-कविता आदिक पहिने पोडकास्ट साजठे

<http://videha123radio.wordpress.com/>



२७. [Videha Radio](#)



२९. [Join official Videha facebook group.](#)

२८. बिदेह मैथिली नाछे उमेर

<http://maithili-drama.blogspot.com/>

२९. समदिया

<http://esamaad.blogspot.com/>

३०. मैथिली फिल्मस

<http://maithilifilms.blogspot.com/>

३१. अनचिन्हार आखर

<http://anchinharakharkolkata.blogspot.com/>

३२. मैथिली हाजकू

<http://maithili-hai-ku.blogspot.com/>



बिदेह ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानक संस्कृत ISSN 2229-547X VIDEHA

३३. मानक मैथिली

<http://manak-maithili.blogspot.com/>

३४. विहानि कथा

<http://vihani-katha.blogspot.in/>

३५. मैथिली कविता

<http://maithili-kavita.blogspot.in/>

३६. मैथिली कथा

<http://maithili-katha.blogspot.in/>

३७. मैथिली समालोचना

<http://maithili-samalochna.blogspot.in/>

महत्त्वपूर्ण सूचना: (१) बिदेह द्वारा धारारालिक रूपे ई-प्रकाशित कएव गेल
गजेंद्र ठाकुरक निरंज-अरंज-समीक्षा उपन्यास (महत्त्वपूर्ण) , पञ्च-मंजु
(महत्त्वपूर्ण उपन्यास), कथा-गल्प (गल्प-ग्रन्थ), नाटक(संस्कृत), महाकाव्य
(ब्रह्मकाव्य आ अमरकालीन मन) आ रीति-रिवाज आदि बिदेहमे संपूर्ण ई-प्रकाशनक
बाद छिटि कर्ममे । कृपयाकृपया अन्तिमक संस्करण-१ सँ १ Combined ISBN
No-978-81-907729-7-6 बिबरन एहि पृष्ठपर नीचाँमे आ प्रकाशनक साइट
<http://www.shruti-publication.com/> पर ।

महत्त्वपूर्ण सूचना (२): सूचना: बिदेहक मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी मैथिली लेख
(अटैचमेन्ट) पर पल्लि लेबि ई-डिजिटल) एम.एम. एम.क्यू.एल. सर्वर आधरित -

बि ए रु बिदेह Videha बिदेह www.videha.co.in www.videha.com बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal बिदेह प्रथम ट्वेन्थिनी पत्रिका अ पत्रिका



बिदेह ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२)

मान्य बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

Based on ms-sql server Maithili-English and English-Maithili Dictionary- बिदेहक अंग्रेजीक- बहनाखन सँ भये।

कुरुक्षेत्रम् अन्तर्यन्त- गजेंद्र ठाकुर



गजेंद्र ठाकुरक निबन्ध-परिचय-प्रशिक्षण, उपन्यास (अन्तर्वार्ता), पद्य-संग्रह (अन्तर्वार्ता), कथा-गल्प (गल्प ग्रन्थ), नाटक(प्रकाशना), महाकाव्य (ब्रह्मकाव्य अथवा अन्तर्वार्ता यन्) अथवा बौद्धिक-कौशलगत बिदेहमे संपूर्ण अ-प्रकाशित बौद्धिक बिदेहमे। कुरुक्षेत्रम् अन्तर्यन्त, सन्-१ म १

1st edition 2009 of Gajendra Thakur's KuruKshetram-Antarmanak (Vol. I to VII)- essay-paper-criticism, novel, poems, story, play, epics and Children-grown-ups literature in single binding. Language:Maithili

७९९ पृष्ठ : मूल अ. र. 100/- (for individual buyers inside india)

(add courier charges Rs.50/-per copy for Delhi/NCR and Rs.100/- per copy for outside Delhi)

For Libraries and overseas buyers \$40 US (including postage)

The book is AVAILABLE FOR PDF DOWNLOAD AT

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<http://videha123.wordpress.com/>

Details for purchase available at print-version

बि ए र बिदेह Videha बिदेह www.videha.co.in www.videha.com बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई
पत्रिका Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal बिदेह प्रथम ट्योथिनी पौष्पिक अ पत्रिका



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

publishers's site

website:- <http://www.shruti-publication.com/>

or you may write to

e-mail: shruti-publication@shruti-publication.com

बिदेह: सदेह : १: २: ३: ४ तिबहुता : देवनागरी 'बिदेह' क. छिटे संस्कृत
बिदेह-अ-पत्रिका (<http://www.videha.co.in/>) क छनव बचना अधिकृत ।



बिदेह:सदेह: १: २: ३: ४

संपादक: गजेन्द्र ठाकुर ।

Details for purchase available at print-version
publishers's site <http://www.shruti-publication.com> **or**
you may write to [shruti-publication@shruti-](mailto:shruti-publication@shruti-publication.com)
[publicati on.com](mailto:shruti-publication@shruti-publication.com)

२ संक्षेप-



বিদেহ' ১১২ ম অংক ১৭ অগস্ত ২০১২ (বর্ষ ৭ মাস ৭৬ অংক ১১২,

মাসিক সংস্করণ ISSN 2229-547X VIDEHA

[বিদেহ ও-পত্রিকা, বিদেহঅদেহে বিবিবীধের খা দেবদাসী খা গজেন্দ্র ঠাকুর সাত
কড়ক- নিবন্ধ-পত্র-সমীক্ষাউপাখ্যাস (মহাবীরোনি) . পদ্ম-সংকল (মহাবীরোনি)
চৌপদ্য, কথ্য-গল্প (গল্প গুচ্ছ), নাটক (সংকল), ফলকাল (ফলকাল) খা ঋতুসংকল (ম)
খা বীণ-মন্ডলী-কিশোর জগত- সংকল কবিতা-ঋতুসংকল ঋতুসংকল মাদে ।]

১. শ্রী গৌরিন্দ না- বিদেহকে তবগজানপব উতাবি বিশ্বভবিমে মাতৃভাষা মৈথিলীক
নহবি জগাওন, খেদ জে খপলেক এহি মহাভিযানমে হম এখন ধবি সগ নহি দএ
সকনহঁ। সুলেত ছী খপলেক স্বম্বাও খা বচনামেক খালোচনা প্রিয় নগেত খি
তৈ কিছু নিখক মৌন ভেন। হমব সহায়তা খা সহযোগ খপলেক সদা উপনহঁ
বহত ।

২. শ্রী বমানন্দ রেণু- মৈথিলীমে ও-পত্রিকা পাক্ষিক কর্পে চনা কহ জে খপন
মাতৃভাষাক প্রচাব কহ বহন ছী, সে ধন্যবাদ । খাগা খপলেক সমস্ত মৈথিলীক
কার্যক হেতু হম দ্ব্যয়স শ্রুভকামনা দহ বহন ছী ।

৩. শ্রী বিদ্যানাথ না "বিদিত"- সংচাব খা প্রাচ্যগিক এহি প্রতিস্পর্ধী গ্লারন যুগমে
খপন মহিমাময় "বিদেহ"কে খপনা দেহমে প্রকট দেখি জতরা প্রসন্নতা খা সন্তোষ
ভেন, তকবা কোনো উপনহঁ "মিঠব"স নহি নাপন জা সকেছ ? ..একব ঐতিহাসিক
মূলাকিন খা সাংস্কৃতিক প্রতিফলন এহি শিতাঙ্কিত খঁত ধবি লোকক নজবিমে
খাশচর্যজনক কপস প্রকট হৈত ।

৪. শ্রী. উদয় নাবায়া সিং "নচিকেতা"- জে কাজ খল কএ বহন ছী তকব
চবচা এক দিন মৈথিলী ভাষাক ঐতিহাসমে হোএত । খানন্দ ভএ বহন খি, ও
জানি কএ জে এতেক গোষ্ঠ মৈথিল "বিদেহ" ও জর্নলকে পঠি বহন
ছি । ...বিদেহক চানীসম খঁক পুঁবরাক লেন খিভিনন্দন ।

৩. ডা. গগেশী গুজর- এহি বিদেহ-কর্মমে লাগি বহন খলক সন্মদনশীল মন,
মৈথিলীক প্রতি সমর্পিত মেহনতিক ঋমূত বগ, ঐতিহাস মে এক ঠা রিশিষ্ট,
ফলকাল খাখায় খাবভ কবত, হমবা বিশ্বাস খি । খশেষ শ্রুভকামনা খা রঁধাগক
সঙ্গী, সন্মত...খলক পোখী কবিতা-ঋতুসংকল প্রথম দৃষ্টা রহঁত ভরা তখা
উপযোগী ব্রুমাগছ । মৈথিলীমে তঁ খপনা স্ককপক প্রায়: ও পহিলে এহন ভরা
খরতাবক পোখী থিক । চর্যপূর্ণ হমব চার্দিক রঁধাও স্লকাব কবি ।

৬. শ্রী বামশ্রিয় না "বামবগ"(খার সুর্য্য)- "খপনা" মিথিনাস সঁরধিত...বিষয়
বস্তুসঁ খরগত ভেনহঁ । ...শেষ সন্ত ফশন খি ।



বিদেহ' ১১২ ম অংক ১৭ অগস্ত ২০১২ (বর্ষ ৭ মাস ৭৬ অংক ১১২,

মানুস্ক্রিৎ সংস্করণ, ISSN 2229-547X VIDEHA

৭. শ্রী ব্রজেন্দ্র ত্রিপাঠী- সাহিত্য ঋকাদমী- গঠনবলৈ পব প্রথম মৈথিলী পাক্ষিক
পত্রিকা "বিদেহ" কেব লেন রঁধাঙা আ শ্রুভকামনা স্মীকাব কক।

৮. শ্রী শ্রুত্বল্লভমাব সিংহ "মৌন"- প্রথম মৈথিলী পাক্ষিক পত্রিকা "বিদেহ" ক
প্রকাশনিক সমাচাব জানি কলেক চকিত ক্ষুদা রঁসী আছাদিত ভেনহুঁ। কানচক্কে
পকডি জাতি দূবদৃষ্টিক পবিচয় দেনহুঁ, ওহি লেন হমব মংগনকামনা।

৯. ডা. শিরপ্রসাদ যাদব- ও জানি ঋপাব চর্ষ ভএ বহন ঋষ্টি, জে নর সূচনা-
ঋান্তিক ক্ষেত্রে মৈথিলী পত্রকাবিতাকে প্রবেশে দিখএরাক সাহসিক কদম উঠাওন
ঋষ্টি। পত্রকাবিতামে এহি প্রকাবক নর প্রযোগক হম স্নাগত কলৈত ডী, মংগি
"বিদেহ"ক সফনতাক শ্রুভকামনা।

১০. শ্রী ঋচ্চাচবণা ন্যা- কোনো পত্র-পত্রিকাক প্রকাশন- তাছমে মৈথিলী পত্রিকাক
প্রকাশনমে কে কতেক সহযোগ কবতাহ- ও ত২ ভরিষা কহত। ও হমব ++
রর্ষমে ৭৩. রর্ষক ঋব্রভর বহন। এতেক পৈঘ মহান যত্নমে হমব ত্রৈক্ষাপূর্ণ
ঋহুতি প্রাপ্ত হোয়ত- যারত ঠীক-ঠীক ডী/ বহর।

১১. শ্রী রিজয় ঠাফব- মিশিগন রিশ্বেরিঘানয়- "বিদেহ" পত্রিকাক ঋক দেখনহুঁ,
সম্পূর্ণ ঠীম রঁধাঙক পাত্র ঋষ্টি। পত্রিকাক মংগন ভরিষা হেতু হমব শ্রুভকামনা
স্মীকাব কখন জাও।

১২. শ্রী স্রভাষচন্দ্র যাদব- ও-পত্রিকা "বিদেহ" ক রাঁরেমে জানি প্রসন্নতা
ভেন। "বিদেহ" নিবন্তব পল্লরিত-পল্লিপিত হো আ চতুর্দিক ঋপন স্রগধ পসাবয
সে কামনা ঋষ্টি।

১৩. শ্রী মৈথিলীপুত্র প্রদীপ- ও-পত্রিকা "বিদেহ" কেব সফনতাক ভগবতীস
কামনা। হমব পূর্ণ সহযোগ বহত।

১৪. ডা. শ্রী ভ্রীমনাথ ন্যা- "বিদেহ" গল্টবলৈ পব ঋষ্টি তেঁ "বিদেহ" নাম উচিত
ঋব কতেক কর্পে একব রিরবণা ভএ সকেত ঋষ্টি। ঋগ-কান্দি মোলমে উদ্বগ
বহৈত ঋষ্টি, ক্ষুদা শীঘ্র পূর্ণ সহযোগ দেব। ককক্ষেত্রে ঋন্তম্নিক দেখি ঋতি
প্রসন্নতা ভেন। মৈথিলীক লেন ও ঘঠনা ডী।

১৫. শ্রী বামভরোস কাপডি "ভ্রমব"- জনকপুবধাম- "বিদেহ" ঋন্ননাগন দেখি
বহন ডী। মৈথিলীকে ঋন্তবচিপ্রীয় জগতমে পহুঁচেনহুঁ তকবা লেন হাদিক



बिदेह ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२)

मानचिह्न संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

रैधाग। मिथिला बने सञ्चक संकनन अर्पूर। नेपात्रोक सहयोग भेटैत, से
रिश्वास करी।

१३. श्री बाजनन्दन नानदास- "बिदेह" ग-पत्रिकाक माध्यमसँ रैड नीक काज कए
बहन छी, नातिक अहिठाम देखनहूँ। एकब राबिक अक जखन प्रिठ निकानरँ तँ
हमरा पठायरँ। कनकतामे रैदूत गोठैकेँ हम सागठक पता निखाए देले
छियन्हि। मोन तँ होगत अछि जे दिग्री आरि कए आशीरदि दैतहूँ, ह्रदा उमर
आरि रेशी भए गेल। शुभकामना देशे-बिदेशिक मैथिलकेँ जोडराक नेन। ...
उक्रेष्ट प्रकाशन हकस्केत्रम् अर्तर्मनक नेन रैधाग। अदुत काज कएन अछि,
नीक प्रसुति अछि सात खलमे। ह्रदा अहक सेरा आ से निःस्वार्थ तखन
बूमन जागत जँ अहँ द्वारा प्रकाशित पोथी सञ्चपव दाम निखन नहि बहिकैक।
उतिना सञ्चकेँ रिनहि देन जगतैक। (स्पष्टीकरण- श्रीमान्, अहक सूचनार्थ
बिदेह द्वारा ग-प्रकाशित कएन सञ्चठा सामग्री आकगिरमे
<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/> पव
रिना मूत्रक डाउनलोड नेन उपनहूँ छै आ भुरियामे सेहो बहिकैक। एहि
आकगिरकेँ जे कियो प्रकाशिक अन्वमति नह कइ प्रिठ रुपमे प्रकाशित कएन
छथि आ तकर ओ दाम बखने छथि ताहिपव हमर कोनो निर्यत्रा नहि अछि। -
गजेन्द्र ठाकुर)...

११. डा. प्रेमशंकर सिंह- अहँ मैथिलीमे गठबनेठपव पहिन पत्रिका "बिदेह"
प्रकाशित कए अपन अदुत मातृभाषाबागक परिचय देन अछि, अहक निःस्वार्थ
मातृभाषाबागसँ प्रेरित छी, एकब निमित्त जे हमर सेराक प्रयोजन हो, तँ
सूचित करी। गठबनेठपव आद्यापति पत्रिका देखन, मन प्रहृलित भए गेल।

१५. श्रीमती शैलानिका रमा- बिदेह ग-पत्रिका देखि मोन उल्लाससँ भवि गेल।
रिज्ञान कतेक प्रगति कइ बहन अछि...अहँ सञ्च अन्त आकाशकेँ भेदि दियो,
समस्त रिस्तारक बहसकेँ ताव-ताव कइ दियोक...। अपनेक अदुत प्रसुतक
हकस्केत्रम् अर्तर्मनक रिषयरसुतक दृष्टिसँ गागबमे सागब अछि। रैधाग।

१६. श्री हेतुकव मा, पठना-जाहि समर्पण भारसँ अपने मिथिला-मैथिलीक सेरामे
तपेव छी से सुख अछि। देशेक राजधानीसँ भय बहन मैथिलीक शिखनाद
मिथिलाक गाम-गाममे मैथिली छेतनाक विकास अरथ करव।

२०. श्री योगानन्द मा करिनप्रब, नहेबियासबाय- हकस्केत्रम् अर्तर्मनक पोथीकेँ
निकटसँ देखराक अरसब भेटैन अछि आ मैथिली जगतक एकठा उदुठै ओ
समसामयिक दृष्टिसम्पन्न हस्तारक कनमरन्द परिचयसँ आल्लादित छी। "बिदेह"क



बिदेह ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२)

मासिक अंक ISSN 2229-547X VIDEHA

देवनागरी संस्करण पठनाय क. ८०/- मे उपरुक्त भू सकन जे बिभिन्न लेखक
लोकनिक छायाचित्र, पवित्र पत्रक ओ बचनारनिक समक प्रकाशनसँ ऐतिहासिक
कहन जा सकैछ ।

११. श्री किशोरीकांत मिश्र- कोनकाता- जय मैथिली, बिदेहमे रहूत बास
करिता, कथा, बिपोर्ष आदिक सचित्र संग्रह देखि आ आब अधिक प्रसन्नता
मिथिनाम्ब देखि- रंभांग स्त्रिकाव कएन जाओ ।

१२. श्री जीरकांत- बिदेहक हृदित अंक पठन- अद्भुत मेहनति । चारस-
चारस । किछ समालोचना मबथाह..हृदा सए ।

१३. श्री भागचन्द्र ना- अपनेक कृष्णार्द्रम् अर्तमनिक देखि रूनाएन जेना हम
अपने छपनहुँ अछि । एकब रिशानकाय आभूति अपनेक सर्वसमारोहातक
पवित्रायक अछि । अपनेक बचना समर्थमे उतरोतव वृद्धि हो, एहि शुभकामनाक
संग हार्दिक रंभांग ।

१४. श्रीमती डा नीता ना- अलैंक कृष्णार्द्रम् अर्तमनिक पठनहुँ । जातिबिधिव
शिष्टारनी, धुषि मउ.श शिष्टारनी आ सीत रंसुत आ सत कथा, करिता, उपन्यास,
रान-किशोब साहित सत उतम डन । मैथिलीक उतरोतव विकासक नम्ब
दृष्टिगोचर होगत अछि ।

१५. श्री मायानन्द मिश्र- कृष्णार्द्रम् अर्तमनिक मे हमब उपन्यास महीधनक जे
रिरोध कएन गेन अछि तकब हम रिरोध करैत छी । ... कृष्णार्द्रम् अर्तमनिक
पौथीक नेन शुभकामना । (श्रीमान् समालोचनार्कै रिरोधक रूपमे नहि नेन
जाए । -गजेन्द्र ठाकुर)

१६. श्री महेन्द्र हजारी- सम्पादक श्रीमिथिला- कृष्णार्द्रम् अर्तमनिक पठि मोन
हर्षित भू गेन.एथन पूरा पठयमे रहूत समय नागत, हृदा जतेक पठनहुँ से
आह्लादित कएनक ।

१७. श्री केदावनाथ चौधरी- कृष्णार्द्रम् अर्तमनिक अद्भुत नागन, मैथिली साहित
नेन ३ पौथी एकठा प्रतिमान रैनत ।



विदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मासिक ISSN 2229-547X VIDEHA

२+श्री सदानन्द पाठक- रिदेहक हम् नियमित पाठक छी । ओकर स्वरूपक प्रशंसक
छनहूँ । एकर अर्थात् निथन - ककषेहम् अर्थात् देखनहूँ । मोन आलादित
भन् उठन । कोनो बचना तब-उपरी ।

२६.श्रीमती बमा सा-सम्पादक मिथिला दर्पण । ककषेहम् अर्थात् देखनहूँ ।
पठि आ एकर गुणवत्ता देखि मोन प्रसन्न भन् गेन, अर्थात् शिष्ट एकरा नेन
प्रशंस कन् बहन् छी । रिदेहक उत्तरोत्तर प्रगतिक शुभकामना ।

३०.श्री नरेन्द्र सा, पठना- रिदेह नियमित देखित बहन् छी । मैथिली नेन
अर्थात् काज कन् बहन् छी ।

३१.श्री बामनोचन ठाकुर- कोनकाता- मिथिलाक्षर रिदेह देखि मोन प्रसन्नतास
भवि उठन, अर्थात् रिशान पविदृष्ट आनन्दकावी अछि ।

३२.श्री तारानन्द रियोगी- रिदेह आ ककषेहम् अर्थात् देखि चकरिदोब नागि
गेन । आश्चर्य । शुभकामना आ रक्षा ।

३३.श्रीमती प्रेमनता मिश्र "प्रेम"- ककषेहम् अर्थात् देखि पठनहूँ । सब बचना
उत्कृष्टिक नागन । रक्षा ।

३४.श्री कीर्तिनाथ मिश्र- रंगसबाय- ककषेहम् अर्थात् देखि रङ्ग नीक नागन,
आर्गाक सब काज नेन रक्षा ।

३५.श्री महाप्रकाश-सहसा- ककषेहम् अर्थात् देखि नीक नागन, रिशानकाय संगहि
उत्कृष्टिक ।

३६.श्री अग्निप्रसन्न- मिथिलाक्षर आ देवराक्षर रिदेह पठन.. आ प्रथम तँ अछि एकरा
प्रशंसामे ह्मदा हम् एकरा दूसराहसिक कहन । मिथिला चित्रकलाक सुन्दर ह्मदा
अर्थात् अर्कमे आब रिस्तुत रनाहु ।

३७.श्री मंजव सुनेमान-दरभंगा- रिदेहक जतेक प्रशंसा कएन जाए कम
होएत । सब चीज उत्तम ।



বিদেহ' ১১২ ম অংক ১৭ অগস্ট ২০১২ (বর্ষ ৭ মাস ৭৬ অংক ১১২,

মাদ্রাসা সংস্করণ ISSN 2229-547X VIDEHA

২৭.শ্রীমতী প্রাণেশ্বরী রীণা ঠাকুর- কবিত্বের অতীত উত্তম, পঠনীয়,
রিচাবনীয়। জে কা দেয়েত ভুখি পোখী প্রাপ্ত কবরীক উপায় পড়েত ভুখি।
শ্রুভকামনা।

২৯.শ্রী ভুবানন্দ সিংহ সা- কবিত্বের অতীত পঠনীয়, রঙ নীক সন্ত তবহে।

৪০.শ্রী তাবাকান্ত সা- সম্পাদক মৈথিলী দৈনিক মিথিলা সমাদ- বিদেহ তাঁ কন্ঠে
প্রাণাণ্ডবক কাজ ক২ বহন খি। কবিত্বের অতীত নাগন।

৪১.ডা বরেন্দ্র কুমার চৌধুরী- কবিত্বের অতীত রঙ নীক, রঙ মেহনতিক
পরিণাম। রীধা।

৪২.শ্রী খমবনাথ- কবিত্বের অতীত খা বিদেহ দুই স্বাধীন ঘটনা খি,
মৈথিলী সাহিত্য মধ্য।

৪৩.শ্রী পচানন মিশ্র- বিদেহক রৈখিক খা নিবন্তবতা প্রভাবিত করিত খি,
শ্রুভকামনা।

৪৪.শ্রী কেদার কানন- কবিত্বের অতীত নেন খলেক ধন্যবাদ, শ্রুভকামনা খা
রীধা স্নাক কবী। খা নচিকৈতাক ভূমিকা পঠনীয়। শ্রুমে তাঁ নাগন জেনা
কোনো উপন্যাস খা দ্বারা সৃজিত ভেন খি দ্বা পোখী উনঠোনা পব ভ্রাত
ভেন জে এহিমে তাঁ সন্ত রীধা সমাহিত খি।

৪৫.শ্রী ধনাকর ঠাকুর- খা নীক কাজ ক২ বহন ছী। ফোটে গৌরবীমে চিত্র
এহি শিতাঙ্কিক জগতিখিক খব্রসাব বহন ত২ নীক।

৪৬.শ্রী আশীষ সা- খা নীক পুস্তকক সর্ধমে এতরা নিখরা সঁ অপনা কএ নহি
রোকি স্কনহু জে ও কিতার মাত্র কিতার নহি খীক, ও একটা উম্মীদ ছী জে
মৈথিলী খা সন পত্রক সেরা সঁ নিবন্তব সমৃদ্ধ হোগত চিবজীরন কএ প্রাপ্ত
কবত।

৪৭.শ্রী শম্ভু কুমার সিংহ- বিদেহক তপেবতা খা ক্রিয়াশীলতা দেখি খালাদিত ভ২
বহন ছী। নিশ্চিতকপেণ কহন জা সকেছ জে সমকালীন মৈথিলী পত্রিকাক
গতিহাসমে বিদেহক নাম স্বাক্ষরমে নিখন জাএত। ওহি কবিত্বের ঘটনা সন্ত



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मासिक संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

तुँ अर्थावहे दिनमे खतम भऽ गेल बहऽ आ अर्थावहे क्रक्रेष्ट्रम् तँ अशेष
अछि ।

४५.डा. अजित मिश्र- अपनक प्रयासक कतरौ प्रशंसा कएन जाए कये
होएतक । मैथिली साहित्यमे अहाँ द्वारा कएन गेल काज हाग-हागातुब धरि
पूजनीय बहत ।

४६.श्री रीरेन्द्र मल्लिक- अहाँक क्रक्रेष्ट्रम् अन्तर्गत आ बिदेह:सदेह पठि अति
प्रसन्नता भेल । अहाँक स्नाह्य ठीक बहऽ आ उमोह रैनन बहऽ से कामना ।

३.०.श्री क्रमाव बाधावमण- अहाँक दिना-निर्देशमे बिदेह पहिन मैथिली आ-जर्नल
देखि अति प्रसन्नता भेल । हमर शुभकामना ।

३.१.श्री हृन्चन्द्र मा प्ररीण-बिदेह:सदेह पठने बहऽ आ क्रक्रेष्ट्रम् अन्तर्गत
देखि रीरेन्द्र आ देरी नैन रीरेन्द्र भऽ गेलहुँ । आर रीरेन्द्र भऽ गेल जे मैथिली
नहि मवत । अशेष शुभकामना ।

३.२.श्री रिभूति आनन्द- बिदेह:सदेह देखि, ओकर रिस्तार देखि अति प्रसन्नता
भेल ।

३.३.श्री मानेश्वर मन्त्रज-क्रक्रेष्ट्रम् अन्तर्गत एकव भराता देखि अति प्रसन्नता
भेल, एतेक रिशीन ग्रन्थ मैथिलीमे आग धरि नहि देखने बहऽ । एहिना
भरिषामे काज करैत बहऽ, शुभकामना ।

३.४.श्री रिशानन्द मा- आग.आग.एम.कोनकाता- क्रक्रेष्ट्रम् अन्तर्गत रिस्तार,
डिप्लोमाक संग ग्रन्थ देखि अति प्रसन्नता भेल । अहाँक अनेक धन्यवाद; कतेक
रिबथर्स हम लेखारैत डनहुँ जे सब पैघ शिष्टमे मैथिली नागरैवीक स्थापना
होअ, अहाँ ओकरा रेरैपब कऽ बहन डी, अनेक धन्यवाद ।

३.५.श्री अवरिन्द ठाकुर-क्रक्रेष्ट्रम् अन्तर्गत मैथिली साहित्यमे कएन गेल एहि
तबहक पहिन प्रयोग अछि, शुभकामना ।

३.६.श्री क्रमाव पवन-क्रक्रेष्ट्रम् अन्तर्गत पठि बहन डी । किछ नयूकथा पठन
अछि, रीरेन्द्र मार्मिक डन ।



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मासिक अंक, ISSN 2229-547X VIDEHA

३.१. श्री प्रदीप बिहारी-कवयित्री-अनुमति देवन, रैवा।

३.२. डा मणिकान्त ठाकुर-कैनिहोर्निया-अपन बिनमः नियमित सेरासँ हमबा लोकनिक हृदयमे बिदेह सदेह भऽ गेल अछि।

३.३. श्री धीरेन्द्र प्रेमर्षि-अहाँक समस्त प्रयास सवालनीय। दूध होगत अछि जखन अहाँक प्रयासमे अपेक्षित सहयोग नहि कऽ पड़ैत छी।

३.४. श्री देवशेखर नरैन-बिदेहक निबन्धनता आ बिशाल सुकप-बिशाल पाठक बन्ना, एकरा ऐतिहासिक बनैत अछि।

३.५. श्री मोहन भावराज-अहाँक समस्त कार्य देखन, रैहऽ नीक। एहन किछ पेशानीमे छी, हृदा शीघ्र सहयोग देब।

३.६. श्री फजलुर रहमान हशमी-कवयित्री-अनुमति मे एतेक मेहनतक लेन अहाँ साधुवादक अधिकारी छी।

३.७. श्री नम्रता ना "सागर"-मैथिलीमे चमकौबक कर्पे अहाँक प्रवेशे आल्लादकारी अछि। अहाँकेँ एहन आब..दूब..रैहऽ दूबधरि जेराक अछि। सुख आ प्रसन्न बली।

३.८. श्री जगदीश प्रसाद मंडन-कवयित्री-अनुमति पठनहूँ। कथा सभ आ उपन्यास सहस्ररौटनि पूर्णकपे पठि गेल छी। गाम-घरक भौगोलिक विवरणक जे सूक्ष्म वर्णन सहस्ररौटनिमे अछि, से चकित कएनक, एहि संग्रहक कथा-उपन्यास मैथिली लेखनमे विविधता अननक अछि। समालोचना शास्त्रमे अहाँक दृष्टि रैखजिक नहि रबन् सामाजिक आ कलाकारक अछि, से प्रशंसनीय।

३.९. श्री अशोक ना-अध्यात्म मिथिला विकास परिषद-कवयित्री-अनुमति लेन रैवा आ आगाँ लेन शुभकामना।

३.१०. श्री ठाकुर प्रसाद झा-अनुमति प्रयास। धन्यवादक संग प्रार्थना जे अपन माँ-पानीकेँ ध्यानमे बाँधि अँकक समायोजन कएन जाए। नर अँक धरि प्रयास सवालनीय। बिदेहकेँ रैहऽ-रैहऽ धन्यवाद जे एहेन सुन्दर-सुन्दर सचाव (आलेख) नगा बहन छथि। सन्तुष्टी ग्रहणीय-पठनीय।



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मासिक अंक, ISSN 2229-547X VIDEHA

७१. रूचिनाथ मिश्र- प्रिय गजेन्द्र जी, अहाँक सम्पादन मे प्रकाशित 'बिदेह' आ
'रुक्मिणी' अर्थात् 'रिक्मिणी' पत्रिका आ रिक्मिणी पोथी ! की नहि अछि अहाँक
सम्पादनमे ? एहि प्रश्न सँ मैथिली क विकास होयत, निश्चयमे ।

७२. श्री रूचिनाथ चन्द्र नाथ- गजेन्द्रजी, अपनक प्रसन्न रुक्मिणी अर्थात् रिक्मिणी पत्रिका
मेन गदगद भय गेल, छदयसँ अलगूति छी । हार्दिक शुभकामना ।

७३. श्री प्रबन्धेश्वर कापडि - श्री गजेन्द्र जी । रुक्मिणी अर्थात् रिक्मिणी पत्रिका
गदगद आ लेहल लेहल ।

७४. श्री बरिन्द्रनाथ ठाकुर- बिदेह पठित बहल छी । धीरेन्द्र प्रेमर्षिक मैथिली
गजपत्र आलेख पठलहुँ । मैथिली गजपत्र कतहुँ सँ कतहुँ छनि गेलक आ ओ
अपन आलेखमे मात्र अपन जानन-पहिचान लोकक चर्चा कएल छथि । जेना
मैथिलीमे मर्क पबसल बहल अछि । (स्पष्टीकरण- श्रीमान्, प्रेमर्षिक जी ओहि
आलेखमे अ स्पष्ट, लिखल छथि जे किनको नाम जे छथि गेल छथि तँ से मात्र
आलेखक लेखकक जानकारी नहि बहराक द्वारा, एहिमे अपन कोनो काबज नहि
देखल जाय । अहाँसँ एहि विषयपर लिखल आलेख सादर आभारित अछि । -
सम्पादक)

७५. श्री मन्मथेश्वर ना- बिदेह पठल आ संगहि अहाँक मैगनम ओपस रुक्मिणी
अर्थात् रिक्मिणी सेहो, अति उत्तम । मैथिलीक लेन कएल जा बहल अहाँक समस्त कार्य
अतुलनीय अछि ।

७६. श्री हरेन्द्र ना- रुक्मिणी अर्थात् रिक्मिणी मैथिलीमे अपन तबक एकमात्र ग्रन्थ
अछि, एहिमे लेखकक समग्र दृष्टि आ बचन कोशिल देखलामे अपन जे लेखकक
होन्डरकसँ जूडन बहराक काबज अछि ।

७७. श्री सुकांत सोम- रुक्मिणी अर्थात् रिक्मिणी मे समाजक गतिहास आ वर्तमानसँ
अहाँक जूडन लेनक नागन, अहाँ एहि क्षेत्रमे अपन आगाँ काज कवरल से
आशी अछि ।

७८. प्रोफेसर मदन मिश्र- रुक्मिणी अर्थात् रिक्मिणी सन कितार मैथिलीमे पहिले अछि
आ एतेक रिशान संग्रहपत्र शोध कएल जा सकैत अछि । भविष्यक लेन
शुभकामना ।



विदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,

मासिक संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

१३. प्राक्सव कमना चौधरी- मैथिलीमे ऋक्छेदम् अंतर्गत सन पोथी आरंभ
जे ग्रंथ आ कप दूमे निम्न होअ, से रंत्त दिनस आकांक्षा डन, ओ आरं
जा क२ पूर्ण भेल। पोथी एक हाथसँ दोसव हाथ घुमि बहन अछि, एहिना आगा
सेहो अहाँसँ आशा अछि।

१३. श्री उदय चन्द्र मा "रिलोद": गजेन्द्रजी, अहाँ जतेक काज कएनहुँ अछि से
मैथिलीमे आग धवि कियो नहि कएले डन। शुभकामना। अहाँकेँ एहन रंत्त
काज आव कबरौक अछि।

११. श्री प्रगुत रुमाव कथप: गजेन्द्र ठाकुरजी, अहाँसँ भेटै एकटा स्मरणीय क्षण रनि
गेल। अहाँ जतेक काज एहि रँसमे क२ गेल छी ताहिसेँ हजार गुणा आव
रेशीक आशा अछि।

११. श्री मणिकान्त दास: अहाँक मैथिलीक कार्यक प्रशंसा लेन शङ्क नहि भेटैत
अछि। अहाँक ऋक्छेदम् अंतर्गत संपूर्ण कर्पे पठि गेलहुँ। ब्रह्मचर्य रंत्त
नीक नागन।

१६. श्री लीलेन्द्र रुमाव मा- विदेह ई-पत्रिकाक सभ अंक ई-पत्रसँ भेटैत
बहेत अछि। मैथिलीक ई-पत्रिका छेक एहि रौतक गर्व होगत अछि। अहाँ
आ अहाँक सभ सहयोगीकेँ हार्दिक शुभकामना।

विदेह



मैथिली साहित्य आन्दोलन



বিদেহ' ১১২ ম অংক ১৭ অগস্ত ২০১২ (বর্ষ ৭ মাস ৭৬ অংক ১১২,

মানুস্কিহ সন্স্কৃত্য **ISSN 2229-547X VIDEHA**

(c) ২০০৪-১২. সরাধিকাৰ লেখকাধীন আ জতএ লেখকক নাম নহি খুঁজি ততএ সঁপাদকাধীন। **বিদেহ- প্রথম মৈথিলী পাক্ষিক ই-পত্রিকা। ISSN 2229-547X VIDEHA** সম্পাদক: গজেন্দ্র ঠাকুর। সহ-সম্পাদক: উষেণী মন্ডল। সহায়ক সম্পাদক: শির ক্যাব সা আ স্কলজী (মলোজ ক্যাব কণী)। ভাষা-সম্পাদন: নাগেন্দ্র ক্যাব সা আ পঙ্কজীকব বিদ্যানন্দ সা। কবী-সম্পাদন: জ্যোতি সা চৌধুরী আ বশি লেখা মিহা। সম্পাদক-শোধ-অবস্থা: স্য জয়া বর্মা আ স্য. বাজৌব ক্যাব বর্মা। সম্পাদক-নাটক-বর্গমচ-চর্চাচিত্র- লেচন ঠাকুর। সম্পাদক-সূচনা-সংস্কৃত-সমাদ- পূন্য মন্ডল আ শ্রিয়কা সা। সম্পাদক-অব্রাদ বিভাগ- বিনীত ঊপেব।

বচনাকাৰ খপন মৌনিক আ খপ্ৰকাশিত বচনা (জকব মৌনিকতাক সঁপূৰ্ণ উত্তবদায়িত্ব লেখক গণক মধ্য ডহি) gajendra@videha.com কৈ মেন খুঁজিচমোঠক কপমোঁ .doc, .docx, .rtf বা .txt ফৰ্মেটেমে পঠা সকেত ছুথি। বচনাক সঁগ বচনাকাৰ খপন সক্ষিপ্ত পবিচয় আ খপন স্কেন কএন গেন হোঠে পঠেতাহ, সে আশা কৰেত ছু। বচনাক খঁতমে ঠাওপ বহয়, জে ই বচনা মৌনিক খুঁজি, আ পহিন প্ৰকাশনক হেতু বিদেহ (পাক্ষিক) ই পত্ৰিকাৰেঁ দেন জা বহন খুঁজি। মেন প্ৰাপ্ত হোয়রাক বাদ যথাসম্ভব শীঘ্ৰ (সাত দিনক ভিতৰ) একব প্ৰকাশনক খঁকক সূচনা দেন জায়ত। 'বিদেহ' প্রথম মৈথিলী পাক্ষিক ই পত্রিকা খুঁজি আ এহিমে মৈথিলী, সংস্কৃত আ খুঁজোজীমে মিথিলা আ মৈথিলীসঁ সঁৰধিত বচনা প্ৰকাশিত কএন জাগত খুঁজি। এহি ই পত্ৰিকাৰেঁ শ্ৰীমতি নম্মা ঠাকুর দ্বাৰা মাসক ০১ আ ১৩. তিথিৰেঁ ই প্ৰকাশিত কএন জাগত খুঁজি।

(c) 2004-12 সরাধিকাৰ স্ববক্ষিত। বিদেহমে প্ৰকাশিত সন্তো বচনা আ আকাজিক সরাধিকাৰ বচনাকাৰ আ সংগ্ৰহকতকি নগমে ডহি। বচনাক অন্ববাদ আ পুন: প্ৰকাশন কিরা আকাজিক উপযোগক অধিকাৰ কিনরাক হেতু gajendra@videha.co.in পব সঁপৰ্ক কক। এহি সাগঠেৰেঁ শ্ৰীতি সা ঠাকুর, মধুনিকা চৌধুরী আ বশি শ্ৰিয়া দ্বাৰা ডিজাওন কএন গেন।



সিঙ্ঘিবন্তু

224



बि एन ए बिदेह *Videha* बिदेह www.videha.co.in www.videha.com बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई
पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह अथय ट्योथिनी भौषिक अ पत्रिका



बिदेह' ११२ म अंक १५ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक ११२,
मानुषिह संस्कृतम् **ISSN 2229-547X VIDEHA**